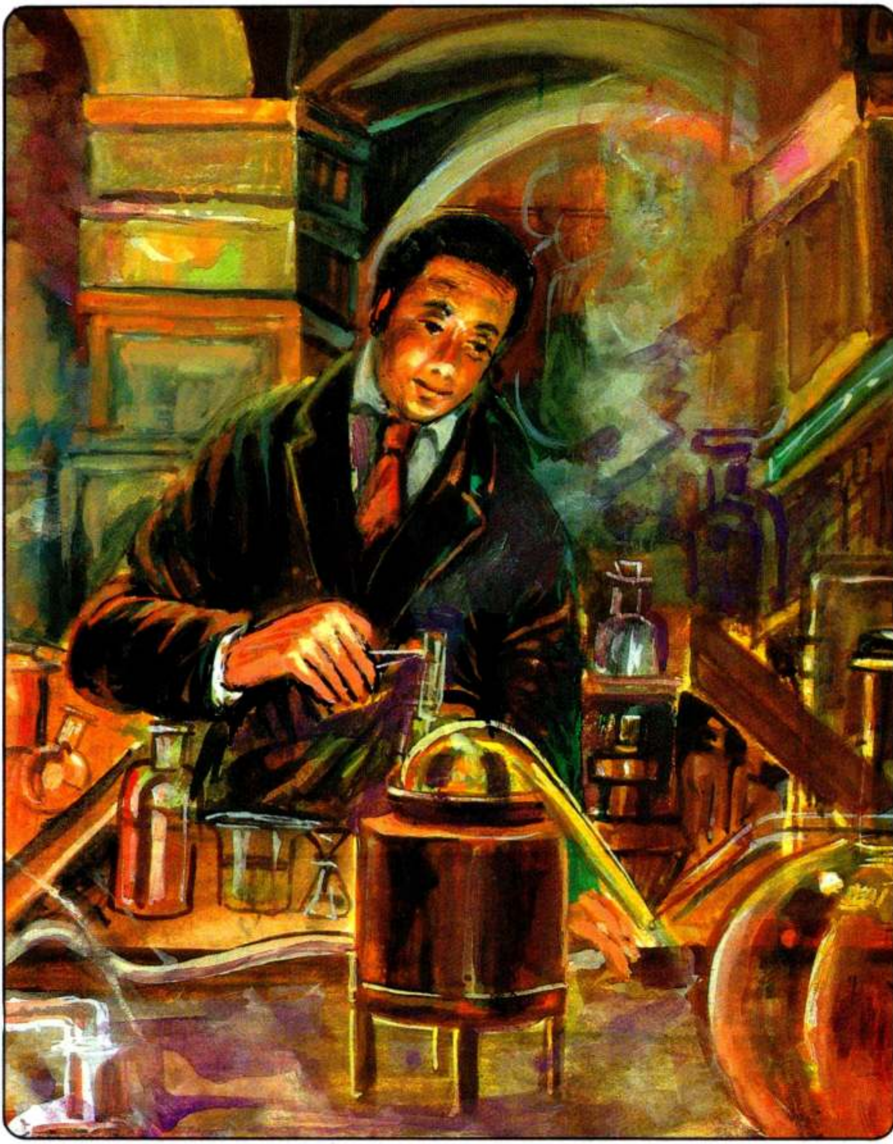
विश्व कथा-साहित्य

● इंग्लैंड

एच.जी.वेल्स

अदृश्य पुरुष



एच.जी.वेल्स

अदृश्य पुरुष

❑ अदृश्य पुरुष (The Invisible Man) इंग्लैंड के महान् उपन्यासकार एच.जी. वेल्स के अंग्रेज़ी उपन्यास का हिन्दी रूपान्तर है, जिसने उनके कुछ अन्य उपन्यासों की तरह दुनिया-भर में हलचल मचा दी। वह लेखन की नई तकनीक वैज्ञानिक रोमांसवाद के जनक थे और हैरतअंगेज़ तथा रोमांचक कथा-साहित्य में उन जैसा सिद्धहस्थ कथाकार दूसरा न हुआ।

❑ 'अदृश्य पुरुष' में वेल्स ने अपनी कल्पना से एक वैज्ञानिक आविष्कार को विषय बनाया। इसका मुख्य पात्र ग्रिफ़िन पदार्थ-विज्ञान का विशेषज्ञ है। उसके मस्तिष्क में निरंतर नए-नए विचार आते रहते हैं। एक बार उसने सोचा कि विज्ञान के प्रयोग द्वारा मनुष्य को अदृश्य किया जा सकता है और वह इसे साकार रूप देने में जुट गया। रात-दिन के परिश्रम के बाद सफलता मिल गई। आगे चलकर उसे व्यक्तिगत लालच आ गया। एक दिन वह सम्पूर्ण मानव जाति से कट गया, जिसका अंजाम भी बुरा निकला।

❑ 31 सितम्बर, 1866 को ब्रोम्बले केण्ट में जन्मे अंग्रेज़ी के उपन्यासकार एच.जी. वेल्स की विश्व-भर में ख्याति का कारण उनका मानव प्रेम था, जिसके वह कुशल चितेरे थे। वह प्रख्यात विचारक थे। उन्होंने ही 'विश्व-राज्य' का मौलिक विचार भी दिया। वह निम्नमध्यवर्गीय परिवार से थे। इसलिए हमेशा अभावों में रहे और उन्हें दूर करने के लिए संघर्ष करते रहे। ऐसे में एक छात्रवृत्ति ने सारा नक्शा ही बदल दिया और वह सबसे महंगे कॉलेज में पढ़ने लगे। उन्होंने साइंस की डिग्री प्राप्त की और फिर पत्रकारिता का कोर्स भी किया। जब उनकी मृत्यु हुई, वह 80 वर्ष के थे।

हिन्द पॉकेट बुक्स

Rs. 75/-
ISBN 81-216-0787-6
AHW HPB HINDI SERIES

विश्व कथा-साहित्य

देश-भर के सभी स्टालों पर उपलब्ध। न मिलने पर आप हमें पत्र लिखकर वी.पी. द्वारा मंगाएं। आप कहीं से भी इस सीरीज़ की पुस्तक लें, हमें पत्र द्वारा अपना पता अवश्य भेजें, ताकि हम आपको हर नई पुस्तक छपने पर सूचना दे सकें। विश्व कथा-साहित्य से चुनी हुई अमर कृतियों की इस शृंखला के स्थायी सदस्य बन कर निरंतर पठन सुख पाएं और उत्कृष्ट पुस्तकों का संग्रह बनाएं।

एच.जी. वेल्स

अदृश्य पुरुष

इंग्लैंड के विश्व प्रसिद्ध उपन्यासकार के अमर उपन्यास
'द इन्विज़िबल मैन' के अविकल हिन्दी अनुवाद
की सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति

हिन्द पॉकेट बुक्स

विश्व कथा-साहित्य

अदृश्य पुरुष	:	एच.जी. वेल्स
अनुवाद	:	हंसराज 'रहबर'
सम्पादन	:	डॉ. नफ़ीस आफ़रीदी
कला-पक्ष	:	धर्मवीर

प्रथम संस्करण : 1998
प्रकाशक : हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
दिलशाद गार्डन, जी.टी. रोड, दिल्ली-110 095
लेज़र टाइपसेटिंग : विकास कम्प्यूटर, शाहदरा, दिल्ली-110 032
मुद्रक : विकास ऑफसेट, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

ADRISHYA PURUSH (Fiction) H.G. WELLS

ISBN 81-216-0787-6

एच.जी. वेल्स

मानव प्रेम के कुशल चितेरे

विश्व-राज्य के कल्पनाकार एच.जी. वेल्स का नाम हरबर्ट जॉर्ज था। परिवार निम्नमध्यमवर्गीय था। अभावों का चलते रहना मामूली बात थी। पिता एक दुकान चलाते थे और मां किसी संभ्रांत महिला की परिसेविका थीं। बेहतर हालात के प्रयत्न में संघर्ष ख़ूब करना पड़ा। जवानी के शुरू दिनों में एक-से-एक झटके झेले। इस झेलने में उनके लिए कोई मुश्किल न थी। बचपन से ही जो मामूली घर में पला-बड़ा हुआ हो, उसमें ज़िंदगी के थपेड़ों से जूझने की हिम्मत आ ही जाती है। अतः जूझते हुए वह पढ़ भी सके। एक छात्रवृत्ति ने सारा नक्शा ही बदल दिया। वह रॉयल कॉलेज ऑफ़ साइंस जैसे महंगे कॉलेज में पढ़ने लगे और 1887 में लंदन यूनीवर्सिटी से स्नातक की सनद प्राप्त की। वह प्रथम श्रेणी के ऑनर्स थे। साइंस का कीड़ा तो लगातार कुलबुलाता ही रहता था। सो साइंस पढ़ी और उसकी भी डिग्री ले ली। विज्ञान में भी बाइलोजी उन्हें अधिक प्रिय थी, लेकिन साइंस कैरियर बनाते-बनाते वेल्स महोदय ने रास्ता ही बदल लिया। अब वह पत्रकारिता में दिलचस्पी लेने लगे।

पत्रकार की लेखनी और साइंस की पढ़ाई ने उन्हें सबसे अलग तरह का लेखक बना दिया। वह अकेले लेखक थे, जिन्होंने कथा-साहित्य में एक नई तकनीक ही चला डाली, यानी वैज्ञानिक रोमांसवाद के जनक बन गए। इस नए ढंग से उन्होंने अनेक

उपन्यासों की रचना की, जिसमें कुछ तो विश्व के महान् क्लासिक ही बन गए। इसी पैटर्न में ढेरों कहानियां भी लिखीं।

एच.जी. वेल्स की पहली पुस्तक 1895 में छपी। उसके बाद तो छपने-छपाने का सिलसिला निरंतर चलता ही रहा। कथा-साहित्य के अतिरिक्त इतिहास, दर्शन और विज्ञान विषयों पर अनेक गंभीर पुस्तकें सामने आईं। सुलझे हुए विचारक के रूप में भी उन्हें प्रतिष्ठा मिली।

वह अंग्रेजी के लेखक थे। इंग्लैंड में रहना-सहना था। 1866 के साल में सितंबर महीने की 31 तारीख को जन्म हुआ। मृत्यु के समय आयु 80 वर्ष की थी। दिमाग में बंधुत्व के विश्व विस्तार की कल्पना रहती थी। सारी दुनिया के लोगों को एक कड़ी में जोड़ने और मिल-जुलकर रहने की बात करने वाले इस लेखक ने ही 'विश्व-राज्य' का विचार दिया था। इस विषय पर उनका चिंतन नया, मौलिक और लुभावना था।

वेल्स ने जितने भी उपन्यास लिखे, सबसे अधिक प्रसिद्ध वही हुए, जिनमें जबर्दस्त कल्पना की उड़ान रही। यह कोरी कल्पना नहीं थी, बल्कि विश्वसनीयता पैदा करने और उसे सबके लिए स्वीकार योग्य बनाने की उनमें अपार क्षमता थी। चित्र-विचित्र वर्णन शैली, अनोखी, अचरज में डाल देने वाली घटनाएं और इसके लिए विज्ञान का भरपूर प्रयोग, उपन्यासों को महत्त्वपूर्ण बनाता रहा। इनमें 'द टाइम मशीन', 'इन द डेज़ ऑफ़ द कमेट', 'द वार ऑफ़ द वर्ल्ड्स' तथा 'द इन्विज़िबल मैन' जैसे उपन्यासों को बहुत अधिक पढ़ा गया।

'द इन्विज़िबल मैन' यानी 'अदृश्य पुरुष' में लेखक ने अपनी कल्पना से एक वैज्ञानिक आविष्कार को इसका विषय बनाया। नायक ग्रिफ़िन पदार्थ-विज्ञान का विशेषज्ञ है। उसने कल्पना की कि विज्ञान के प्रयोग करने से मनुष्य अदृश्य हो सकता है, और

वह अपनी कल्पना को साकार करने में जुट गया। उसने रात-दिन मेहनत की और एक दिन सफल हो गया। थोड़े ही दिनों में वह विकृत विचारों से घिरने लगा। उसके मन में लालच आया कि अदृश्य होकर वह बहुत से लाभ पा सकता है। इस तरह वह अपने समाज में विशिष्ट दर्जा हासिल कर लेता है। लोग उसे दिव्य और देव तुल्य समझने लगे। इस चक्कर में वह अपनी मानव जाति से ही कट कर रह गया। विज्ञान को उसने संपूर्ण मानव जाति के कल्याण के स्थान पर केवल अपनी ही भलाई का औज़ार बना लिया था। इससे उसको बड़ी हानि उठानी पड़ी।

'द वार ऑफ़ द वर्ल्ड्स' (1898) में वेल्स ने कल्पना का अनोखा और विस्मयकारी घोल मिलाया। उन्होंने कहानी बुनी कि मंगल-गृह के वासियों ने धरती पर भयंकर हमला कर दिया है। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गई है। विश्व की अनेक भाषाओं में प्रकाशित यह उपन्यास हिन्दी में 'लोकों का युद्ध' नाम से प्रकाशित हो चुका है।

'द टाइम मशीन' में समय की वैज्ञानिक युक्ति है, जो बेहद रोचक और चमत्कारी है।

जब चार्ल्स डिकेन्स और थैकरे का दौर पूरा हो चला था। फ्रांस के फ्लाबेयर, मोपासां, एमिल ज़ोला और अनातोले फ्रांस तथा रूस में तुर्गनेव, टाल्सटॉय, दॉस्तोएवस्की तथा चेखव कथा-साहित्य में विश्व ख्याति अर्जित कर चुके थे। ऐसे में नए रंग-ढंग के साथ वेल्स का प्रादुर्भाव उन्हें अभिनव प्रयोग के कारण अच्छी तरह स्थापित कर पाया। वह मानव प्रेम के कुशल चितेरे थे। इसी विचार की संपूर्णता दर्शाने के लिए 'आउट लाइन ऑफ़ वर्ल्ड हिस्ट्री', जैसी पुस्तक लिखी जिसने सारी दुनिया में तहलका मचा दिया था। आज भी इसे चाव से पढ़ा जाता है।

—डॉ. नफ़ीस आफरीदी

अजनबी का आगमन

फ़रवरी का प्रारंभ था। साल की अंतिम बर्फ़ गिरने के कारण सख़्त सर्दी पड़ रही थी और शरीर को भेदने वाली तेज़ हवा चल रही थी। अजनबी इस सर्दी में ब्रेंबहर्स्ट रेलवे स्टेशन से पैदल आया। उसने मोटे-मोटे दस्ताने पहन रखे थे और उसके पास स्याह रंग का छोटा-सा चमड़े का थैला था। वह सिर से पांव तक कपड़ों में लिपटा हुआ था, उसके मुलायम फैल्ट हैट ने नाक के चमकदार सिरे के अलावा बाक़ी तमाम चेहरे को छिपा रखा था। उसकी छाती, कंधों और चमड़े के थैले पर बर्फ़ की हलकी-सी तह जम गई थी। उसने थकावट से चूर लड़खड़ाते हुए 'काच एंड हार्सेज़' नामक सराय में प्रवेश किया और अपना थैला धरती पर पटक कर कहा, "आग! मानवता के नाम पर एक कमरा और आग!" उसने पांव पटककर अपने शरीर से बर्फ़ झाड़ी और श्रीमती हाल के पीछे-पीछे सौदा पटाने अतिथि कक्ष में गया। उसने दो मुहरें मेज़ पर डाल दीं, वास्तव में यही उसका परिचय था और इसी से उसे सराय में कमरा मिल गया।

श्रीमती हाल ने आग जलाई और तब वे उसे कमरे में अकेला छोड़कर खुद उसके लिए भोजन बनाने चली गईं। सर्दी में किसी मेहमान का और वह भी ऐसे मेहमान का जो लेन-देन के संबंध में कुछ भी तकरार न करे, इपिंग की सराय में ठहरना बड़े सौभाग्य की बात थी, और श्रीमती हाल इस सौभाग्य के अनुरूप ही आदर-सत्कार करना तय कर चुकी थीं।

सुअर का गोश्त पककर तैयार हुआ और उसकी सहायक मिली भर्त्सना के दो-चार वाक्य सुनकर चुस्ती से काम करने लगी, तो वह कपड़ा, प्लेटें और बर्तन लेकर बैठक में गई और करीने से दस्तरखान सजाने लगी। आग बख़ूबी जल रही थी, लेकिन वह यह देखकर चकित रह गई कि उसका मेहमान अभी तक हैट और कोट पहने हुए था और उसकी ओर पीठ किए खिड़की के बाहर सहन में बर्फ़ गिरते देख रहा था।

उसके दस्तानों वाले हाथ पीछे एक-दूसरे से फंसे थे और वह विचारमग्न मालूम होता था। श्रीमती हाल ने देखा कि मेहमान के कंधों पर जो बर्फ़ जमी रह गई थी, वह बूंद-बूंद करके गलीचे पर गिर रही थी।

"श्रीमान्, क्या मैं आपका हैट और कोट लेकर उन्हें रसोई में सुखाकर लाऊं?" श्रीमती हाल ने पूछा।

"नहीं!" अजनबी ने बिना मुड़े ही उत्तर दिया।

श्रीमती हाल को विश्वास नहीं हुआ कि उसने अतिथि की आवाज़ ही सुनी थी। इसलिए वह अपना प्रश्न दोहराने ही वाली थी कि अजनबी ने सिर घुमाकर उसकी ओर देखा और ज़ोर देते हुए कहा—"मैं इन्हें पहने रहना पसंद करता हूं।" और श्रीमती हाल ने देखा कि उसका मेहमान नीले रंग की काफ़ी बड़ी ऐनक पहने था और कोट की कालरों पर लगी लंबी-लंबी फर उसके चेहरे को पूरी तरह छिपाए हुए थी।

"बहुत अच्छा, श्रीमान्," वह बोली, "जैसी आपकी इच्छा। थोड़ी देर में कमरा ख़ूब गर्म हो जाएगा।"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया और फिर दूसरी ओर देखने लगा। श्रीमती हाल ने महसूस किया कि अब बात करना व्यर्थ है। इसलिए उसने बाक़ी चीज़ें दस्तरखान पर रखीं और कमरे से निकल आई। जब वह लौट आई तब भी मेहमान मूर्तिवत खड़ा था; उसकी कमर झुकी हुई थी, कोट के कालर ऊपर को उठे हुए थे और हैट के झुके हुए किनारों ने जिन पर से बर्फ़ पिघल-पिघल कर गिर रही थी, उसके चेहरे और कानों के पूर्णरूप से छिपा रखा था। श्रीमती हाल ने अंडे और गोश्त रखकर पुकारा, "आपका खाना लगा दिया गया है।"

"धन्यवाद!" उसने तुरंत कहा, लेकिन श्रीमती हाल के दरवाज़ा बंद करने तक वह तनिक नहीं हिला। तब वह घूमकर कुछ उत्सुकता से खाने की मेज़ के क़रीब आया।

रसोईघर के रास्ते में श्रीमती हाल ने सुना कि 'चरक चरक' की आवाज़ निरंतर आ रही है। यह तेज़ी से चलाए जाने वाले चम्मच के बर्तन से टकराने की आवाज़ थी। "लड़की!" वह बोली, "मैं तो भूल ही गई। उसने बड़ी देर लगा दी।" और श्रीमती हाल ने 'मस्टर्ड' मिलाते हुए मिली को उसके आलस्य के लिए डांटा। जितने समय में उसने खुद गोश्त और अंडे पकाए, मेज़ पर खाना लगाया और सबकुछ किया, मिली से 'मस्टर्ड' भी तैयार नहीं हो सकी। कैसी बढ़िया सहायक थी मिली! और वह नया मेहमान था जो ठहरने वाला था। तब श्रीमती हाल ने 'मस्टर्ड' का बर्तन भरा और सुनहरी-स्याह ट्रे में सजाकर बैठक में ले गई।

वह चुस्ती से दरवाज़ा खटखटाकर अंदर दाखिल हुई। उसके देखते ही अजनबी इतनी जल्दी उठा कि श्रीमती हाल ने सिर्फ़ एक सफ़ेद-सी चीज़ को मेज़ के पीछे छिपते देखा। ऐसा लगा जैसे कुछ गिर पड़ा है और वह उसे फ़र्श पर से उठा रहा है। श्रीमती हाल ने 'मस्टर्ड' के बर्तन को मेज़ पर रखकर ढांप दिया और देखा कि हैट और कोट उतारकर आग के सामने कुर्सी पर रख दिए गए हैं। गीले कोटों से

अंगीठी के लोहे के जंगले को ज़ंग लग जाने का डर था। वह निश्चय के साथ इन चीज़ों की ओर बढ़ी और स्वीकृति की अपेक्षा किए बिना ही कहा, "मेरा ख़्याल है, मैं अब इन्हें सुखाने के लिए ले जा सकती हूं।"

"हैट छोड़ जाओ।" अजनबी ने दबे स्वर में कहा और श्रीमती हाल ने पलटकर देखा कि वह सिर उठाकर उसकी ओर देख रहा है।

एक क्षण के लिए वह खड़ी उसकी ओर देखती रही, विस्मय से अवाक्।

उसने एक सफ़ेद तौलिए से चेहरे का निचला भाग इस प्रकार ढांप रखा था कि उसका मुंह और जबड़े बिलकुल ढंक गए थे, इसी कारण उसका स्वर दबा-सा था। लेकिन हाल के विस्मय का कारण यह नहीं था, बल्कि यह कि नीली ऐनक से ऊपर माथे पर सफ़ेद पट्टी बंधी हुई थी और कानों के ऊपर एक दूसरी पट्टी थी, जिससे गुलाबी तीखी नाक के अतिरिक्त चेहरे का कोई भी भाग दिखाई नहीं पड़ रहा था। उसकी नाक पहले की तरह चमकदार, गुलाबी और तीखी थी। उसने गहरे भूरे मखमल की जाकेट पहन रखी थी, जिसका सीवन के अस्तर वाला ऊंचा स्याह कालर उसकी गर्दन के गिर्द उठा हुआ था। घने काले बालों के, पट्टियों के ऊपर-नीचे निकलकर, चोटियों और सींगों-से अजीब गुच्छे बन गए थे, जिस कारण वह कल्पनातीत रूप से विचित्र दिखाई देता था। यह ढका हुआ चेहरा और पट्टियां बंधा सिर ऐसा था, जिसकी श्रीमती हाल ने कभी कल्पना तक नहीं की थी, इसीलिए वह अब क्षणभर के लिए जड़ खड़ी रह गई थी।

उसने तौलिया हटाया नहीं, बल्कि भूरे दस्ताने वाले हाथ से उसे पकड़े मुंह बदस्तूर ढांपे रहा और ऐनक में से देखते हुए उसने सफ़ेद कपड़े के पीछे से अस्पष्ट से स्वर में कहा, "हैट छोड़ जाओ।"

इस आघात से वह संभली। उसने हैट फिर आग के निकट कुर्सी पर रखकर कहा, "मुझे मालूम नहीं था श्रीमान् कि⋯" और हिचकिचा कर बात अधूरी ही छोड़ दी।

"धन्यवाद!" अजनबी ने शुष्क स्वर में उसे, तब दरवाज़े और फिर उसे देखकर कहा।

"मैं इन्हें फ़ौरन अच्छी तरह सुखा दूंगी।" श्रीमती हाल ने कहा और उसके कपड़े लेकर चली गई। उसने कमरे से बाहर जाते अजनबी के पट्टियां बंधे सिर और अंधी ऐनक की ओर एक बार फिर देखा, लेकिन चेहरा वह अब भी तौलिए से ढके था। दरवाज़ा बंद करते हुए वह तनिक कांपी। उसकी मुख-मुद्रा आश्चर्य और घबराहट व्यक्त कर रही थी "मैं बिलकुल नहीं⋯" वह बड़बड़ाई और चुपचाप रसोईघर में चली गई। वह अपने में ही इतनी उलझी हुई थी कि उसे मिली से यह पूछने की भी याद नहीं आई कि अब वह क्या गड़बड़ कर रही है।

अजनबी मेज़ पर आ बैठा और श्रीमती हाल के दूर जाते पांवों की चाप सुनने

लगा। तौलिया उतारने से पहले उसने संदिग्ध दृष्टि से खिड़की की ओर देखा। फिर एक और ग्रास खाकर उठ खड़ा हुआ और तौलिया हाथ में लिए हुए कमरे को पार कर उसने खिड़की का पर्दा गिरा दिया, जिससे नीचे के शीशे भी ढक गए और कमरे में कुछ अंधेरा हो गया। अब वह इत्मीनान से खाना खाने लगा।

"बेचारे के साथ कोई दुर्घटना घटी है या ऑपरेशन कराया है या और कुछ," श्रीमती हाल ने सोचा, "इन पट्टियों ने मुझे कैसा चौंकाया था!"

उसने अंगीठी में कुछ कोयले डाले और कपड़े की कुर्सी फैलाकर अजनबी के कपड़े उस पर डाल दिए। "और वह ऐनक! वह मानव की बजाय प्रेतात्मा ही ज़्यादा दिखाई देता था।" उसने अजनबी का गुलूबंद कुर्सी के सिरे पर टांग दिया। "और वह तौलिए से हमेशा मुंह ढापे, उसी में से बातें करता रहा। शायद उसके मुंह पर भी चोट आई हो।"

वह पीछे को घूमी, जैसे कोई बात सहसा स्मरण हो आई हो और एकदम सीधे जाकर बोली, "बहुत खूब! मिली, क्या तुम अभी तक इन चिथड़ों को ठीक नहीं कर पाई?"

जब श्रीमती हाल खाने के बर्तन समेटने गई, तो उसके इस विचार की पुष्टि हो गई कि दुर्घटना के कारण अजनबी का चेहरा चोट खा गया है या विकृत हो गया है क्योंकि इस समय वह पाइप पी रहा था और जितने समय श्रीमती हाल कमरे में रही, उसने पाइप पीने के लिए जो रेशमी कपड़ा अपने मुख के निचले हिस्से में बांध रखा था, उसे एक बार भी नहीं हटाया। फिर भी वह अपने आप में खोया हुआ नहीं था क्योंकि वह सुलगत्ते हुए तंबाकू को ध्यान से देख रहा था। वह खिड़की के पर्दे की ओर पीठ किए कोने में बैठा था। खा-पीकर और गर्म होकर संतुष्ट था और अब पहले की तरह बुरी लगने वाली संक्षिप्तता से बात नहीं करता था। उसकी बड़ी ऐनक पर आग का प्रतिबिंब पड़ने से उसमें एक जीवंत लालिमा आ गई थी, जो पहले नहीं थी।

"ब्रेंबहर्स्ट स्टेशन पर मेरा कुछ सामान पड़ा है।" उसने कहा और पूछा कि वह कैसे लाया जा सकता है। श्रीमती हाल ने इस संबंध में जो कुछ कहा, उसे सुनकर उसने अपना पट्टियों से बंधा सिर विनम्रतापूर्वक झुकाया और कहा, "कल! क्या आज किसी तरह नहीं मंगाया जा सकता?" उत्तर 'नहीं' में सुनकर वह निराश जान पड़ा। और बोला, "क्या आप बिलकुल ठीक कह रही हैं? क्या वहां जाने के लिए आज कोई मज़दूर नहीं मिलेगा?"

श्रीमती हाल ने निस्संकोच भाव से उसके प्रश्नों का उत्तर देते हुए वार्तालाप करने के इरादे से कहा, "सड़क पर बड़ी ढलान है। एक साल पहले वहां एक गाड़ी उलट गई थी। गाड़ीवान के अतिरिक्त उसमें बैठा मुसाफिर भी मर गया था। दुर्घटनाएं तो यहां एक क्षण में घट जाती हैं, श्रीमान् क्यों ठीक है न?"

अजनबी इतनी आसानी से बातें नहीं करना चाहता था। "होती तो हैं।" उसने मफ़लर में से कहा। और अभेद्य ऐनक के शीशे में से श्रीमती हाल को निहारता रहा।

"लेकिन जो चोटें आती हैं वे देर में ठीक होती हैं, श्रीमान्। मेरी बहन का लड़का टाम था। वह घास के खेत में दरांती पर गिर पड़ा जिससे बांह पर गहरा घाव आया। बेचारे के तीन महीने तक पट्टी बंधी रही। आप शायद विश्वास न करें, मुझे दरांती से बड़ा डर लगता है, श्रीमान्।"

"हां, ऐसा होता है।" अजनबी ने उत्तर दिया।

"हमें तो डर था कि शायद ऑपरेशन कराना पड़ेगा क्योंकि घाव इतना बिगड़ गया था।"

अजनबी एकाएक हंसा—यह एक विकृत हंसी थी। मानो वह मुंह के भीतर-भीतर काट रहा हो।

"क्या वाक़ई?" उसने पूछा।

"हां, बहुत? श्रीमान्। और उनके लिए यह हंसी की बात नहीं, बड़ी मुसीबत थी। मेरी बहन तो अपने बच्चों में व्यस्त रहती थी, सबकुछ मुझे ही करना पड़ता था। पट्टियां खोलनी पड़ती थीं और बांधनी पड़ती थीं। इसलिए क्या मैं यह धृष्टता कर सकती हूं कि अगर आप…"

"क्या आप दियासलाई ला देंगी?" अजनबी ने बीच ही में टोककर कहा, "मेरा पाइप बुझ गया है।"

श्रीमती हाल को इतनी सारी बातें करने के बाद यह बात नागवार लगी। अजनबी की यह बड़ी अशिष्टता थी। वह क्षणभर उसकी ओर देखती रही और फिर उसे दो मुहरें याद आईं। वह माचिस लेने चल दी।

"धन्यवाद!" अजनबी ने माचिस लेकर कहा। फिर वह गर्दन घुमाकर खिड़की से बाहर देखने लगा। निस्संदेह वह ऑपरेशन और पट्टियों के बारे में बड़ा संवेदनशील था। आख़िरकार श्रीमती हाल अपनी बात पूरी कर ही नहीं पाई। लेकिन अजनबी की इस उद्दंडता से वे चिढ़ गई थीं और यह क्रोध दोपहर बाद ग़रीब मिली पर उतारा।

आगंतुक चार बजे तक बैठक में बैठा रहा। इसके लिए उसने तनिक भी क्षमा याचना नहीं की। इस अधिकांश समय में वह बिलकुल निश्चल रहा। लगता था कि बढ़ते हुए अंधेरे में आग के निकट बैठा पाइप पी रहा है और शायद ऊंघ रहा है।

कोई उत्सुक व्यक्ति उसे एक-दो बार कोयलों से बोलता सुन सकता था। पांच मिनट तक वह कमरे में इधर-उधर घूमता रहा। वह अपने आप से बातें करता जान पड़ता था। इसके बाद उसके दोबारा कुर्सी में बैठने की ध्वनि सुनाई दी।

श्री टेडी हेन्फ्रे पर प्रथम प्रभाव

चार बजे जब काफ़ी अंधेरा हो गया और श्रीमती हाल यह हिम्मत बटोर रही थी कि जाकर मेहमान से चाय के लिए पूछे, घड़ीसाज़ टेडी हेन्फ्रे भीतर आया।

वह आते ही बोला, "तोबा! इस मौसम में ये पतले बूट तो काम नहीं देते।" बाहर बर्फ़ और तेज़ी से पड़ने लगी थी।

श्रीमती हाल ने उसकी बात का समर्थन किया और फिर देखा कि वह अपना थैला भी लिए है। बोली, "मिस्टर टेडी, जब तुम आ ही गए हो तो बेहतर होगा कि बैठक वाली घड़ी को एक नज़र से देख लो। वह चल रही है और टन-टन की आवाज़ भी देती है, मगर घंटे की सुई छः से आगे नहीं सरकती।"

और वह आगे-आगे चलकर कमरे के दरवाज़े पर पहुंची और खटखटाने के बाद भीतर गई।

उसने देखा कि उसका मेहमान आग के सामने आरामकुर्सी पर बैठा ऊंघ गया जान पड़ता है क्योंकि पट्टियों बंधा सिर एक ओर को लुढ़क गया था। कमरे में सिर्फ़ आग ही का लाल प्रकाश था। श्रीमती हाल को हर चीज़ गुलाबी और छाया-सी तथा अस्पष्ट मालूम पड़ रही थी, विशेषकर इसलिए कि वह शराबघर के लैंप जलाती रही थीं और उनकी आंखें चकाचौंध से भरी थीं। एक क्षण के लिए उसे लगा कि अजनबी का बहुत बड़ा मुंह एकदम खुला है। इतना बड़ा और अविश्वसनीय मुंह कि चेहरे का निचला भाग भी उसी में समा गया है। यह अनुभूति क्षणिक थी, पट्टियों से बंधा सिर, बड़ी-बड़ी निकली हुई आंखें और उनके नीचे खुदा हुआ बड़ा-सा मुंह। तब वह हिला और चौंककर उसने हाथ ऊपर उठाया। श्रीमती हाल ने दरवाज़ा पूरा खोल दिया जिससे कमरे में कुछ उजाला हो गया और उसने और साफ़ देखा कि अजनबी ने चेहरा मफ़लर से ढांप रखा है जैसे पहले तौलिए से ढांप रखा था। उसने सोचा कि अंधेरे में ज़रूर उसे भ्रम हो गया था।

"क्षमा कीजिए श्रीमान् यह आदमी घड़ी देखने आया है।" श्रीमती हाल ने क्षणिक घबराहट पर काबू पाते हुए कहा।

"घड़ी देखने?" उसने जैसे ऊंघते-ऊंघते चारों ओर देखते हुए पूछा। और फिर पूरा जागकर मफ़लर में से कहा, "ज़रूर-ज़रूर।"

श्रीमती हाल लैंप लाने चली गई और उसने कुर्सी से उठकर अंगड़ाई ली। जब लैंप आ गया तो टेडी हेन्फ्रे ने भीतर प्रवेश किया और पट्टियां बांधे आदमी से उसका साक्षात हुआ। उसका कहना था कि वह घबरा गया था।

"नमस्ते।" करके ऐनक में से केकड़े की तरह झांकते हुए श्री हेन्फ्रे को अजनबी के चश्मे की साफ़-साफ़ याद है—अजनबी ने उसका स्वागत किया।

"मेरे आने से आपको कष्ट तो नहीं हुआ?" मिस्टर हेन्फ्रे ने कहा।

"बिलकुल नहीं।" अजनबी बोला, लेकिन श्रीमती हाल की ओर पलटकर कहा, "वैसे आपको समझ लेना चाहिए कि यह कमरा सिर्फ़ मेरे इस्तेमाल के लिए है।"

"मेरा ख़्याल था कि आपको घड़ी की ज़रूरत होगी।" श्रीमती हाल ने उत्तर दिया।

"अवश्य, लेकिन आमतौर पर मैं चाहता हूं कि कोई मेरे एकांत में दखल न दे।"

वह आग की ओर घूम गया और हाथ पीछे कर लिए। और बोला, "जब घड़ी की मरम्मत हो जाए, मैं चाय लेना पसंद करूंगा लेकिन मरम्मत होने से पहले नहीं।"

श्रीमती हाल श्री हेन्फ्रे की मौजूदगी में डांट सुनना नहीं चहती थीं, इसलिए उन्होंने बात बढ़ाने की कोशिश नहीं की। वह जाने ही वाली थी कि अजनबी ने पूछा कि "मेरा सामान मंगवाने का प्रबंध किया?" श्रीमती हाल ने कहा कि "मैंने डाकिए से कह दिया है, आपका सामान कल आ जाएगा।"

"तुम्हें विश्वास है, जल्दी से जल्दी कल ही आ सकता है?" उसने पूछा।

श्रीमती हाल ने सिर हिलाकर हां भी भरी। उनकी स्वीकृति उत्साहहीन थी।

"जाड़े और थकान के कारण पहले नहीं बता सका। लेकिन अब सुन लो कि मैं एक अनुसंधानकर्ता हूं।"

"सचमुच श्रीमान।" श्रीमती हाल ने प्रभावित होते हुए कहा।

"और मेरे सामान में अनुसंधान के औज़ार हैं।"

"तब तो बहुत ही उपयोगी चीज़ें हैं।" श्रीमती हाल बोलीं।

"इसलिए मेरा उन्हें जल्दी मंगवाने के लिए चिंतित होना स्वाभाविक ही है।"

"यह तो ठीक है।"

"मेरे इपिंग में आने का कारण भी यही है कि मैं एकांत चाहता था।" उसने अपने स्वर को तौलते हुए कहा, "मैं नहीं चाहता कि कोई मेरे काम में दखल दे। मेरे काम के अलावा एक दुर्घटना..."

"मैं समझ गई।" श्रीमती हाल ने जैसे अपने आप से कहा।

"अनुसंधान के कारण मुझे एकांत की आवश्यकता है। मेरी आंखें कभी-कभी

इतनी कमज़ोर हो जाती हैं और दर्द करती हैं कि मुझे घंटों अंधेरे में रहना पड़ता है। कभी-कभी। निश्चय ही इस समय नहीं। ऐसे समय किसी अजनबी के कमरे में आने से या ज़रा से भी व्यवधान से मुझे बड़ी चिढ़ लगती है। ये सारी बातें पहले ही से समझ लेना बेहतर है।"

"ज़रूर, श्रीमान।" श्रीमती हाल ने कहा, "और क्या मैं यह भी पूछने का साहस कर सकती हूं कि…"

"बस और कुछ नहीं।" अजनबी ने निर्णयात्मक मुद्रा धारण करके उत्तर दिया जो यह किसी भी क्षण कर सकता था। श्रीमती हाल ने अपना प्रश्न और सहानुभूति किसी दूसरे समय के लिए रख छोड़ी।

जब श्रीमती हाल चली गई तो अजनबी आग के सामने खड़ा घड़ी की मरम्मत होते (श्री हेन्फ्रे के अनुसार आंखें फाड़े) देखता रहा।

श्री हेन्फ्रे ने लैंप अपने क़रीब रख छोड़ा था, जिसके हरे शैड के कारण उसके हाथों और घड़ी के फ्रेम और पहिए पर तेज़ रोशनी पड़ रही थी और बाक़ी कमरे में बदस्तूर अंधेरा-सा था। जब वह ऊपर देखता तो रंगीन धब्बे-से उसकी नज़रों में तैर जाते। उत्सुक स्वभाव का होने के कारण श्री हेन्फ्रे ने कुछ पुर्जे खाहमखाह निकाल लिए थे, जिससे वह ज़्यादा देर तक ठहर सके, और शायद अजनबी से बातचीत करने का मौका पा सके। लेकिन अजनबी था कि अचल और मौन खड़ा था। इतना मौन कि उसका मौन हेन्फ्रे को खलने लगा। उसने अपने को अकेला महसूस किया और ऊपर देखा तो अजनबी का पट्टियों बंधा सिर और ऐनक के मोटे-मोटे शीशे दिखाई दिए। अपने ऐनक के भीतर से वह एकटक उसकी ओर देख रहा था और उसके सामने हरे धब्बे का कुहरा-सा छाया था। यह हेन्फ्रे को इतना आश्चर्यजनक और अविश्वसनीय मालूम पड़ा कि अजनबी और हेन्फ्रे एक-दूसरे की ओर एक मिनट तक घूरते रहे। हेन्फ्रे ने फिर नीचे देखा। अजीब हालत थी। उसका जी बात करने को चाहता था। क्या वह यही कहे कि साल के इन दिनों में कभी इतनी सख़्त सर्दी नहीं पड़ी?

उसने यह सोचकर ऊपर देखा मानो उस वाक्य से वह निशाना साध रहा हो और कहा, "मौसम…"

"तुम काम खत्म करके जाते क्यों नहीं?" अजनबी ने कर्कश स्वर में कहा, जैसे बेहद क्रोध को दबाए हुए हो, "तुम्हें सिर्फ़ घंटे की सुई को उसकी धुरी में लगाना है, मगर तुम व्यर्थ ही गड़बड़ कर रहे हो।"

"बस, एक मिनट श्रीमान। मुझसे भूल हो गई…" श्री हेन्फ्रे ने काम खत्म किया और चला गया।

लेकिन उसका मन विक्षुब्ध था। "लानत भेजो," वह बर्फ़ में चलते हुए, गांव की ओर जाते हुए अपने आप बड़बड़ाया, "कभी-न-कभी घड़ी की मरम्मत तो निश्चय ही करनी पड़ती है।"

फिर : "क्या कोई तुम्हारी तरफ़ देख भी नहीं सकता? बदसूरत।" तनिक रुककर फिर बड़बड़ाया, "लगता तो यही है कि नहीं देख सकता। मगर पुलिस को तुम्हारी तलाश हो तो तुम और भी पट्टियां बांध लोगे।"

ग्लीसन के मोड़ पर उसे हाल मिला। उसने थोड़े ही दिन पहले 'कोच एंड मर्सेज़' सराय की मालकिन से शादी की थी। अब वह इपिंग से सिडर ब्रिज जंक्शन तक गाड़ी चलाता था। और अभी वहीं से लौट रहा था। उसके गाड़ी चलाने के ढंग से मालूम पड़ रहा था कि वह सिडर ब्रिज में कुछ समय तक रुका रहा था।

"क्या हाल है, टेडी?" उसके पास से गुज़रते हुए पूछा।

"घर जाओ, तुम एक अजीब चीज़ देखोगे।" टेडी ने कहा।

"क्या है?" हाल बात करने के लिए रुक गया।

"एक अजनबी सराय में ठहरा है," टेडी बोला, "हे भगवान्!"

और फिर उस भयानक अतिथि का पूर्ण विवरण देते हुए कहा, "क्या इससे यह प्रतीत नहीं होता कि वह अपने आप को छिपाए हुए है? अगर मैं किसी को अपने मकान पर ठहराऊं तो मैं उसका चेहरा ज़रूर देखूंगा। लेकिन औरतें अजनबियों पर झट विश्वास कर लेती हैं। उसने तुम्हारा कमरा लिया है और नाम तक नहीं बताया हाल!"

"तुम्हें संदेह है?" मंदबुद्धि हाल ने पूछा।

"हां," टेडी ने उत्तर दिया, "एक सप्ताह के लिए उसने कमरा लिया है। जो कुछ भी हो तुम एक सप्ताह तक उससे छुटकारा नहीं पा सकते। उसके पास बहुत-सा सामान है जो कल आ रहा है। हमें देखना है कि बक्से में पत्थर न भरे हों हाल!"

फिर उसने बताया कि कैसे एक अजनबी ने ख़ाली संदूक से उसकी चाची हेस्टिंग्स को ठग लिया था। कुल मिलाकर उसने हाल को काफ़ी शंकित कर दिया और हाल ने कहा, "अच्छा दोस्त, मैं देखूंगा।"

टेडी ने अपनी राह ली। अब उसका मन काफ़ी हलका हो गया था।

देखता तो क्या, हाल को घर पहुंचते ही सख़्त फटकार सुननी पड़ी। पत्नी इसलिए नाराज़ थी कि उसने सिडर ब्रिज में इतनी देर क्यों लगा दी और अजनबी के बारे में उसकी पूछताछ के बेतुके उत्तर उसे मिले। लेकिन टेडी ने उसके मन में संदेह का जो बीज बो दिया था, वह इतनी विपरीत अवस्था के बावजूद जड़ पकड़ गया था। इसलिए हाल ने कहा, "तुम औरतें बात नहीं समझतीं।" और हाल ने निश्चय किया कि जितनी जल्दी संभव हो सके वह अजनबी के बारे में सबकुछ मालूम कर लेंगे। अतएव साढ़े नौ बजे के क़रीब जब अजनबी सो गया, वह बड़े ताव से कमरे में घुस गया। पहले उसने यह प्रदर्शित करने के लिए घूरकर देखा कि कमरे पर मेहमान का अधिकार नहीं है। फिर उसने कागज़ के एक ताव पर अवज्ञापूर्वक दृष्टि डाली, जिस पर अजनबी ने कुछ हिसाब लगाया था। सोने से पहले उसने पत्नी

को हिदायत की कि कल जब अजनबी का सामान आए तो उसे ध्यान से देखना।

"तुम अपना काम देखो, हाल!" वह बोली, "और मैं अपना काम देखूंगी।"

वह हाल को बातें नहीं करने देना चाहती थी क्यों अजनबी सचमुच बड़े विचित्र प्रकार का अजनबी था और उसके अपने मन में ही उलझन थी। आधी रात गए उसकी आंख खुल गई। वह स्वप्न देख रही थी कि शलजम की तरह बड़े-बड़े सफ़ेद सिर, जिनकी भयानक आंखें हैं, उसका पीछा कर रहे हैं। लेकिन वह समझदार स्त्री थी। उसने अपने मन को शांत किया और करवट बदलकर फिर सो गई।

एक हज़ार एक बोतलें

यों समझिए कि 9 फरवरी को, जब बर्फ़ गिरनी शुरू हुई, यह अद्भुत व्यक्ति कहीं से इपिंग में आन टपका। दूसरे दिन उसका सामान आया। यह अजीबोग़रीब सामान था। दो ट्रंक थे जैसे हर समझदार आदमी के पास होते हैं और उनके अलावा किताबों से भरा हुआ एक बड़ा संदूक था। मोटी-मोटी बड़ी किताबें, कुछ तो ऐसी हस्तलिपि में लिखी हुई थीं कि पढ़ पाना कठिन था। फिर एक दर्जन से अधिक टोकरियां थीं, संदूक थे और झांपियां थीं, जिनमें सूखी घास में लिपटी चीजें रखी थीं। श्री हाल बड़ी उत्सुकता से उन्हें देख रहा था और उसका ख़्याल था कि ये बोतलें हैं। अजनबी हैट, कोट और दस्तानों में लिपटा हुआ फीयरन साइड के छकड़े की अगवानी करने के लिए अधीरता से बाहर निकला। मिस्टर हाल सामान उठवाने में सहायता करने के पहले फीयरन साइड के साथ गप लड़ा रहा था। अजनबी बाहर आया और फीयरन साइड के कुत्ते पर उसकी दृष्टि नहीं पड़ी, जो हाल के पैरों के पास सूंघ रहा था।

"ये बक्से अंदर ले आओ। मैं इनका इंतज़ार बहुत कर चुका हूं।" अजनबी ने कहा।

और वह छकड़े के पीछे की ओर बढ़ा, मानो सबसे छोटी टोकरी उठाना चाहता है।

ज्यों ही फीयरन साइड के कुत्ते ने अजनबी को देखा, उसने गुर्राना और हिलना शुरू किया और जब वह सीढ़ियों से उतरकर नीचे आया, तो कुत्ते ने लपककर उसका हाथ पकड़ लिया। 'हो हो!' हाल चिल्लाता हुआ पीछे को भागा क्योंकि कुत्ते को हटाने का उसमें साहस नहीं था। 'लेट जाओ।' फीयरन साइड ने कहा और उसने अपनी चाबुक उठाई।

उन्होंने देखा कि कुत्ते के दांत अजनबी के हाथों को नहीं छू पाए, ठोकर मारने की आवाज़ सुनी, देखा कि एक उछाल में कुत्ते ने अजनबी की टांग पकड़ ली और तब उन्हें पैंट फटने की आवाज़ सुनाई पड़ी। तब फीयरन साइड का कोड़ा सटाक से कुत्ते की पीठ पर पड़ा और भय से चीख़ता हुआ कुत्ता गाड़ी के पहियों के पीछे

छिप गया। यह सब आधे मिनट में हो गया। कोई कुछ नहीं बोला, सभी चिल्ला रहे थे। अजनबी ने अपने फटे हुए दस्ताने को और फिर पतलून को देखा, ऐसा लगा मानो वह झुककर पांव पकड़ेगा, परंतु वह मुड़कर जल्दी-जल्दी सराय के अंदर अपने कमरे में लौट गया। लोगों ने उसके जल्दी-जल्दी गलियारे तथा नंगी सीढ़ियों पर चलकर अपने कमरे में जाने की आवाज़ सुनी।

"तुम शैतान हो।" फीयरन साइड ने चाबुक हाथ में लिए घोड़े से उतरते हुए कहा, जब कि कुत्ता पहिए में से उसे देख रहा था।

"इधर आओ।" गाड़ीवान ने कहा।

उसकी सांस फूली हुई थी। बोला, "उसे क… काट लिया है। मैं ख… खबर लेने ज… जाता हूं।" वह सीढ़ियां चढ़ गया। रास्ते में श्रीमती हाल मिली। उससे बताया—"अ… अजनबी को गाड़ीवान के कुत्ते ने क… काट लिया।"

अजनबी के कमरे का दरवाज़ा खुला था। हाल सीढ़ियां चढ़कर निस्संकोच भीतर घुस गया क्योंकि वह तो सहानुभूति प्रकट करने के 'मूड' में था।

पर्दे गिरे हुए थे और कमरे में अंधेरा था। उसे एक अद्भुत वस्तु दिखाई दी, जो बिना हाथ का बाजू मालूम होता था। और एक चेहरा था जिस पर तीन बड़े-बड़े धब्बे थे। 'पैंसी' के चेहरे के समान ही उसका चेहरा मालूम पड़ रहा था। तब उसकी छाती में ज़ोर से घूंसा लगा और उसे बाहर निकालकर दरवाज़ा अंदर से बंद कर लिया गया। यह सब इतनी जल्दी हुआ कि कुछ देखने का उसे समय ही न मिला। अज्ञात आकृतियों का हिलना, एक घूंसा और एक धक्का! वह अंधेरे में खड़ा सोच रहा था कि जो कुछ उसने देखा है वह क्या है।

सराय के बाहर खासी भीड़ जमा हो गई थी। दो मिनट बाद हाल भी वहीं पहुंच गया। फीयरन साइड दूसरी बार घटना बयान कर रहा था। श्रीमती हाल शिकायत कर रही थी कि उसके कुत्ते ने मेरे मेहमान को क्यों काटा। लोग सुनकर तरह-तरह की बातें बना रहे थे।

सीढ़ियों पर खड़े होकर हाल लोगों की बातें सुन रहा था। अपने साथ कमरे में जो कुछ बीती थी, उसे उस पर विश्वास नहीं आ रहा था और उसे व्यक्त करने के लिए उसके पास शब्द नहीं थे।

"उसे सहायता नहीं चाहिए।" हाल ने पत्नी के पूछने पर कहा, "बेहतर है कि हम उसका सामान अंदर पहुंचा दें।"

"अगर सूजन आ गई हो," श्री इक्सटर ने कहा, "तो उसे फौरन गर्म लोहे से दग़वा देना चाहिए।"

"मैं उसे गोली मार दूंगी। बस मैं, यही कर सकती हूं।" भीड़ में से एक स्त्री बोली।

कुत्ता सहसा फिर गुर्राने लगा।

"चलो!" अजनबी की क्रुद्ध ध्वनि सुनाई दी। वह पट्टियों से ढका दरवाज़े पर खड़ा था। उसके कालर ऊपर को उठे हुए थे और हैट के कोने नीचे को झुके हुए थे। "ये सब चीज़ें जल्दी-जल्दी अंदर ले आओ।" किसी अज्ञात दर्शक ने कहा कि अजनबी ने अपने पैंट और दस्ताने बदल दिए हैं।

"आपको चोट लगी क्या, श्रीमान्?" फीयरन साइड ने पूछा और कहा, "मुझे अफ़सोस है कि मेरे कुत्ते..."

"नहीं, सिर्फ कपड़े ही फटे। तुम ये चीज़ें भीतर ले आओ।" अजनबी ने कहा।

उसकी हिदायत के अनुसार पहली टोकरी बैठक में पहुंचाई गई। अजनबी एकदम बड़ी आतुरता से उस पर टूट पड़ा और उसे खोलकर श्रीमती हाल के गलीचे की परवाह किए बिना उस पर घास बिखेर दी और टोकरी में से बोतलें निकालना शुरू किया। बहुत से आकार-प्रकार की बोतलें थीं। छोटी-छोटी बोतलों में पाउडर था। छोटी, पतली बोतलों में सफ़ेद और रंगीन तरल थे। चौड़ी नीली बोतलों पर चेपियां लगाकर 'विष' लिखा हुआ था। पतली गर्दन वाली गोल बोतलें थीं। बड़ी हरे शीशे की बोतलें थीं, कांच के काग और चिपियों वाली बोतलें थीं, पतले कागों वाली बोतलें थीं, डट्टे लगी बोतलें थीं, लकड़ी की काग वाली बोतलें, शराब की बोतलें, सलाद के तेल की बोतलें थीं। अजनबी ने उन्हें मेज़ पर, कार्निस पर, खिड़की पर, खिड़की के नीचे और दीवार के साथ-साथ हर जगह पंक्तियों में चुन दिया। बेंबहर्स्ट की दवाइयों की दुकान में भी इसकी आधी बोतलें भी न थीं। अच्छा दृश्य था। टोकरी के बाद टोकरी आने लगी। छः ख़ाली हो गईं। मेज़ पर सूखी घास का ढेर लग गया। उनमें बोतलों के अलावा कुछ नलिकाएं थीं और एक अच्छी तरह पैक की हुई तराजू थी।

ज्यों ही टोकरियां खुलीं, अजनबी ने खिड़की के पास जाकर काम शुरू कर दिया। घास बिखरी पड़ी थी। आग बुझ गई थी। किताबों की संदूक तथा दूसरा सामान सीढ़ियों के ऊपर के कमरे में पहुंचाया जा चुका था। लेकिन इन बातों की उसे कुछ भी परवाह नहीं थी।

जब श्रीमती हाल उसका खाना लेकर भीतर पहुंचीं तो वह अपने काम में इतना व्यस्त था—बोतलों से छोटी-छोटी बूंदें ट्यूबों में डाल रहा था—कि उसने श्रीमती हाल की आहट उस समय पाई, जब उसने घास साफ़ करके और ज़रा ज़ोर से ट्रे मेज़ पर रखी, क्योंकि उसे अपने फ़र्श की दशा देखकर अच्छा नहीं लग रहा था। तब मेहमान ने गर्दन आधी मोड़ी और फिर दूसरी ओर घुमा ली। मगर श्रीमती हाल ने इतने ही देर में देख लिया कि उसने ऐनक उतारकर मेज़ पर रख दी है और उसकी आंखें असाधारण रूप से अंदर की ओर धंसी हुई हैं। उसने ऐनक लगाई, तब पलटकर श्रीमती हाल से मुखातिब हुआ।

"मैं चाहता हूं कि तुम अंदर आने से पहले दरवाज़ा खटखटाया करो।" उसने अत्यंत विक्षुब्ध स्वर में कहा, जो उसका स्वभाव बन गया मालूम पड़ता था।

"मैंने खटखटाया था, लेकिन..."

"शायद खटखटाया हो, लेकिन अपने अनुसंधान के बीच, जो अत्यंत गंभीर और आवश्यक है, तनिक-सा शोर—दरवाज़े का खुलना तक—मुझे..."

"ठीक है श्रीमान! अगर ऐसी बात है तो आप दरवाज़े में भीतर से ताला लगा सकते हैं किसी भी समय।"

"बहुत अच्छा ख़्याल है।" अजनबी ने कहा।

"यह घास! अगर मैं यह कहने का साहस करूं..."

"ज़रूरत नहीं, तुम्हें साफ़ करने में कष्ट हुआ है, बिल में उसकी उजरत लगा दो।" और अजनबी स्पष्ट स्वर में बड़बड़ाने लगा, जैसे उसे कोस रहा हो।

एक हाथ में बोतल और दूसरे में नली लिए खड़ा वह इतना अजीब, इतना झगड़ालू और नाराज़ मालूम हो रहा था कि श्रीमती हाल एकदम सहम गईं। लेकिन वह साहसी स्त्री थी। बोली, "अगर ऐसी बात है श्रीमान्, तो आप ही बताएं कि इसकी उजरत मैं..."

"एक शिलिंग। एक शिलिंग लगा दो। हां, एक शिलिंग निश्चय ही काफ़ी है।"

"ठीक है," श्रीमती हाल ने मेज़पोश मेज़ पर बिछाते हुए कहा, "अगर आप संतुष्ट हैं तो..."

वह पलटकर बैठ गया। उसके कोट का कालर श्रीमती हाल की ओर था।

दोपहर के बाद वह दरवाज़ा बंद करके काम करता रहा और श्रीमती हाल के कथनानुसार प्रायः सारे ही समय ख़ामोशी रही। लेकिन एक बार सहसा झटका-सा लगा और बोतलों के टकराने की आवाज़ सुनाई दी, जैसे मेज़ पर मुक्का मारा गया हो और कुछ शीशा फ़र्श पर फेंक दिया गया हो और तब कमरे में घूम रहे तेज़-तेज़ कदमों की चाप सुनाई दी। श्रीमती हाल उत्सुकतावश कि क्या हो रहा है, दरवाज़े पर कान लगाकर सुनने लगी। उसने दरवाज़ा नहीं खटखटाया।

"मुझसे नहीं चलेगा, नहीं चलेगा।" अजनबी बड़बड़ा रहा था, "तीन लाख, चार लाख! इतनी संख्या! धोखा! चाहे इसमें मेरा सारा जीवन खप जाए! धैर्य, धैर्य, निस्संदेह!...मूर्ख! मूर्ख!"

शराबघर की ईंटों पर किसी के जूतों की कीलों की आवाज़ आई और श्रीमती हाल अजनबी की बड़बड़ाहट सुनना अनमने मन से छोड़कर भागीं। जब वह लौटकर आई तो कमरे में फिर निस्तब्धता छा गई, सिर्फ़ कभी-कभी कुर्सी सरकने अथवा बोतल टकराने की आवाज़ आती थी। सब खत्म हो चुका था और अजनबी फिर काम में व्यस्त हो गया था।

जब वह चाय लेकर गई तो उसने टूटा हुआ शीशा दीवार और आईने के नीचे एक कोने में पड़ा देखा। फ़र्श पर सुनहरे रंग का धब्बा था, जो लापरवाही से पोंछ दिया गया था। श्रीमती हाल ने अजनबी का ध्यान इस ओर दिलाया।

"इसे भी बिल में लिख लो।" अजनबी ने फ़ौरन कहा, "भगवान के लिए मुझे परेशान मत करो। अगर तुम्हारा कुछ नुकसान होता है, तो उसके लिए मुझसे पैसे ले लो।" और वह अपने सामने रखी हुई कापी में सही के निशान लगाता रहा।

"मैं तुम्हें एक बात बताऊंगा।" फीयरन साइड ने रहस्यमय ढंग से कहा। अपराह्न का काफ़ी समय बीत चुका था और वे इपिंग हैंगर की छोटी-सी बियर की दुकान में थे।

"अच्छा अब बताओ।" टेडी हेन्फ्रे ने कहा।

"यह अजनबी जिसकी तुम बात कर रहे हो, जिसे मेरे कुत्ते ने काटा था, काला है। कम-से-कम टांगें तो हैं ही ऐसी। मैंने उसे फटी हुई पतलून और फटे हुए दस्ताने में से देखा था। तुम सोचते होगे उसका रंग गुलाबी तो होगा, है न? लेकिन बात ऐसी नहीं है। वह बिलकुल काला है। इतना काला जितना मेरा हैट।"

"हे भगवान! यह बड़ा ही विचित्र मामला है। उसकी नाक तो रोग़न की तरह गुलाबी है।" टेडी बोला।

"हां, यह तो है। यह मैंने भी देखा।" फीयरन साइड ने कहा, "जो मैंने समझा है वह तुम्हें बताता हूं। यह व्यक्ति चितकबरा है—कहीं काला, कहीं सफ़ेद। और वह इस बात से लज्जित है। एक प्रकार से वह दोग़ली नस्ल का है। रंग आपस में मिलने के बजाय अलग-अलग उभरे हैं। ऐसा होता है, यह मैंने पहले भी सुना है। घोड़ों में यह बात आम दिखाई देती है। कोई भी देख सकता है।"

मिस्टर कस की अजनबी से भेंट

मैं ने अजनबी के इपिंग में आने की बात इसलिए विस्तार से कही है कि उसने जो विचित्र प्रभाव उत्पन्न किया, उसे पाठक भली प्रकार समझ सकें। दो संक्षिप्त घटनाओं को छोड़कर क्लब, उत्सव के असाधारण दिन तक सराय में उसकी रिहायश को सरसरी नज़र डालकर छोड़ा जा सकता है। श्रीमती हाल के साथ छोटी-छोटी घरेलू बातों पर उसका कई बार झगड़ा हुआ, लेकिन अप्रैल में दरिद्रता के प्रथम चिह्न प्रकट होने तक वह हर झगड़े को चंद सिक्के अदा करके दबा देता था। हाल उसे पसंद नहीं करता था और जब कभी भी बातें करता था तो उसे निकाल बाहर करने की ही। अपनी नापसंदी को वह दिखावे के साथ आगंतुक से यथासंभव दूर रहकर ही प्रकट करता था। "गर्मी तक सब्र करो।" श्रीमती हाल ने गंभीरता से कहती, "जब मुसाफ़िर आने शुरू हो जाएंगे तब देखेंगे। वह उद्दंड भले ही है, लेकिन बिल तो समय पर चुका देता है। और यह कुछ कम महत्त्व की बात नहीं है।"

अजनबी गिरजे नहीं जाता था और इतवार और दूसरे दिनों की उसकी पोशाक में भी कोई अंतर नहीं होता था। श्रीमती हाल का कहना है कि उसे मानो काम करने के दौरे आते थे। कई बार वह सुबह उठकर ही नीचे आ जाता था और लगातार काम करता रहता था। कई बार देर से उठता, कमरे में टहलता रहता, घंटों बड़बड़ाता, धूम्रपान करता या आरामकुर्सी में पड़कर सो जाता। इस गांव से बाहर उसका किसी से पत्र-व्यवहार तक नहीं था। उसका स्वभाव बड़ा ही अनिश्चित था। प्रायः उसका रवैया ऐसे व्यक्ति का होता था, जो असह्य उत्तेजना से पीड़ित हो। एक-दो मर्तबा उसने क्रोध के मारे आपे से बाहर होकर चीज़ें तोड़-फोड़, कुचल और फाड़ डाली थीं। धीमे स्वर में अपने आप से बातें करने की उसकी आदत बराबर बढ़ती ही गई। श्रीमती हाल उसका बड़बड़ाना बड़े ध्यान से सुनती, तथापि वह उसका सिर-पैर तक मालूम न कर सकी।

दिन के समय वह कभी बाहर न जाता, लेकिन शाम के झुटपुटे में सर्दी हो या नहीं, बहुत से कपड़ों में लिपटे हुए घूमने निकल जाता और ऐसा एकांत मार्ग पकड़ता, जिस पर वृक्षों की छाया होती थी। उसकी बड़ी-बड़ी ऐनकें और हैट के नीचे

पट्टियों से बंधा हुआ सिर घर लौट रहे एक-दो मज़दूरों को सहसा चौंका देता। एक दिन टेडी हेन्फ्रे रात के साढ़े नौ बजे लड़खड़ाता हुआ 'स्कार्लेट कोट' नामक सराय से निकला और वह अजनबी का खोपड़ीनुमा सिर देखकर डर गया, क्योंकि उस पर सराय के खुले दरवाज़े से रोशनी जा पड़ी थी और उसने हैट उतार रखा था। जो बच्चे उसे रात को देख लेते उन्हें भूत-प्रेत के स्वप्न आते। मालूम नहीं बच्चे उससे अधिक घृणा करते थे या वह बच्चों से ज़्यादा घृणा करता था, लेकिन दोनों ओर से उपेक्षा भाव निश्चित और प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त हो जाता था।

यह बात अनिवार्य थी कि इपिंग जैसे गांव में ऐसी अद्भुत सूरत-शक्ल वाला व्यक्ति अक्सर बात-चीत का विषय बने। श्रीमती हाल इस बारे में बड़ी भावुक थीं। जब पूछा जाता तो वह बड़ी सावधानी से व्याख्या करतीं कि वह 'परीक्षणशील अनुसंधानकर्ता' है, इसलिए हमेशा बड़ा सतर्क रहता है। जब पूछा जाता कि 'परीक्षणशील अनुसंधानकर्ता' क्या होता है तो वह बड़े आत्मगौरव के साथ कहती कि पढ़े-लिखे लोग ये बातें खूब समझते हैं और कहते हैं कि 'वह चीज़ों की खोज' करता है। वह कहती कि उसके मेहमान के साथ दुर्घटना घटित हुई है, जिसने अस्थायी रूप से उसके हाथों और चेहरे का रंग बिगाड़ दिया है और वह एक भावुक व्यक्ति होने के कारण इस बात को लोगों से छिपाए रखता है।

उसके पीठ पीछे अधिकांश लोगों में यह कहा जाता था कि अजनबी कोई अपराधी है, जो अपने आपको पुलिस से छिपाकर न्याय से अपने को बचाए हुए है। इस विचार ने टेडी हेन्फ्रे के मस्तिष्क में जन्म लिया था। फरवरी के मध्य और अंत से अब तक कोई भयंकर अपराध सुनने में नहीं आया था। इस विचार को श्री गोल्ड जो नेशनल स्कूल में सहायक थे, की कल्पना ने और आगे बढ़ाया और उसका रूप यह हो गया कि अजनबी छद्मवेशी अराजकतावादी है और विस्फोटक पदार्थ तैयार कर रहा है। "मैं समय पाकर इस बात को जासूसी के द्वारा सिद्ध करूंगा।" उसकी जासूसी सिर्फ़ यही थी कि वह जब भी अजनबी के सामने पड़ जाता उसे घूरकर देखता या ऐसे आदमियों से उसके बारे में सवाल पूछता, जिन्होंने उसे देखा तक नहीं था। पर उसकी जासूसी जरा भी सफल न हो सकी।

एक और मत उन लोगों का था जो फीयरन साइड के कथनानुसार अजनबी को दोग़ला मानते थे अथवा इसमें कुछ संशोधन कर लेते थे। उदाहरण रूप में सिलास दुर्गन का कहना था कि अगर उसे टिकट लगाकर मेलों में दिखाया जाए तो बड़ी आमदनी हो और धार्मिक प्रवृत्ति के होने के नाते वह अजनबी की एक प्रतिमा वाले व्यक्ति से तुलना करता था। कुछ लोग ऐसे भी थे जो अजनबी को निरीह सौदाई मानते थे। इस मत से अज़नबी की सारी बातें अपने आप स्पष्ट हो जाती थीं। इन मतों के बीच अनिश्चित विचारों और समझौता-वृत्ति के लोग भी थे। इस इलाके के

लोग अंधविश्वासी नहीं थे। इसलिए अलौकिकता की बातें अप्रैल की घटनाओं के बाद ही फैलनी शुरू हुईं और वे भी अधिकांशतः स्त्रियों में।

बातें चाहे कुछ भी हों, इपिंग के सभी लोग उससे घृणा ज़रूर करते थे। उसका चिड़चिड़ापन दिमाग़ी काम करने वाले नागरिकों की समझ में तो आ सकता था, लेकिन ससैक्स के इन सीधे-सादे देहातियों के लिए अजीब बात थी। विचित्र हरकतें करते हुए लोगों को दिख जाना, अंधेरा होने के बाद तेज़ी से चलते हुए सड़कों के एकांत मोड़ों पर आदमियों से टकरा जाना, दूसरों की उत्सुकता के प्रति अमानवीय विरोध करना, धुंधलके से प्रेम करने के कारण दरवाज़े बंद रखना, पर्दे खींचे रहना, मोमबत्तियों और लैंपों को बुझा देना—किसको ये कार्यकलाप भा सकते थे? जब वह गांव में से गुज़रता तो लोग रास्ता छोड़कर खड़े हो जाते और उसके निकल जाने पर गांव के विनोदप्रिय नौजवान कोट का कालर उठाकर और हैट के कोने झुकाकर उसकी अजीबोग़रीब चाल-ढाल की नकल उतारते हुए उसके पीछे-पीछे उसी तरह तेज़ी से चलने लगते। उन दिनों 'बोगी मैन' नामक एक गीत बड़ा लोकप्रिय था। मिस सेचेल ने इसे गिरज़ाघर के लोगों के सहायतार्थ स्कूल के कन्सर्ट में गाया था। और उसके बाद जब कभी एक-दो गांव वाले इकट्ठे होते और अजनबी उधर से गुज़रता तो इस गीत की एक-दो पंक्तियां, तीखी या सम आवाज़ में, ज़रूर सीटियों में बजाई जातीं। साथ ही, बच्चे फूलकर उसके पीछे पहुंचते और 'बोगी मैन' कहकर भाग जाते।

कस, जो सब तरह का इलाज करता था, उत्सुकता से मरा जा रहा था। पट्टियों से उसकी व्यापारिक दिलचस्पी जगती थी और एक हज़ार एक बोतलों ने उसके मन में ईर्ष्या उत्पन्न कर दी थी। अप्रैल और मई के दो महीनों तक वह अजनबी से बातें करने का अवसर ढूंढ़ता रहा, आख़िर उसके लिए इस इच्छा को दबाए रखना असंभव हो गया और उसने गांव में एक नर्स की नियुक्ति के लिए चंदा जमा करने को मुलाकात का बहाना बनाया। वह यह जानकर चकित रह गया कि मिस्टर हाल को अपने मेहमान का नाम मालूम नहीं।

"उसने नाम बताया तो था, लेकिन मैंने ठीक से सुना नहीं।" श्रीमती हाल ने बात बनाई। अजनबी का नाम न जानना उसे मूर्खता जान पड़ी।

कस ने बैठक के दरवाज़े पर दस्तक दी और भीतर चला गया। अजनबी बड़बड़ा रहा था।

"मेरी धृष्टता क्षमा कीजिएगा।" कस ने कहा और दरवाज़ा बंद कर दिया और श्रीमती हाल बाक़ी बातचीत से वंचित रह गईं।

दस मिनट तक वह धीमी आवाज़ें सुनती रही, तब आश्चर्य की एक चीख़, पांवों की चाप, कुर्सी को एक ओर फेंकना, तीखी हंसी, तेज़-तेज़ कदमों से दरवाज़े की ओर बढ़ना और तब कस बाहर निकला। उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया था और वह गर्दन मोड़कर उधर ही घूर रहा था। उसने अपने पीछा दरवाज़ा खुला छोड़ दिया,

श्रीमती हाल की ओर उसने देखा तक नहीं, कमरे से निकलकर जल्दी-जल्दी सीढ़ियां उतर गया और सड़क पर तेज़ी से चलते पैरों की आवाज़ सुनाई पड़ी। हैट वह हाथ में लिए था। श्रीमती हाल शराबघर के दरवाज़े पर खड़ी बैठक के खुले दरवाज़े को देखती रही। तब उसे अजनबी की धीमी हंसी और दरवाज़े की ओर आते पांव की चाप सुनाई दी। जहां वह खड़ी थी, वहां से वह अजनबी का चेहरा नहीं देख सकती थी। अजनबी ने दरवाज़ा बंद कर लिया और सराय में फिर खामोशी छा गई।

कस सीधा गांव के पादरी बंटिंग के पास गया।

"क्या मैं पागल हूं?" उसने पादरी की पढ़ने की गंदी-सी कोठरी में प्रवेश करते हुए कहा, "क्या मैं पागल दिखाई देता हूं?"

"बता क्या है?" पादरी ने अपने आगामी प्रवचन के मसविदा के अलग-अलग पन्नों को एक ओर रखते हुए कहा।

"वह सरायवाला अजनबी..."

"तो?"

"मुझे कुछ पीने को दो।" कहकर कस बैठ गया।

घटिया शेरी (स्पेन की सफ़ेद शराब) का एक गिलास पीकर उसके होश दुरुस्त हुए तो उसने पारी को अपनी मुलाकात की बात सुनानी शुरू की।

"मैं भीतर गया और नर्स फंड के लिए चंदा मांगने लगा।" उसने हाथ जेबों में डाल रखे थे और कुर्सी में दुबका बैठा सुंघनी सूंघ रहा था। मैंने कहा, "सुना है कि वैज्ञानिक बातों में आपकी बड़ी दिलचस्पी है।" उसने 'हां' कहा और सुंघनी सूंघी। वह लगातार सुंघनी सूंघता रहा, शायद इतने के बावजूद उसे जुकाम लग गया है। नर्स फंड के लिए चंदा मांगने का विचार मेरा अपना था। और मैं अपनी आंखें पूरी खोले था। उसके चारों तरफ़ बोतलें-ही-बोतलें और रासायनिक पदार्थ पड़े थे। एक तराजू था। स्टैंडों में परीक्षा-नलियां खड़ी थीं। और वासंती गुलाब की खुशबू भरी थी। मैंने नर्स की आवश्यकता बताई और कहा, "क्या आप चंदा देंगे?" बोला कि मैं सोचूंगा। तब मैंने सीधा सवाल किया, क्या आप अनुसंधान कर रहे हैं? बोला, हां। क्या लंबा अनुसंधान है? नाराज़ हो उठा। "सुसरा खत्म होने ही में नहीं आता।" उसने क्षुब्ध स्वर में कहा। "ओह!" मैंने कहा। और उसकी परेशानी मुझे मालूम हो गई। आदमी उबलने ही वाला था। मेरे सवाल से तो वह उबल ही पड़ा। उसे एक नुस्ख़ा दिया गया था—बड़ा ही मूल्यवान नुस्ख़ा। कैसा था यह उसने नहीं बताया। "क्या किसी दवाई का अरक है? तुमसे क्या मतलब? तुम क्या जानना चाहते हो?" मैंने क्षमा याचना की। उसने सुंघनी सूंघी, खांसा और शांत हो गया। उसने नुस्ख़ा पढ़कर मेज़ पर रख दिया। पांच चीज़ें थीं। और गर्दन दूसरी ओर घुमा ली। खिड़की में से हवा का तेज़ झोंका आया। काग़ज़ फड़फड़ाए। नुस्ख़ा उड़कर आग में जा गिरा

और जल उठा। जब उसकी लपटें चिमनी तक पहुंच रही थीं, अजनबी का विचित्र बाजू उसकी ओर लपका।

"बाजू?"

"हाथ तो था नहीं। ख़ाली आस्तीन थी। यह आप ही आप चल रही थी। मैं तो चकित रह गया; यह है विकलांगता! शायद लकड़ी की बांह होगी, जिसे उसने उस समय अलग कर रखा होगा। जब मैंने देखा कि उसमें कुछ विचित्रता है। अगर उसके भीतर बांह नहीं है तो आस्तीन तनी कैसे है? और उसके भीतर कुछ नहीं था, मैं आपसे बतलाता हूं। कुहनी के जोड़ तक कुछ भी नहीं था। मैं आस्तीन के भीतर कुहनी तक देख सकता था। और कपड़े के एक छेद में से प्रकाश-सा दिखाई दिया। 'खूब है!' मैंने कहा। अजनबी ठहर गया। उसने अपनी बड़ी-बड़ी ऐनकों में से पहले मुझे और फिर अपनी आस्तीन को देखा।"

"फिर?"

"बस, और कुछ नहीं। उसने एक शब्द तक नहीं कहा, घूरकर मुझे देखा और आस्तीन को जल्दी से जेब में रख लिया।" "मैं कह रहा था," वह बोला, "नुस्खा आग में जल रहा है, मैंने कहा था न?" खांसा, मानो सवाल किया हो। "लेकिन यह बताएं, आपने ख़ाली आस्तीन को कैसे चलाया?" मैंने पूछा। "ख़ाली आस्तीन?" "हां, बिल्कुल ख़ाली आस्तीन!" मैंने उत्तर दिया।

"यह ख़ाली आस्तीन है, ख़ाली, तुमने देखा कि यह ख़ाली थी?" वह उठकर खड़ा हो गया तो मैं भी खड़ा हो गया। वह तीन छोटे-छोटे कदम चलकर मेरी ओर आ गया। और मेरे बिलकुल पास खड़ा हो गया। अत्यंत विषाक्त ढंग से सुंघनी सूंघी। मैं घबराया नहीं, यद्यपि उस पट्टियों बंधे गट्ठर-के-गट्ठर का यों निकट आ जाना और फिर घूरकर देखना किसी भी व्यक्ति को बदहवास बना देने के लिए काफ़ी था।

"तुम कहते हो कि वह ख़ाली आस्तीन थी।" उसने कहा।

"हां!" मैंने कहा। उसने बिना कुछ कहे मेरी ओर देखा। तब उसने आहिस्ता से आस्तीन फिर जेब से निकाली और मेरी ओर बढ़ाई, जैसे वह इसे मुझे फिर दिखाना चाहता हो। उसने इसे बहुत ही धीरे-धीरे मेरी ओर बढ़ाया। मैं देख रहा था। लगता था एक ज़माना बीत गया। मैंने देखा और गला साफ़ करके कहा, "इसमें कुछ नहीं।"

कुछ कहना तो था ही। मैं डरने लगा था। मैं उसी को देख रहा था। आस्तीन धीरे-धीरे मेरी ओर बढ़ती गई, निकट से निकटतर आती गई, यहां तक कि उसका कफ़ मेरे चेहरे से 6 इंच दूर रह गया। यह कितनी अजीब बात है कि आप एक ख़ाली आस्तीन को अपनी ओर बढ़ते देखें। और फिर—

"तब?"

"फिर मैंने महसूस किया जैसे एक अंगुली और अंगूठे से मेरी नाक पकड़ ली हो।"

बंटिंग खिलखिलाकर हंस पड़ा।

"अब भी उसमें कुछ नहीं था।" "कुछ नहीं था" कहते-कहते कस की चीख़-सी निकल गई, "आपके लिए हंसना आसान है, लेकिन मैं इतना डर गया था कि आस्तीन को ज़ोर से पीछे धकेला और मैं पलटकर दरवाज़े की ओर भागा—भागता हुआ बाहर निकल आया।"

कस ने बात ख़त्म की। उसकी घबराहट में संदेह की गुंजाइश नहीं थी। उसने होश दुरुस्त करने के लिए बढ़िया पादरी की घटिया शराब का फिर एक गिलास पिया। "जब मैंने उसके कफ़ को धक्का दिया था," कस बोला, "तो मुझे यही लगा कि मैं किसी हाथ को ही धक्का दे रहा हूं।" "और हाथ वहां था नहीं। हाथ बिलकुल नहीं था।"

श्री बंटिंग ने इस पर विचार किया। उसने संदेह से कस की ओर देखा। "बड़ी विचित्र कहानी है यह," उसने कहा। वह बड़ा बुद्धिमान और गंभीर दिखलाई पड़ रहा था। "वाक़ई, यह तो असाधारण रूप से विचित्र है।" पादरी से उचित ढंग से ज़ोर देते हुए कहा।

पादरी के घर चोरी

पादरी के घर चोरी का विवरण हमें मुख्यतः पादरी और उसकी पत्नी द्वारा प्राप्त हुआ है। यह सोमवती अमावस को हुई। इस दिन इपिंग में क्लब का उत्सव मनाया जाता है। श्रीमती बंटिंग काफ़ी सवेरे, जब एक प्रकार का सन्नाटा छाया रहता है, सहसा उठ बैठीं। उसे यों महसूस हुआ जैसे उनके सोने के कमरे का दरवाज़ा पहले खुला और फिर बंद हुआ है। उसने पहले अपने पति को जगाया, केवल सतर्क होकर बिस्तर में बैठ गई। तब उसे साथ के वस्त्र पहनने के कमरे से निकलकर सीढ़ियों की ओर जाते नंगे पैरों की आवाज़ सुनाई दी। जब उसे एक बात का पूर्ण विश्वास हो गया, तब उसने पति को धीरे से जगाया। पादरी ने लैंप नहीं जलाया, ऐनक लगाई, पत्नी का ड्रेसिंग गाउन और अपने नहाने के स्लीपर पहनकर सीढ़ियों के पास आया और आहट लेने लगा। उसे स्पष्ट सुनाई दिया कि नीचे कोई उसकी मेज़ की दराज़ें टटोल रहा है और फिर छींक की ज़ोरदार आवाज़ आई।

वह कमरे में लौटा। एकमात्र हथियार आग सुलगाने की लोहे की छड़ पड़ी थी, उसे उठाया और चुपचाप नीचे उतरने लगा। उसकी पत्नी सीढ़ियों पर आ खड़ी हुई।

चार बजे का वक्त था, अंधेरा बहुत कुछ खत्म हो चुका था। हाल में थोड़ी-सी रोशनी थी, लेकिन पढ़ने के कमरे का दरवाज़ा खुला था और वहां बिलकुल अंधेरा था। पूर्ण निस्तब्धता थी, सिर्फ़ श्री बंटिंग के पांव तले सीढ़ियां कुछ चरचराती थीं और पढ़ने के कमरे में कोई चल-फिर रहा था। फिर कुछ टूटा, दराज़ खुलने और कागज़ खखोलने की आवाज़ आई। तब चोर ने बड़बड़ाकर दियासलाई जलाई और कमरे में पीली रोशनी फैल गई। अब पादरी हाल में पहुंच गया था और किवाड़ की दरार में से खुली डेस्क और दराजें देख सकता था। डेस्क पर एक मोमबत्ती जल रही थी लेकिन चोर कहीं नहीं दिखाई देता था। वह किंकर्त्तव्यविमूढ़-सा हाल में खड़ा रह गया। श्रीमती बंटिंग भी, जिसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया था और गंभीर था, उसके पीछे-पीछे सीढ़ियां उतर आई थीं। पादरी को विश्वास था कि चोर गांव ही का रहने वाला है और यह विश्वास उसके साहस का आधार बना हुआ था।

उन्हें सिक्कों की खनखनाहट सुनाई दी और उन्होंने समझ लिया कि चोर को

पैसों की संदूकची मिल गई है—कुल मिलाकर दो पौंड दस शिलिंग की खरीज़ थी। सिक्कों की आवाज़ सुनते ही बंटिंग की चेतना सहसा जागी। लोहे की छड़ को मज़बूती से पकड़े हुए वह कमरे में घुसा। पत्नी ने भी उसका साथ दिया।

"ठहरो।" पादरी कर्कश स्वर में चिल्लाया। और चकित होकर रुक गया। कमरा बिलकुल ख़ाली था।

फिर भी पति-पत्नी निश्चित रूप से किसी को कमरे में घूमते महसूस कर रहे थे। वे आधे मिनट अवाक् खड़े रहे, तब श्रीमती बंटिंग ने आगे बढ़कर पर्दे के पीछे देखा और श्री बंटिंग ने भी डेस्क के नीचे नज़र डाली। तब श्रीमती बंटिंग ने खिड़की के पर्दे खींच दिए और श्री बंटिंग ने चिमनी के भीतर देखा और छड़ से उसे खखोला भी। तब श्रीमती बंटिंग ने रद्दी की टोकरी का निरीक्षण किया और श्री बंटिंग ने कोयले की कोठरी खोली। तब वे स्तब्ध, प्रश्न भरी आंखों से एक-दूसरे को देखने लगे।

"मैं कसम खा सकती···" पत्नी बोली।

"मोमबत्ती!" पति ने कहा, "यह किसने जलाई?"

"दराज़ खुला पड़ा है और पैसे ग़ायब हैं।" पत्नी ने कहा।

वह जल्दी से दरवाज़े पर पहुंची।

यह तो बहुत ही विचित्र घटना है···

गलियारे में ज़ोर की छींक सुनाई दी। वे दौड़कर बाहर आए। उसी समय रसोईघर का दरवाज़ा ज़ोर से बंद हुआ। "मोमबत्ती लाओ," बंटिंग ने कहा और आगे बढ़ा। उन दोनों ने जल्दी से सांकल लगाई जाने की आवाज़ें सुनीं।

जब उसने रसोईघर का दरवाज़ा खोला तो बर्तन मांजने की कोठरी में से देखा कि पीछे का दरवाज़ा खुल रहा है। सुबह की सफ़ेदी में दूर बाग़ की कालिमा दिखाई दे रही थी। उसे विश्वास हो गया कि दरवाज़े से कोई बाहर नहीं गया। वह खुला, एक मिनट तक खुला रहा और फिर ज़ोर से बंद हो गया। इतने में श्रीमती बंटिंग मोमबत्ती ले आई। वह दरवाज़ा बंद होने से हवा लगने के कारण बुझ गई। एक मिनट बाद वे रसोईघर में दाखिल हुए।

वहां कोई नहीं था। उन्होंने पीछे के दरवाज़े की चिटकनी लगाई। रसोईघर, बर्तन मांजने की और ईंधन की कोठरी भली प्रकार देखी और आख़िर वे तहखाने में गए। सारा घर ढूंढ़ मारा, लेकिन मिला कोई नहीं।

सुबह की रोशनी बिखर गई। उस समय भी पादरी और उसकी पत्नी अपने अजीबोग़रीब वस्त्र पहने मोमबत्ती की अनावश्यक रोशनी में अपने मकान की पहली मंज़िल पर खड़े विचारमग्न थे।

"यह तो बड़ी विचित्र घटना है।" पादरी ने बीसवीं मर्तबा दोहराया।

"प्रिय," पत्नी ने कहा, "सूसी आ रही है। उसके रसोईघर में जाने तक यहीं रहो, फिर हम ऊपर चलेंगे।"

फर्नीचर जो पागल हो गया

'हिक्टमंडे' की सुबह-सुबह, उस दिन के लिए मिली को खोजकर लाने से पहले, श्री और श्रीमती हाल उठे और चुपके से अपने तहख़ाने में जा पहुंचे। उनका उद्देश्य विशिष्ट था और 'बियर' की विशिष्ट सघनता के साथ उसका कुछ संबंध था।

वहां पहुंचते ही श्रीमती हाल को याद आया कि वे रक्त-शोधक आसव की बोतल तो बगल के कमरे से लाए ही नहीं। श्रीमती हाल इस काम में अधिक निपुण और प्रधान कार्यकर्त्री थीं, इसलिए हाल उसे लाने के लिए ऊपर गया।

सीढ़ियों में वह यह देखकर दंग रह गया कि अजनबी का दरवाज़ा खुला हुआ है। वह अपने कमरे में गया और बोतल, जिस जगह पर उसे बताई गई थी, वहीं मिल गई।

जब वह जीने से उतर रहा था तो उसने देखा कि सामने के दरवाज़े की ढिबरियां पीछे को हटी हुई हैं और दरवाज़ा एक प्रकार के कब्ज़ों पर टंगा हुआ है। उसके मस्तिष्क ने इसका संबंध तुरंत ऊपर अजनबी के खुले दरवाज़े और टेडी हेन्फ्रे की बात से जोड़ा। उसे खूब याद था कि रात को श्रीमती हाल ने बड़ी सावधानी से ढिबरियां लगाई थीं और वह मोमबत्ती थामे हुए था। इस दृश्य को देखकर वह स्तब्ध रह गया और उसका मुंह खुला का खुला रह गया। बोतल हाथ में लिए वह फिर ऊपर गया। उसने अजनबी के दरवाज़े पर दस्तक दी। कोई उत्तर नहीं मिला। फिर दस्तक दी और दरवाज़ा खोलकर भीतर चला गया।

उसका ख़्याल ठीक निकला। चारपाई और कमरा भी ख़ाली थे। और जो इससे भी विचित्र बात, जिसे हाल की मंद बुद्धि ने भी भांप लिया, यह थी कि अजनबी के वस्त्र और उसकी पट्टियां कुर्सी पर और कमरे में इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं। उसका बड़ा हैट भी खूंटी पर तिरछा लटक रहा था।

वह यह दृश्य देख ही रहा था कि तहख़ाने से पत्नी की आवाज़ आई। वह जल्दी-जल्दी अक्षरों का उच्चारण करके और हर बार प्रश्नवाचक वक्तव्य बनाकर, जिससे पश्चिमी ससैक्स के ग्रामीण अपना अधैर्य प्रकट करते हैं, कह रही थी, "जार्ज! तुम यहां क्या कर रहे हो?"

यह सुनकर वह घूमकर जल्दी-जज्दी सीढ़ियां उतर आया।

"जेनी," उसने तहख़ाने की सीढ़ियों के जंगले पर झुककर कहा, "हेन्फ्रे की बात सच निकली। वह अपने कमरे में नहीं है। और सामने का दरवाज़ा खुला पड़ा है।"

पहले तो श्रीमती हाल कुछ नहीं समझीं और जब समझीं तो उसने स्वयं जाकर ख़ाली कमरा देखने का निश्चय किया। हाल अब भी बोतल पकड़े हुए था, वह आगे-आगे चला। "वह तो नहीं है, लेकिन उसके कपड़े पड़े हैं। ताज्जुब है कि वह बिना कपड़े पहने कहां गया है।"

जब वे दोनों तहख़ाने की सीढ़ियां चढ़कर ऊपर आए तो, जैसा बाद में मालूम हुआ, उन्होंने सामने का दरवाज़ा खुलते और बंद होते देखा। लेकिन इसके अलावा कुछ नहीं देखा और दोनों ने इस बारे में कुछ नहीं कहा। रास्ते में श्रीमती हाल पति से आगे निकल गई और उससे पहले सीढ़ियां चढ़ने लगीं। सीढ़ियों पर कोई छींका। हाल उससे छः कदम पीछे आ रहा था। उसने सोचा कि मैंने पत्नी की छींक सुनी है और आगे-आगे चल रही श्रीमती हाल ने सोचा कि उसके पति ने छींका होगा। उसने दरवाज़ा खोल दिया और खड़ी होकर कमरे को देखने लगी। "बड़ी विचित्र बात है।" वह बोली।

उसने अपने पीछे सिर के बिलकुल निकट सुंघनी सूंघने की आवाज़ सुनी और मुड़कर देखा तो हाल अभी दस कदम दूर अंतिम सीढ़ी पर था। दूसरे ही क्षण वह उसके पास आ गया। वह आगे झुककर तकिए और फिर कपड़ों को टटोलने लगी।

"बिलकुल ठंडा," उसने कहा, "एक घंटा या ज़्यादा समय पहले वह उठ चुका है।"

जब वह यह कह रही थी तो एक असाधारण घटना घटित हुई। चारपाई के कपड़े आप ही आप इकट्ठे हो गए, एक गट्ठर के रूप में ऊपर को उछले और फिर सबसे निचले जंगले से नीचे जा गिरे। बिलकुल ऐसा हुआ जैसे एक हाथ में उन्हें बीच में से पकड़कर फेंक दिया हो। इसके तुरंत बाद अजनबी का हैट खूंटी से उछला, कमरे का आधे से ज़्यादा चक्कर लगाया और फिर सीधे श्रीमती हाल के चेहरे से जा टकराया। अब स्पंज लेकर हाथ धोने के लिए नल की ओर तेज़ी से बढ़ी और फिर कुर्सी, कोट और पतलून को लापरवाही से फेंकती हुई और अजनबी के शुष्क स्वर में हंसती हुई उलटी हो गई और एक क्षण के लिए ऐसा लगा कि वह अपनी चारों टांगों से श्रीमती हाल पर आक्रमण करेगी। वह चीख़ती हुई इधर-उधर दौड़ने लगी और तब कुर्सी की टांगें धीरे, लेकिन दृढ़ता से उसकी पीठ पर आ रहीं और उसे तथा उसके पति को कमरे से निकल जाने को मजबूर किया। तब दरवाज़ा ज़ोर से बंद हो गया और अंदर से चिटकिनी लग गई। एक क्षण के लिए लगा कि जैसे कुर्सी और चारपाई विजय हर्ष से नाच रही हैं और फिर एकदम खामोशी छा गई।

सीढ़ियों में श्रीमती हाल लगभग बेहोशी की हालत में श्री हाल की गोद में पड़ी थी। मिली भी उसकी चीख़ सुनकर आ गई थी। वे दोनों उसे उठाकर बड़ी मुश्किल से नीचे ले गए और इस अवसर के लिए कुछ उपयुक्त दवाइयां देकर होश में लाए।

"यह तो भूत है।" श्रीमती हाल ने कहा, "मुझे मालूम है कि यह भूत है। मैंने इसके बारे में अख़बार में पढ़ा है। मेज़ें और कुर्सियां उछलती और नाचती हैं..."

"जेनी, एक बूंद और पी लो। इससे तुम ठीक हो जाओगी।" श्री हाल ने कहा।

"बाहर से ताला लगा दो," श्रीमती हाल बोली, "उसे अब अंदर मत आने दो। मुझे कुछ-कुछ अनुमान तो हो गया था...पर मुझे समझ लेना चाहिए था। यह स्याह ऐनक, पट्टियों बंधा सिर और इतवार को कभी गिरजे़ नहीं जाना और फिर इतनी सारी बोतलें... किसी को भी इतनी बोतलें रखने का अधिकार नहीं है। उसने फर्नीचर में भूत भर दिए हैं... मेरा इतना अच्छा पुराना फर्नीचर! जब मैं नन्ही-सी लड़की थी तो इसी कुर्सी पर मेरी प्यारी मां बैठा करती थीं। किसने सोचा था कि कभी यह मुझे मारने दौड़ेगी..."

"एक बूंद और ले लो जेनी, तुम्हारे होश दुरुस्त नहीं हुए हैं।" हाल ने कहा।

पांच बज गए थे और धूप निकल आई थी। उन्होंने मिली को भेजा कि वह श्री सेंडी वेजर लोहार को जगाकर लिवा लाए।

श्री वेजर सतर्क और अनुभवी व्यक्ति था। उसने इस घटना को बहुत ही गंभीर समझा और चिंतित स्वर में कहा, "यह तो जादू है जादू! ऐसे लोगों के पैरों में तो घोड़ों की नाल लगानी चाहिए।"

वह चिंता ही में डूबा हुआ आया। श्री और श्रीमती हाल चाहते थे कि उनके साथ आगे-आगे तुरंत ऊपर चले, लेकिन उसे कोई जल्दी नहीं मालूम पड़ती थी। वह बरामदे में खड़ा होकर इस संबंध में बात करने लगा, इतने में हक्स्टर का नौकर बाहर आया और तंबाकू की खिड़की के पर्दे गिराने लगा। उसे भी बुलाकर बातचीत में शामिल कर लिया गया। अब श्री हक्स्टर का आना स्वाभाविक ही था, वह भी चंद मिनटों में आ गया। उसने संसदीय सरकार की ऐंग्लो-सैक्सन तर्क बुद्धि का प्रयोग किया। इसलिए बातें तो बहुत हुईं लेकिन किया क्या जाए, इसका निर्णय नहीं हुआ। और वह जाने लगा।

"पहले हमें तथ्यों को जानना है," श्री सेंडी वेजर ने कहा, "हमें इस बात का विश्वास कर लेना चाहिए कि हमारा दरवाज़े को तोड़ डालने का कार्य बिलकुल उचित है। बंद दरवाज़े को तो तोड़ डालना ही चाहिए, लेकिन एक बार तोड़ डालने के बाद किसी भी टूटे हुए दरवाज़े को फिर नहीं तोड़ा जा सकता।"

इतने में सहसा और विचित्र ढंग से ऊपर का दरवाज़ा अपने आप खुल गया। जब वे चकित ऊपर की ओर देख रहे थे, अजनबी अपने कपड़ों में लिपटा और मोटी-मोटी ऐनकों में से और अधिक रीतेपन से झांकता हुआ सीढ़ियां उतरता हुआ

नज़र आया। वह अकड़ता हुआ धीरे-धीरे उन्हें घूरता हुआ सीढ़ियां उतरा, उतरकर इधर-उधर दृष्टि डाली और रास्ता पार करके इधर-उधर देखता हुआ ठहर गया।

"वह देखो," उसने कहा और सबकी आंखें उसकी दस्ताने वाली अंगुली की दिशा में उठ गईं। तहखाने के दरवाज़े पर शोधक रस की बोतल पड़ी थी। तब वह बैठक में चला गया और सबकी ओर विद्रूप भाव से देखते हुए धड़ाक से दरवाज़ा बंद कर लिया।

जब तक दरवाज़ा बंद होने की आख़िरी प्रतिध्वनि भी खत्म नहीं हो गई तब तक किसी के मुंह से एक भी शब्द नहीं निकला। सभी एक-दूसरे को देख रहे थे।

"अगर इसका यही व्यवहार है तो…" श्री वेजर्स ने कहा और अगला हिस्सा बिना कहे ही छोड़ दिया।

"मैं भीतर जाकर इस सिलसिले में बात करता हूं," श्री वेजर्स ने हाल से कहा, "मैं उससे इस व्यवहार का स्पष्टीकरण चाहूंगा।"

श्री हाल को तैयार करने में कुछ समय लगा। आख़िर उसने दस्तक दी, दरवाज़ा खोला और इतना कहा, "क्षमा कीजिएगा…"

"शैतान के पास जाओ," अजनबी ने भयानक स्वर में कहा, "और अपने पीछे दरवाज़ा बंद कर दो।"

और यह संक्षिप्त भेंट समाप्त हो गई।

अजनबी का वास्तविक रूप

अजनबी बैठक में सुबह साढ़े पांच के क़रीब दाखिल हुआ और दोपहर तक वहां रहा। दरवाज़ा बंद था, पर्दे गिरे हुए थे और श्री हाल के झिड़के जाने के बाद किसी को उसके निकट जाने का साहस नहीं हुआ।

इस बीच में उसने कुछ नहीं खाया। तीन मर्तबा उसने घंटी बजाई, तीसरी बार घंटी ज़ोर-ज़ोर से बहुत देर तक बजती रही, लेकिन किसी ने परवाह नहीं की। 'जहन्नुम में जाओ' श्रीमती हाल ने कहा। इस बीच में पादरी के घर चोरी की भी अधूरी सी खबर मिली। उसका इस घटना से संबंध जोड़ लिया गया। हाल वेजर्स को साथ लेकर श्री शकिल फ़ोर्थ मजिस्ट्रेट के पास उसका मशविरा लेने गया। किसी ने ऊपर जाने का साहस नहीं किया। वहां अजनबी क्या करता रहा, यह कुछ मालूम नहीं। कभी-कभी वह तेज़-तेज़ चलने लगता। दो बार झुंझलाने, कोसने, काग़ज़ फाड़ने और बोतलें टूटने की आवाज़ें आईं।

भयभीत लेकिन उत्सुक लोगों की भीड़ बढ़ती गई। श्रीमती हक्स्टर आई, कुछ विनोदप्रिय नौजवान आए और घबराए हुए और घबरा देने वाली पूछताछ करते हुए लोगों में मिल गए। आज त्यौहार का दिन था, इसलिए नौजवानों ने शानदार काले कपड़े, बनी-बनाई जैकटें और चमकदार कागज़ी टाइयां बांध रखी थीं। नौजवान मार्वी हाकेर ने हिम्मत करके सेहन पार किया और पर्दों में से झांककर देखने की कोशिश करने लगा। उसे कुछ दिखाई नहीं दिया, लेकिन उसने कारण सहित बताया कि उसे सबकुछ नज़र आ रहा है। गांव के दूसरे नौजवान भी उसके साथ जा मिले।

सभी 'हिक्टमंडे' के उत्सवों में यह सबसे शानदार दिन था। गांव की सड़क के किनारे एक दर्जन के क़रीब दुकानें लगी थीं, एक बंदूक का निशान लगाने की गैलरी थी और भट्टी के निकट तीन पीले और भूरे रंग के छकड़े खड़े थे। फिर दिलचस्प अजनबी स्त्री और पुरुष एक प्रहसन कर रहे थे। पुरुषों ने नीली ऊनी जैकिटें और स्त्रियों ने सफ़ेद धागे और बड़ी-बड़ी कलंगियों वाले सुंदर हैट पहन रखे थे। 'पर्पलफान' के बुडेयर और मोची जैगर्स ने जो पुरानी साधारण साइकिलें भी बेचते थे, सड़क के किनारे यूनियन जैक और दूसरे राजसी चिह्न फैला रखे थे, जो वास्तव में पहली विक्टोरियन जुबिली के समय के बने थे।

इधर बैठक के कृत्रिम अंधेरे में, जिसमें सूर्य की सिर्फ़ एक क्षीण किरण प्रवेश कर रही थी, अजनबी भूखा, भयानक अपने असुविधाजनक गर्म कपड़ों में लिपटा हुआ अपनी मोटी ऐनक के भीतर कागज़ पर झांक रहा था अथवा अपनी गंदी बोतलों को खनखना रहा था। कभी-कभी वह क्रोध में भरकर खिड़कियों के बाहर खड़े लड़कों को गालियां देता था, जो दिखाई तो नहीं दे रहे थे, लेकिन जिनकी आहट ज़रूर आ रही थी। कोने में आतिशदान के निकट एक दर्जन बोतलें टूटी पड़ी थीं और क्लारीन की दम घोंटने वाली दुर्गंध हवा में व्याप्त थी। जो कुछ सुनाई पड़ा और जो कुछ बाद में कमरे में देखा गया, उससे इतना ही मालूम हुआ है।

दोपहर को लगभग उसने बैठक का दरवाज़ा सहसा खोला और शराबकक्ष के सामने खड़े तीन-चार आदमियों को घूरकर देखने लगा, 'श्रीमती हाल!' वह चिल्लाया। उनमें कोई चुपके से श्रीमती हाल को बुलाने चला गया।

श्रीमती हाल तनिक देर में हांफती हुई आईं। वह क्रोध में थीं। हाल अभी बाहर ही था। उसने इस घटना का विचार कर लिया था। उसके पास छोटी-सी ट्रे में एक बिल था, जो अदा नहीं किया गया था। "अपने बिल के लिए ही तो आप बुला रहे थे न, श्रीमान?" उसने कहा।

"मेरा नाश्ता क्यों नहीं लगाया गया? मेरा खाना तुमने क्यों तैयार नहीं किया? मेरी घंटी का जवाब क्यों नहीं दिया? क्या तुम्हारा ख़्याल है कि मैं बिना खाए ज़िंदा रहता हूं?"

"आपने बिल क्यों अदा नहीं किया?" श्रीमती हाल बोली, "मैं यह जानना चाहती हूं।"

"मैंने तुम्हें तीन दिन पहले बता दिया था कि मैं रुपए आने का इंतज़ार कर रहा हूं।"

"मैंने आपको तीन दिन पहले बता दिया था कि मैं आपके रुपए आने का इंतज़ार नहीं करूंगी। अगर मेरा बिल पांच दिन से अदा न हुआ हो तो आप नाश्ते में देर हो जाने की शिकायत नहीं कर सकते, ठीक है न?"

अजनबी संक्षिप्त लेकिन स्पष्ट रूप से कोसा।

"ना, ना!" शराब कक्ष से आवाज़ आई।

"आपकी बड़ी कृपा होगी अगर आप अपनी गालियां अपने ही पास रखें, श्रीमान्।" श्रीमती हाल ने कहा।

अजनबी, क्रुद्ध और अप्रतिम-सा उसकी ओर देखता रह गया। मदिरा कक्ष में सभी यह महसूस कर रहे थे कि श्रीमती हाल ने बाज़ी मार ली है। अजनबी के अगले शब्दों से भी यह बात सिद्ध हो गई।

"भली औरत, मेरी बता सुनो!" अजनबी बोला।

"मैं भली औरत नहीं हूं।" श्रीमती हाल ने उत्तर दिया।

"तुम्हें बता दिया कि रुपया अभी नहीं आया।"

"रुपया आएगा? वाह!" श्रीमती हाल ने कहा।

"फिर भी मेरी जेब में इस समय..."

"तीन दिन पहले आपने मुझसे कहा था कि आपके पास चांदी के एक 'सावरेन' के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।"

"लेकिन अब मुझे कुछ पैसे मिल गए हैं।"

"लो, लो, लो! मदिरा कक्ष से आवाज़ आई।

"मैं हैरान हूं कि आपको ये कहां से मिले?" श्रीमती हाल ने कहा।

अजनबी का क्रोध भड़क उठा। उसने पांव धरती पर पटका और कहा, "इससे तुम्हें क्या मतलब?"

"मैं हैरान हूं कि तुम्हें पैसे कहां से मिले?" श्रीमती हाल ने और भी दृढ़ता से कहा, "इससे पहले कि मैं अपना बिल लूं, अथवा नाश्ता लाऊं या कोई और ऐसी बात करूं, आपको मुझे एक-दो बातें बतानी होंगी जिन्हें मैं नहीं समझ पाई, कोई और नहीं समझ पाया, लेकिन समझना सभी चाहते हैं। मैं जानता चाहती हूं कि आप ऊपर मेरी कुर्सी से क्या कर रहे थे? और मैं जानना चाहती हूं कि आपका कमरा ख़ाली क्यों था और आप कैसे भीतर आए? फिर जो कोई भी मेहमान इस घर में रहता है, वह दरवाज़े से होकर अंदर आता है। कायदा यही है। आपने ऐसा नहीं किया। इसलिए मैं जानना चाहती हूं कि आप कैसे आए? और मैं जानना चाहती हूं..."

सहसा अजनबी ने अपने दस्ताने वाले हाथों को ऊपर उठाकर भींचा और धरती पर पांव पटक कर कहा, "चुप रहो!" उसके स्वर में असाधारण तीव्रता थी, जिसने श्रीमती हाल को तत्क्षण चुप करा दिया।

"तुम नहीं जानतीं कि मैं क्या हूं और कौन हूं। मैं तुम्हें दिखाता हूं। खुदा की कसम, मैं तुम्हें दिखाता हूं।" उसने कहा और अपनी हथेली चेहरे पर रखी और उसे हटाया। उसके चेहरे के बीच में एक स्याह सुराख था। "यह देखो" उसने एक कदम आगे बढ़ाया और कोई वस्तु श्रीमती हाल की ओर बढ़ाई। श्रीमती हाल ने उसके बदले हुए चेहरे की ओर देखते हुए आप ही आप पकड़ ली। और जब देखा कि यह क्या है, तो उसकी चीख़ निकल गई और वह पीछे को लड़खड़ाई। नाक—वह अजनबी की नाक थी। गुलाबी और चमकती हुई वह खोखले गत्ते के सदृश बजती हुई फ़र्श पर लुढ़कने लगी।

फिर उसने ऐनक उतारी। मदिरा कक्ष में हर एक व्यक्ति ने सांस रोक ली। उसने टोपी उतारी और एक झटके के साथ मूंछें और पट्टियां फाड़ने लगा। एक क्षण के लिए लोगों ने उसे मना किया। सभी आतंकित और आशंकित हो उठे। "हे भगवान्!" किसी ने कहा। तब वे उतर आईं।

अत्यंत भयानक दृश्य था। श्रीमती हाल भयभीत थीं। उनका मुंह खुला था।

वह यह दृश्य देखकर चीख़ उठीं और दरवाज़े की ओर भागीं। वे घाव, विकृति तथा अन्य भयानकताओं के लिए तो तैयार थे—लेकिन कुछ नहीं के लिए! हर एक ने दौड़ना शुरू किया। पट्टियां और नकली बाल कमरे और मदिरा कक्ष में बिखर गए और लोग इनसे बचने के लिए उछलने लगे। सीढ़ियों में से एक के ऊपर एक गिर रहा था। वह आदमी जो सामने खड़ा अस्पष्ट शब्द कह रहा था, अपने कोट के कालरों तक तो एक ठोस, मूर्ति था, लेकिन उसके ऊपर कुछ नहीं था। कुछ भी दिखाई नहीं देता था।

गांव के लोगों ने चीख़ना-चिल्लाना सुना और फिर देखा कि लोग सराय से भागते हुए बाहर आ रहे हैं। उन्होंने श्रीमती हाल को गिरते हुए देखा और टेडी हेन्फ्रे ने टकराने से बचने के लिए उसके ऊपर से छलांग लगाई। फिर मिली की चीख़ें सुनाई दीं। वह शोर सुनकर रसोईघर से निकली थी और सिर-रहित अजनबी के शरीर से जा टकराई थी। फिर चीख़ें सहसा बंद हो गईं।

अब क्या था, सब लोग—खांचेवाला, हंडोले वाला, नानवाई और उसके नौकर, अल्हड़ लड़के-लड़कियां, मर्द-औरतें, बूढ़े-बच्चे—सब सराय की ओर दौड़ने लगे। थोड़ी ही देर में चालीस-पैंतालीस की भीड़ जमा हो गई, जो प्रतिक्षण बढ़ रही थी। लोग सराय के सामने खड़े चीख़-चिल्ला रहे थे, पूछ रहे थे कि क्या हुआ? क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति चीख़ने-चिल्लाने और पूछने के लिए उत्सुक था, इसलिए पल्ले कुछ भी नहीं पड़ रहा था। श्रीमती हाल बेहोश पड़ी थी, कुछ लोगों ने उसे उठाया। घबराहट थी और कोलाहल था और अगर कोई आंखों देखी बात भी बताए, उस पर विश्वास नहीं किया जाता था। "ओह भूत!" "तब वह क्या कर रहा है?" "उसने किसी को मारा तो नहीं?" "मेरा ख़्याल है कि वह चाकू लेकर इसकी ओर दौड़ा।" "नहीं, मैं बताता हूं। मुझे बात करने का ढंग तो नहीं आता, लेकिन उस आदमी के सिर नहीं है।" "बकवास! यह कोई जादू का खेल है।" और जितने मुंह उतनी बातें।

हर एक खुले हुए दरवाज़े में से देखना चाहता था। इस संघर्ष में जो अधिक तेज़ थे, उनका सराय के निकट एक जत्था-सा बन गया था। वह एक क्षण के लिए रुका। मैंने मिली की चीख़ सुनी और वह मुड़ा। लड़की उठकर चली, वह भी उसके पीछे चला। दस सेकिंड भी नहीं लगे। वह एक रोटी और चाकू लिए लौट आया। ज़रा देर खड़ा रहा, मानो घूर रहा है। एक मिनट इधर-उधर देखकर उस दरवाज़े में घुस गया। "मैं कहता हूं उसके सिर है ही नहीं। तुम जरा चूक गए…।"

पीछे हलचल हुई और बोलने वाले ने दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़ते हुए छोटे-से जुलूस के लिए रास्ता छोड़ दिया। आगे-आगे हाल था, उसका चेहरा सुर्ख़ था, फिर गांव का सिपाही बोवी जैफ़र्स था और सबसे पीछे थकान से चूर श्री वेजर्स। उनके पास गिरफ्तारी का वारंट था।

लोगों ने चिल्लाकर ताज़ी घटनाओं की विरोधी सूचना दी।

"सिर हो, न हो, मेरे पास वारंट है और मैं उसे गिरफ्तार करूंगा।" सिपाही जैफ़र्स ने कहा।

श्री हाल सीढ़ियां चढ़कर सीधे बैठक के दरवाज़े के पास पहुंचा, जो खुला पड़ा था। "सिपाही, अपना काम करो।" उसने कहा।

जैफ़र्स भीतर गया, उसके पीछे हाल और फिर वेजर्स। उन्होंने मद्धिम प्रकाश में धड़ को अपनी ओर सीना किए देखा। उसके एक हाथ में रोटी का खाया हुआ एक टुकड़ा और दूसरे में पनीर की फांक थी।

"यही है।" हाल ने कहा।

"क्या बकवास है?" कालरों के ऊपर से क्रोध भरी आवाज़ आई।

"तुम्हारी गिरफ्तारी का वारंट है," जैफ़र्स ने कहा, "सिर हो, न हो, वारंट में शरीर लिखा है और फिर ड्यूटी ड्यूटी है।"

"दूर रहो।" धड़ ने एक कदम पीछे हटकर कहा।

उसने रोटी और पनीर फेंक दिया। श्री हाल ने दौड़कर मेज़ पर पड़ा चाकू उठाया ताकि वह नष्ट न हो जाए। उसने अपना बायां दस्ताना उतारा और जैफ़र्स के मुंह पर दे मारा। जैफ़र्स ने लपक कर उसकी बिना हाथ की कलाई पकड़ ली और उसके अदृश्य गले को जा पकड़ा। उसकी जांघ में ज़ोर की ठोकर लगी। वह चिल्लाया लेकिन गला नहीं छोड़ा। हाल ने चाकू वेजर्स को थमा दिया ताकि वह अजनबी को बाहर जाने से रोके और वह खुद जैफ़र्स की सहायता को बढ़ा। जैफ़र्स का बुरा हाल था। अजनबी ने भी उसका गला पकड़ लिया था और उसे ठोकरें लगा रहा था। बीच में एक कुर्सी पड़ी थी, और वे दोनों गिरे तो वह भी एक ओर को लुढ़क गई।

"पांव पकड़ो।" जैफ़र्स ने मुश्किल से कहा।

इस आदेश के अनुसार श्री हाल ने ज्योंही पांव पकड़ने का प्रयत्न किया, अजनबी ने ज़ोर की ठोकर लगाई और उसे एक ओर लुढ़का दिया। मिस्टर वेजर्स ने जब देखा कि अजनबी ने जैफ़र्स को भी गिरा लिया है तो वह चाकू हाथ में लिए दरवाज़े की ओर भागा और कानून की व्यवस्था की मदद को आते हुए सिडर ब्रिज के गाड़ीवान और श्री हक्स्टर से टकरा गया। उसी समय तीन-चार बोतलें खुलीं, जिन्होंने कमरे की हवा में तेजाब भर दिया।

"मैं आत्म-समर्पण करता हूं।" जैफ़र्स ने कहा, यद्यपि वह जैफ़र्स पर हावी हो गया था और दूसरे ही क्षण सामने खड़ा हांफ रहा था। अजीब शक्ल थी, जिसके न सिर था और न हाथ, क्योंकि उसने दायां और बायां दोनों दस्ताने उतार दिए थे। "इससे कुछ लाभ नहीं।" उसने जैसे सांस लेने की कोशिश करते हुए कहा।

संसार की विचित्रतम बात यह थी कि वह शून्य में से आ रही जान पड़ती थी, लेकिन ससैक्स इलाके के किसान भी शायद दुनिया में सबसे अधिक यथार्थवादी हैं। जैफ़र्स ने उठकर हथकड़ी संभाली। तब वह इधर-उधर बौखलाया-सा देखने लगा।

"मैं कहता हूं।" जैफ़र्स ने अब इस सारे मामले की असंगति को महसूस करते हुए कहा, "मेरा ख़्याल है, हथकड़ी तो इस्तेमाल ही नहीं हो सकती।"

अजनबी ने अपना हाथ बास्कट के बटनों पर ऊपर से नीचे फिराया और जैसे कोई चमत्कार हुआ हो, उसकी ख़ाली आस्तीन के जिन बटनों की ओर संकेत किया, वे खुल गए। तब उसने अपनी जांघ के बारे में कुछ कहा और वह नीचे झुका। वह अपनी जुराबों और जूतों को टटोलता मालूम होता था।

"हैं!" सहसा हक्स्टर ने कहा, "आदमी तो यह है ही नहीं। ये तो ख़ाली कपड़े हैं। देखो! तुम इसके कालरों के नीचे कपड़ों के अंदर झांक सकते हो। मैं अपना बाज़ू डाल सकता हूं..."

उसने अपना हाथ फैलाया। ऐसा लगा कि हाथ हवा में किसी चीज़ से टकरा गया है। उसने चौंककर हाथ पीछे हटा लिया। "मैं चाहता हूं कि तुम अपनी अंगुलियां मेरी आंखों से दूर रखो।" एक कर्कश ध्वनि सुनाई दी। "यह ठीक है कि मेरा शरीर यहां है, सिर, हाथ, टांगें और बाक़ी सारे अंग, लेकिन मैं अदृश्य हूं। आश्चर्य की बात अवश्य है, पर मैं हूं। इसमें तो कोई तुक नहीं कि मैं इपिंग के हर मूर्ख देहाती को अपने शरीर के टुकड़े-टुकड़े करने दूं, या है?"

अजनबी का सूट जिसके तमाम बटन खुले थे, दिखाई न देने वाले सहारे पर लटकता हुआ खड़ा था, बाज़ू फैले हुए थे।

कुछ और लोग भी अब तक कमरे में घुस आए थे और वहां अच्छी-खासी भीड़ हो गई थी। "अदृश्य! खूब! क्या ऐसी बातें भी कहीं होती हैं?" हक्स्टर ने अजनबी की आवाज़ पर ध्यान न देते हुए कहा।

"यह बात विचित्र तो हो सकती है, लेकिन अपराध नहीं। पुलिस के सिपाही ने मुझ पर इस प्रकार आक्रमण क्यों किया?"

"यह अलग बात है।" जैफ़र्स ने कहा, "यह ठीक है कि इस नई जानकारी के कारण तुम पर शक करना कठिन है। लेकिन मेरे पास गिरफ्तारी के वारंट हैं। मैं अदृश्य के पीछे नहीं, चोरी के पीछे हूं। एक घर में सेंध लगाकर रुपया चुराया गया है।"

"फिर?"

"और परिस्थितियों से मालूम पड़ता है कि..."

"बकवास, खुराफात!" अदृश्य पुरुष ने कहा।

"बकवास भी हो सकती है। लेकिन मुझे तो आदेश मिला है..."

"अच्छा।" अजनबी ने कहा, "मैं चलूंगा, ज़रूर चलूंगा, लेकिन हथकड़ियों में नहीं।"

"यह तो कायदे की बात है।" जैफ़र्स ने कहा।

"कोई हथकड़ी नहीं।" अजनबी ने दृढ़ता से कहा।

"मुझे क्षमा कीजिए।" जैफ़र्स ने कहा।

एकाएक आकृति बैठ गई। और इससे पहले कि कोई महसूस करे कि क्या हो रहा है, जूते, जुराबें और पतलून ठोकर मारकर मेज़ के नीचे पहुंचा दी गईं। तब वह दोबारा उठा और अपना कोट उछाल दिया।

"अरे, उसे रोको।" सहसा जैफ़र्स ने कहा क्योंकि उसने महसूस कर लिया था कि क्या हो रहा है। उसने बास्केट पकड़ ली, और संघर्ष किया तो उसमें से कमीज़ निकल आई और वह खाली जैफ़र्स के हाथ में हर गई। "उसे रोको," जैफ़र्स ने ज़ोर से कहा, "अगर उसने कपड़े उतार डाले तो···"

"उसे रोको!" हर एक ने कहा और सब एक साथ हुए सफ़ेद कमीज़ की ओर लपके, क्योंकि अजनबी की अब सिर्फ़ कमीज़ ही दिखाई दे रही थी।

ज्योंही हाल ने अपना हाथ आगे बढ़ाया, कमीज़ के आस्तीन ने उसके चेहरे पर ज़ोरदार घूंसा रसीद किया और वह लड़खड़ाकर गिरजाघर के पादरी मिस्टर टुथसाम से जा टकराया। दूसरे ही क्षण कमीज़ यों हवा में लहराई और बांहों में आ गई जैसे कोई उसे उतारने की कोशिश कर रहा हो। जैफ़र्स ने उछलकर उसे पकड़ लिया और उसे उतारने में ही मदद की। हवा में से उसके मुंह पर ऐसा घूंसा पड़ा कि उसने घबराकर अपना डंडा निकाला जो टेडी हेन्फ्रे की खोपड़ी में लगा।

"देखो, देखो!" हर एक कह रहा था और अंधाधुंध हाथ-पांव मार रहा था, लेकिन घूंसे किसी पर भी पड़ नहीं रहे थे। "उसे रोको! दरवाज़ा बंद कर दो। उसे खुला मत छोड़ो। मैंने कुछ पा लिया है। वह यहां है।" और फिर सबने कोलाहल मचा दिया। लग रहा था, जैसे सबको एक साथ पीटा जा रहा हो। सैंडी वेजर्स की नाक पर भयानक घूंसा पड़ा, उसने झट दरवाज़ा खोल दिया और रास्ता छोड़कर अलग खड़ा हो गया। दूसरों ने भी वही किया और दरवाज़े पर यकायक काफ़ी भीड़भाड़ हो गई। चोटें पड़ती रहीं। फिप्स का अगला दांत टूट गया और हेन्फ्रे की कनपटी में चोट लगी। जैफ़र्स का जबड़ा टूटा। जब वह घूमा तो किसी चीज़ से टकराया जो उसके और हक्स्टर के बीच में थी और दोनों को पास नहीं आने दे रही थी। उसने महसूस किया कि यह किसी व्यक्ति की चौड़ी-चकली छाती है। इतने में गिरती-पड़ती उत्तेजित भीड़ हाल में पहुंच गई।

"मैं उसे पा गया हूं।" लाल-पीले चेहरे और फूली हुई नसों के साथ अपने अदृश्य शत्रु से कुश्ती लड़ते हुए जैफ़र्स चिल्लाया।

जब यह असाधारण कुश्ती लड़ने वाले गुत्थमगुत्था करते दरवाज़े की ओर बढ़े तो लोग दाएं-बाएं लड़खड़ाने और सराय की छः सीढ़ियों पर से गिरने लगे। जैफ़र्स यों चिल्लाया जैसे उसका गला घोंटा जा रहा हो, लेकिन अब भी वह कसकर पकड़े हुए घुटने चला रहा था और अपने अदृश्य पुरुष पर उसकी गिरफ्त तभी ढीली हुई जब वह सिर के बल बजरी पर जा गिरा।

लोग उत्तेजित स्वर में चिल्लाए, "उसे पकड़ो," "अदृश्य" आदि आदि। एक नौजवान जो गांव के लिए अजनबी था, लपककर आगे बढ़ा, उसने कुछ पकड़ा जो फिर उसके हाथ से छूट गया और वह खुद जैफ़र्स के ऊपर जा गिरा। परे सड़क पर एक औरत चिल्लाई जैसे उसे किसी ने धक्का दिया हो, और फिर एक कुत्ता 'चायं चायं' करता हुआ हक्स्टर के अहाते में जा घुसा, उसे भी जैसे किसी ने ठोकर लगाई थी। यों अजनबी साफ़ निकल गया। कुछ देर लोग हैरान-परेशान एक-दूसरे की ओर देखते रहे, फिर उन पर भय-सा छा गया और वे यों गांव में से भागे जैसे हवा का झोंका सूखे पत्तों को बिखेर दे। लेकिन जैफ़र्स स्थिर और अचल सीढ़ियों के पास चित्त लेटा रहा।

मार्ग में

आठवां परिच्छेद बहुत ही संक्षिप्त है। इसमें बताया गया है कि ज़िले का एकमात्र अवैतनिक प्रकृत विज्ञानवेत्ता खुले मैदान में लेटा हुआ था और उसका ख़्याल था कि मीलों उसके आस-पास कोई नहीं है। उसने लगभग ऊंघते हुए अपने निकट ही किसी आदमी के खांसने और छींकने की आवाज़ सुनी और फिर कोई अपने आप को कोसने लगा। देखा तो कुछ नज़र नहीं आया। लेकिन आवाज़ बराबर आ रही थी। गालियों की विविधता से पता चलता था कि कोई पढ़ा-लिखा व्यक्ति है। आवाज़ तेज़ होकर पराकाष्ठा को पहुंची, फिर धीमी पड़नी शुरू हुई और दूर जाकर ख़त्म हो गई। उसे लगा कि यह आवाज़ ऐडरडीन की ओर जा रही है। कभी-कभी छींक के समय आवाज़ तेज़ होकर फिर पहले जैसी हो जाती थी। गिबंस ने सुबह की घटनाओं के बारे में कुछ नहीं सुना था, लेकिन यह दृश्य ही इतना चमत्कारपूर्ण और आंदोलित कर देने वाला था कि उसकी सारी दार्शनिक शांति लुप्त हो गई। वह जल्दी से उठा और पहाड़ की ढलान पर गांव की ओर सिर पर पांव रखकर भागा।

श्री टामस मार्वेल

श्री टामस ठिगने कद और भारी भरकम शरीर का आदमी था। उसकी नाक गुलगुले की तरह मोटी और गोल थी, चौड़ा मुंह बटुए की भांति खुलता और बंद होता था और लंबी दाढ़ी इधर-उधर हिलती रहती थी। वह समूरवाला रेशम का हैट पहनता था, और अपने वस्त्रों के विशेष स्थानों पर बटनों की जगह तागे या जूते के फीते बांधे रहता था। इस प्रकार वह देखने पर अनिवार्यतः अविवाहित मालूम पड़ता था।

वह इपिंग से मील-डेढ़ मील के फ़ासले पर एडरडीन को जाने वाली सड़क के किनारे एक खाई पर पैर डाले बैठा था। उसके पैर फटी जुराबों के अतिरिक्त नंगे थे, जिनकी बड़ी-बड़ी अंगुलियां चौड़ी थीं और शिकारी कुत्ते के कानों की तरह ऊपर को उठी हुई थीं। बड़े आराम से वह हर एक काम करने का आदी था—बैठा तस्मेदार बूटों की बात सोच रहा था। ज़माने से इतने मज़बूत जूते उसने नहीं देखे थे, लेकिन उसके लिए तनिक बड़े थे। उसके पास जो जूते थे वे खुश्क मौसम में तो ठीक थे पर बरसात में काम नहीं देते थे। टामस बड़े बूटों से नफ़रत करता था और बरसात से भी नफ़रत करता था। वह अभी तक समुचित विचार नहीं कर सका था कि वह किससे अधिक नफ़रत करता है। यह एक खुशगवार दिन था और उसके पास करने को इससे अच्छा कोई काम नहीं था। उसने अपने चारों बूट सामने घास पर सजा दिए थे और उन्हें देख रहा था। घास के बीच उन्हें देखते-देखते उसे ख़्याल आया कि ये दोनों ही जोड़े अत्यंत भद्दे दीखते हैं। वह अपने पीछे एक आवाज़ सुनकर बिलकुल नहीं चौंका।

"कुछ भी हो, वे बूट तो हैं।" आवाज़ ने कहा।

"वे ख़ैरात के बूट हैं।" श्री टामस मार्वेल ने सिर को एक ओर लुढ़काए और बूटों को अरुचि से देखते हुए कहा, "मैं नहीं जानता कि सारे संसार में कौन-सा जूतों का जोड़ा सबसे ज़्यादा बदसूरत है।"

"हुं ह!" आवाज़ आई।

"दरअसल मैंने इनसे भी बुरे जूते पहने हैं, मैंने बिलकुल भी नहीं पहने। लेकिन

इतने भद्दे कभी नहीं। मैं अक्सर उन्हें लिए-लिए घूमता फिरा हूं, कई-कई दिनों तक, क्योंकि मैं उनसे ऊब उठा था। वे मज़बूत थे, इसमें शक नहीं लेकिन यात्रा करने वाले व्यक्ति को तो अपने जूतों का बड़ा ख़्याल रखना पड़ता है। अगर आप मेरी बात का विश्वास करें तो मैं बताऊं कि इस देश में मैंने जूतों के अलावा कभी कुछ पैदा नहीं किया। देखो न उन्हें! यह काउंटी वैसे तो जूतों के लिए बड़ी अच्छी है लेकिन इसमें मेरे सौभाग्य का भी बड़ा महत्त्व है। इस काउंटी में दस साल से भी ऊपर समय से मैं अपने जूते कमा रहा हूं और उस पर यहां के आदमी मेरे साथ इस तरह का व्यवहार करते हैं।"

"यह वहशी देश है और यहां सुअर बसते हैं।" आवाज़ ने कहा।

"क्या वाक़ई?" टामस बोला, "और ये बूट?"

"ये तो आदमियों से भी बढ़कर हैं।"

उसने गर्दन दाईं ओर को घुमाकर पीछे देखा ताकि बात करने वाले के बूटों की अपने बूटों से या बोलने वाले की स्वयं से तुलना करे। लेकिन!⋯वहां न टांगें थीं, न बूट। उसने बाईं ओर गर्दन घुमाई तो उधर भी न टांगें थीं और न बूट। वह आश्चर्य से प्रसन्न हो उठा।

"तुम कहां हो?" टामस मार्वेल ने चौपायों की तरह झुककर पीछे देखते हुए कहा। सामने मैदान था और परे चरागाह की घास लहरा रही थी।

"क्या मैं नशे में हूं?" टामस बोला, "क्या मैं सपना देख रहा हूं? क्या मैं अपने आप से बातें कर रहा हूं। यह सब क्या⋯"

"घबराओ नहीं।" आवाज़ आई।

"छिप-छिप कर मुझसे बातें मत करो।" टामस ने सीधे खड़े होकर कहा, "तुम कहां हो? घबराऊंगा मैं?"

"घबराओ नहीं।" फिर आवाज़ आई।

"तुम⋯ तुम मूर्ख आदमी! तुम खुद एक मिनट में घबरा जाओगे।" टामस ने कहा, "तुम कहां हो? मुझे एक नज़र देखने दो।"

"क्या तुम धरती में दफ़न हो?" टामस ने तनिक रुककर पूछा।

कोई उत्तर नहीं मिला। श्री टामस नंगे पांव और हैरान खड़ा था और उसने जैकेट लगभग उतार दी थी।

"पीहू!" दूर से पक्षी बोला।

"पीहू, सचमुच!" टामस मार्वेल ने कहा, "मज़ाक का यह कोई समय नहीं।" पूर्व, उत्तर, पश्चिम, दक्षिण—चारों ओर सुनसान मैदान था। सड़क थी, उसके गड्ढे थे और सीमाएं निश्चित करने वाले सफ़ेद खूंटे थे। वह उत्तर से दक्षिण सुनसान और वीरान फैलती चली गई थी और उन पर नीला आकाश भी 'पीहू' के अलावा सूना ही था।

"मेरी मदद करो," टामस के जैकेट को कंधों पर पहनते हुए कहा, "यह नशे का प्रभाव है? मुझे इतना तो मालूम ही होना चाहिए था।"

"यह नशा नहीं," आवाज़ ने कहा, "तुम अपने होश दुरुस्त रखो।"

"ओह!" श्री मार्वेल ने कहा और उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया। "यह नशा है।" उसके होठों ने बिना आवाज़ दोहराया। वह अपनी गर्दन घुमाकर इधर-उधर देखता रहा। "मैं क़सम खा सकता हूं कि मैंने आवाज़ सुनी थी।"

"तुमने वाक़ई सुनी थी।"

"लो, फिर सुनाई दी।" श्री मार्वेल ने आंखें बंद करके कहा और जैसे बड़ी पीड़ा के हाथों से अपनी भौहों को दबाया।

किसी ने उसे सहसा कसकर पकड़ लिया और इतने ज़ोर से हिलाया कि वह पहले से भी अधिक बदहवास हो गया। "मूर्ख मत बनो।" आवाज़ ने कहा।

"ज़रूर मेरा दिमाग ख़राब हो गया है। जूतों के बारे में सोचता रहा हूं न देर तक। बुरी बात है यह। ज़रूर मेरा दिमाग़ ख़राब हो गया है। या फिर भूत है।" श्री टामस ने कहा।

"मैं दोनों में से कोई भी नहीं," आवाज़ आई, "सुनो।"

"दिमाग़ ख़राब।" श्री मार्वेल ने कहा।

"एक मिनट।" आवाज़ ने आत्मसंयम से कंपित स्वर में कहा।

"यह क्या?" टामस को ऐसे महसूस हुआ जैसे उसकी छाती में किसी ने अंगुली से खोदा हो।

"क्या तुम समझते हो कि मैं कल्पनामात्र हूं।"

"और तुम क्या हो?" श्री टामस ने अपनी गर्दन सहलाते हुए कहा।

"बहुत अच्छा! अब मैं तुम पर कंकड़ फेंकना शुरू करता हूं ताकि तुम अपनी राय बदलो।" आवाज़ ने कहा।

"लेकिन तुम कहां हो?"

आवाज़ ने कोई उत्तर नहीं दिया। हवा में से सनसनाता हुआ एक कंकड़ आया और टामस मार्वेल के कंधे को लगभग स्पर्श करता हुआ गुज़र गया। मार्वेल ने पलटकर देखा कि एक और पत्थर हवा में उठा, काफ़ी ऊपर जाकर एक क्षण तक लटकता रहा और फिर एक दायरा-सा बनाकर धम से उसकी पांव की अंगुलियों के पास आ गिरा। वह आश्चर्य के मारे हिल भी नहीं सका। कंकड़ फिर आया और पैर के अंगूठे से टकराकर खंदक में जा गिरा। टामस मार्वेल एक फुट ऊंचा उछला और ज़ोर से चिल्लाया। तब वह दौड़ने लगा, किसी अदृश्य वस्तु से ठोकर खाकर गिरा और वहीं बैठ गया।

"अब बताओ क्या मैं कल्पना मात्र हूं?" और उसी समय एक तीसरा कंकड़

ज़मीन से उठकर गोला-सा बनता हुआ ऊपर गया और मार्वेल के ऊपर स्थिर हो गया।

टामस मार्वेल उत्तर के तौर पर उठ खड़ा हुआ, लेकिन तत्क्षण उसे फिर लुढ़का दिया गया। वह एक क्षण तक शांत लेटा रहा।

"अगर तुम भागने की चेष्टा करोगे तो मैं पत्थर तुम्हारे सिर पर दे मारूंगा।" आवाज़ ने कहा।

"यह ख़ूब रही।" टामस ने कहा। वह धरती पर बैठा पांव की जख़्मी अंगुली को दबा रहा था और तीसरे पत्थर को हवा में लहराते आते देख रहा था। "कुछ समझ में नहीं आता। पत्थर अपने आप उड़ रहे हैं। पत्थर बोल रहे हैं। भगवान के लिए नीचे गिरो। मैं हार गया।"

तीसरा कंकड़ नीचे गिर पड़ा।

"बहुत सीधी बात है," आवाज़ ने कहा, "मैं एक अदृश्य पुरुष हूं।"

"मुझे समझाओ, मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता," टामस ने पीड़ा से कराहते हुए कहा, "तुम कहीं छिपे हुए हो, कैसे छिपे हो—मैं नहीं समझ पाता।"

"और कुछ नहीं," आवाज़ ने कहा, "मैं अदृश्य हूं। बस, तुम्हें इतना ही समझ लेना काफ़ी है।"

"यह तो नज़र ही आ रहा है कि तुम अदृश्य हो। तुम्हें इतना अधीर होने की क्या ज़रूरत है मिस्टर? तो अब यह बताओ कि तुमने अपने आपको कैसे छिपा रखा है?"

"मैं अदृश्य हूं। यही मुख्य बात है। और जो बात मैं तुम्हें समझाना चाहता हूं वह यह है..."

"लेकिन, तुम हो कहां?" टामस मार्वेल ने टोका।

"यहां—तुमसे छः गज़ के फ़ासले पर, तुम्हारे सामने।"

"ओह, सच बताओ मैं अंधा नहीं हूं। फिर तुम कहोगे कि तुम हवा के सदृश सूक्ष्म हो और मैं इतना मूर्ख नहीं हूं..."

"हां, मैं सूक्ष्म हवा हूं। तुम मेरे आर-पार देख रहे हो।"

"क्या तुममें कुछ भी स्थूलता नहीं है?"

"मैं एक इंसान हूं, ठोस इंसान, जिसे भोजन, पानी और कपड़े की आवश्यकता है। लेकिन मैं अदृश्य हूं। समझे अदृश्य, बिलकुल सीधी बात। अदृश्य।"

"असली मनुष्य?"

"हां, असली।"

"अगर तुम असली मनुष्य हो तो मुझे अपना हाथ दो।" टामस मार्वेल ने कहा, "तब मैं तुम्हें अपने पास कुछ महसूस कर पाऊंगा।"

"हे भगवान! यकायक हाथ पकड़कर तुमने मुझे कैसा चौंका दिया!" मार्वेल ने कहा।

उसने अपनी कलाई पर एक हाथ महसूस किया। उसने इसे अपनी अंगुलियों से स्पर्श किया और स्पर्श करते हुए ऊपर बांह तक चला गया, चौड़ी-चकली छाती को थपथपाया और फिर दाढ़ीवाला चेहरा! टामस मार्वेल का चेहरा आश्चर्य से भर उठा।

"मैं हार गया भाई! बहुत ही विचित्र बात है। मुझे तुम्हारे शरीर के आर-पार आधा मील दूर तक ख़रगोश स्पष्ट दिखाई दे रहा है। जबकि तुम···"

उसने बड़ी उत्सुकता और ध्यान से देखा। "तुम रोटी और पनीर खाते रहे हो क्या?" उसने अदृश्य बांह को हाथ में थामे हुए कहा।

"ठीक कहते हो। ये चीज़ें अभी तक पच नहीं पाईं।"

"ओह!" मार्वेल ने कहा, "तुम एक प्रकार के भूत हो।"

"हां, जितना अच्छा तुम सोचते हो उतना अच्छा लगता नहीं है।"

"मेरी छोटी समझ के लिए तो काफ़ी आश्चर्य की बात है।" मार्वेल ने कहा, "तुमने अपने आपको अदृश्य कैसे बनाया? ऐसा कैसे किया जा सकता है?"

"यह बहुत लंबी कहानी है। और इसके अलावा···"

"लेकिन सच बात है कि मैं तो इससे बिलकुल ठगा-सा गया हूं।" मार्वेल बोला।

"इस समय मुझे यही कहना है कि मुझे सहायता की आवश्यकता है। मैं नंगा, भूखा, गुस्से से पागल इधर-उधर घूम रहा था। जी चाहता था कि किसी की हत्या कर डालूं। सहसा मैंने तुम्हें देखा···"

"हे भगवान्!" मार्वेल चिल्लाया।

"मैं तुम्हारे पीछे आया, हिचकिचाया और आगे निकल गया।"

मार्वेल का चेहरा उसके मनोभाव व्यक्त कर रहा था।

"तब मैं ठहर गया और मैंने सोचा कि एक मेरी ही तरह समाज द्वारा बहिष्कृत व्यक्ति है। इसलिए मैं लौटा और तुम्हारे पास चला आया सिर्फ़ तुम्हारे और···"

"हे भगवान्!" मार्वेल ने कहा, "मेरा तो सिर चकरा रहा है। क्या मैं पूछ सकता हूं कि मुझे क्या करना होगा? तुम्हें किस प्रकार की सहायता चाहिए?"

"मुझे कपड़े चाहिए, रहने को स्थान चाहिए और फिर दूसरी चीज़ें। इन्हें पाने में मैं तुम्हारी सहायता चाहता हूं। अगर तुमने सहायता नहीं की तो··· लेकिन तुम्हें करनी होगी। तुम करोगे।"

"देखो, मैं तो पहले ही अधमरा हो रहा हूं। मुझे अब और चकित मत करना। मुझे छोड़ दो। कुछ दम तो लेने दो। तुमने मेरे पांव की अंगुली लगभग तोड़ दी है। यह तुम्हारी कितनी ज़्यादती है। मैदान खाली है, आकाश खाली है। प्रकृति के

वक्षस्थल के अतिरिक्त मीलों तक कुछ दिखाई नहीं देता और तब एक आवाज़ आती है। बिलकुल आकाश से! और पत्थर! और घूंसा! हे भगवान!"

"अपने होश ठीक करो क्योंकि तुम्हें वह काम करना होगा, जिसके लिए मैंने तुम्हें चुना है।" आवाज़ ने कहा।

"टामस मार्वेल के गाल फूल गए और आंखें गोल हो गईं।"

"मैंने तुम्हें चुना है।" आवाज़ आई, "वहां कुछ मूर्खों के अतिरिक्त सिर्फ़ तुम्हीं एक ऐसे व्यक्ति हो जो यह जानते हो कि दुनिया में कोई अदृश्य आदमी भी है। तुम्हें मेरा सहायक बनना है। मेरी मदद करो, मैं तुम्हारे लिए बड़े-बड़े काम करूंगा। एक अदृश्य व्यक्ति शक्तिशाली व्यक्ति है।" वह रुक गया। उसे ज़ोर की छींक आई। "लेकिन अगर तुमने मेरे साथ छल किया, मेरे आदेश के अनुसार काम नहीं किया..."

उसने बात अधूरी छोड़ दी और मार्वेल के कंधे को थपथपाया।

टामस मार्वेल उसके स्पर्श मात्र से घबराकर चिल्ला कर बोला, "मैं तुम्हारे साथ कोई छल नहीं करूंगा। तुम यह विचार ही अपने मन में न लाओ। तुम जो कहोगे वही होगा। मैं तुम्हारे आदेश का पालन करूंगा। हे भगवान्! जो कुछ तुम चाहो वही मैं करूंगा।" वह अंगुलियों की दिशा से दूर हट गया।

मार्वेल का इपिंग जाना

घबराहट जब कम हुई तो इपिंग के लोग इस घटना पर बहस करने लगे। अविश्वास ने सहसा सिर उठाया—निर्बल अविश्वास, जो अपनी पृष्ठभूमि से अनभिज्ञ था, लेकिन यह था अविश्वास। अदृश्य पुरुष में विश्वास न करना सहज है। जिन्होंने उसे वाक़ई हवा में लुप्त होते देखा था अथवा उसके बाहुबल की बानगी चखी थी वे अंगुलियों पर गिने जा सकते थे। इन लोगों में से श्री वेजर्स गुम था, वह अपने घर में बंद होकर बैठा था और जैफ़र्स सराय की बैठक में बेहोश पड़ा था। महान और विचित्र विचारों का स्त्री-पुरुषों पर कम प्रभाव होता है, वे छोटी-छोटी बातों में ही अधिक उलझे रहते हैं। इपिंग झंडियों से सजा हुआ था और लोगों ने चमकदार वस्त्र पहन रखे थे। महीनों से त्यौहार का इंतज़ार हो रहा था। दोपहर के बाद वे लोग भी जिनका अदृश्यता में विश्वास था, यह सोचकर कि वह अब चला गया है, रंगरेलियों में खो गए और अविश्वासियों के लिए तो वह पहले ही परिहास मात्र था। लेकिन अब विश्वास करने वाले और न करने वाले दोनों ही असाधारण प्रसन्न मुद्रा में एक-दूसरे से मिल रहे थे।

हेसमैन की चरागाह में एक सुंदर शामियाना लगा था, जिसमें श्रीमती बंटिंग और दूसरी स्त्रियां चाय तैयार कर रही थीं जब कि बाहर पादरी के सहायक, श्रीमती कस और सैकवट की शोरपूर्ण देखभाल में बच्चे दौड़ लगा रहे थे और खेल दिखा रहे थे। निस्संदेह हवा में कुछ बेचैनी अवश्य थी, लेकिन जो कुछ भय का अनुभव हुआ था लोग उसे अधिकांश रूप से छिपाए रखने में समर्थ थे। चरागाह में एक चर्खी पर एक रस्सा लटक रहा था, जिसके दूसरे सिरे पर भारी बोरी बंधी थी । इसे पकड़कर आदमी बड़े वेग से दूसरी ओर चला जाता था। नौजवान इसमें झूलकर इतने ही प्रसन्न थे जितने बच्चे हिंडोले में झूलकर। लकड़ी के घूमने वाले घोड़े भी थे। उनको घुमाने वाला इंजन हवा को तेल की दुर्गंध से और चरचर के संगीत से भर रहा था। क्लब के सदस्य जो सुबह गिरजे गए थे गुलाबी और हरे बैज लगाए हुए थे और जो अधिक विनोदप्रिय थे, वे अपने हैटों पर बढ़िया रंगदार रिबन लगाए हुए थे। बूढ़ा फ्लैचर जिसका उत्सव मनाने का विचार अलग ही था, दो कुर्सियों पर एक तख़्ता रखे अपने मकान के सामने वाले कमरे की छत पर सफ़ेदी कर रहा था।

चार बजे के क़रीब चरागाहों की ओर से एक अजनबी गांव में आया। वह ठिगने क़द का मज़बूत आदमी था। उसने असाधारण रूप से ऊंचा और भद्दा हैट पहन रखा था। और उसकी सांस उखड़ी हुई थी। उसके गाल फूले थे और उसकी चाल में उदासीनता थी। वह गिरज़े के पास से घूमकर 'कोच एंड हार्सेज़' की ओर चला। दूसरे लोगों के अलावा बूढ़े फ्लैचर ने भी उसे जाते हुए देखा और उसकी विचित्र उत्तेजना से इतना प्रभावित हुआ कि उसे देखते-देखते उसने सफ़ेदी की काफ़ी मात्रा ब्रश से अपने कोट की आस्तीन में बह जाने दी।

नानबाई का ख़्याल था कि अजनबी अपने आपसे बातें कर रहा था और श्री हक्स्टर ने भी इस बात का समर्थन किया। वह 'कोच एंड हार्सेज़' की सीढ़ियों के पास ठहर गया। श्री हक्स्टर का कहना है कि भीतर जाने से पहले उसे तीव्र अंतरसंघर्ष का मुकाबला करना पड़ा। आख़िर वह सीढ़ियां चढ़ गया और श्री हक्स्टर के कथनानुसार उसने बाईं ओर घूमकर बैठक का दरवाज़ा खोला। श्री हक्स्टर ने कमरे से और शराबकक्ष से आवाज़ें सुनीं, लोग अजनबी को उसकी ग़लती बता रहे थे।

"यह कमरा व्यक्तिगत है।" हाल ने कहा। अजनबी ने दरवाज़ा जल्दी से बंद कर दिया और मदिरा कक्ष में चला गया।

थोड़ी देर बाद वह अपनी हाथ की पुश्त से होंठ पोंछता हुआ फिर बाहर आया। वह अपने आप में संतुष्ट मालूम होता था। उसने एक क्षण के लिए इधर-उधर देखा और फुदकता हुआ आंगन के उस दरवाज़े की ओर चला, जिधर बैठक की खिड़की खुलती थी। अजनबी दरवाज़े की एक दीवार पर झुक गया और तनिक असमंजस के बाद मिट्टी का एक पाइप निकाल कर उसमें तंबाकू भरने लगा। ऐसा करते हुए उसकी अंगुलियां कांप रही थीं। उसने पाइप जलाया और लापरवाही से ऐसे अंदाज़ में उसे पीने लगा, लेकिन लापरवाही के इस अभिनय के बावजूद वह बड़े ध्यान से आंगन के ऊपर बार-बार देख रहा था।

श्री हक्स्टर ने खिड़की के कपाटों के ऊपर से यह सबकुछ देखा और अजनबी के विचित्र रवैये ने उसे बराबर देखते रहने को बाध्य किया।

फिर अजनबी यकायक सीधा खड़ा हो गया और पाइप जेब में डाल लिया। तब वह आंगन में निगाह से ओझल हो गया। श्री हक्स्टर को संदेह हुआ कि यह अवश्य छोटी-मोटी चोरी की वारदात है, इसलिए वह अपने काउंटर से उठकर भागा और सड़क पर आ गया ताकि चोर को पकड़े। इतने में मार्वेल भी बाहर आ गया। उसका हैट तिरछा हो गया था, नीले मेज़पोश में बंधा हुआ एक बंडल एक हाथ में था और तीन पुस्तकें, जैसा कि बाद में मालूम हुआ, पादरी की पतलून के फीते में इकट्ठी बंधी हुई दूसरे हाथ में। हक्स्टर को देखकर पहले तो वह घबराया, फिर तेज़ी से बाएं को घूमकर दौड़ने लगा।

"चोर! चोर! पकड़ो! पकड़ो!" चिल्लाता हुआ हक्स्टर भी उसके पीछा दौड़ा।

हक्स्टर थोड़ी ही दूर चोर का पीछा कर सका। उसने चोर को बिलकुल अपने सामने देखा। वह तेज़ी से गिरजा के मोड़ की ओर बढ़ा और सड़क पर जा चढ़ा। उसने गांव की झंडियां और रंगरेलियां देखीं और सिर्फ़ एक-दो आदमियों ने उसकी ओर ध्यान दिया। 'चोर को पकड़ो' उसने फिर कहा और तेज़ी से उसका पीछा करने लगा। उसने मुश्किल से दस डग भरे होंगे कि अजीब ढंग से किसी ने उसकी ठुड्डी पकड़ ली। अब वह दौड़ नहीं रहा था बल्कि तीव्र गति से हवा में उड़ रहा था। वह सहसा सिर के बल धरती पर आ गिरा। उसे दुनिया प्रकाश के अनगिनत धब्बों में घूमती हुई जान पड़ी और इसके बाद क्या हुआ यह उसे कुछ नहीं मालूम।

सराय में

यह स्पष्ट रूप से समझने के लिए कि सराय में क्या हुआ, उस क्षण तक की तमाम घटनाओं का वर्णन अत्यावश्यक है, जब मार्वेल खिड़की के सामने आकर खड़ा हुआ।

ठीक उसी समय श्री कस और श्री बंटिंग बैठक में थे। वे सुबह की घटनाओं की गंभीरता से जांच कर रहे थे और हाल की आज्ञा से अदृश्य पुरुष के सामान को खूब उलट-पलट कर देख रहे थे। जैफ़र्स होश में आ चुका था और उसे हमदर्द मित्रों की निगरानी में घर भेज दिया गया था। श्रीमती हाल अजनबी के बिखरे पड़े कपड़े उठा ले आई थी और कमरा साफ़ कर दिया गया था। जिस खिड़की के पास खड़े होकर अजनबी काम किया करता था, उसके नीचे मेज़ पर श्री कस को तीन बड़ी-बड़ी पुस्तकें मिलीं, जिन पर 'डायरी' लिखा हुआ था।

"डायरी!" कस ने पुस्तकों को मेज़ पर रखते हुए कहा, "इनसे कुछ-न-कुछ ज़रूर पता चलेगा।" पादरी मेज़ पर हाथ धरे खड़ा था।

"डायरी!" कस ने बैठते हुए दोहराया और दो पुस्तकों के बीच तीसरी को रखकर बोला।

"हुंह! प्रथम पृष्ठ पर कोई नाम नहीं भाई! शून्य हैं और कुछ संख्याएं हैं।"

पादरी भी उसके कंधों पर झुककर देखने लगा।

कस ने निराश होकर पन्ने पलटने शुरू किए। "ओहो, इसमें तो सब शून्य ही शून्य है, बंटिंग।"

"क्या इसमें नक्शे नहीं?" बंटिंग ने पूछा, "व्याख्या के लिए चित्र बिलकुल नहीं बनाए गए।"

"आप खुद देख लीजिए।" कस ने कहा, "कुछ गणित है, और कुछ रूसी अथवा दूसरी भाषा है। इसमें से कुछ ग्रीक है। मेरा ख़्याल है कि ग्रीक आप…"

"हां," श्री बंटिंग ने चश्मा उतारकर उसे साफ़ करते हुए और सहसा अत्यंत उद्विग्न होकर कहा, "क्योंकि उसके मस्तिष्क में कुछ भी ग्रीक बाक़ी नहीं रह गई थी, हां, ग्रीक से शायद कुछ सुराग़ मिले।"

"मैं आपको पृष्ठ निकाल दूं?"

"पहले मैं सारी पुस्तक पर एक दृष्टि डाल लूं।" बंटिंग ने अब भी ऐनक पोंछते हुए कहा, "पहले एक सामान्य निर्णय बना लें, फिर हम सुराग़ देखेंगे।"

उसने खांसकर ऐनक लगाई, उसे अच्छी तरह संवारा और फिर खांसा और मन में सोचा कि उसकी अज्ञानता की पोल खुलने से पहले कुछ हो जाए तो कितना अच्छा हो! तब उसने पुस्तक संभाली तो कस ने सहज में उसे थमा दी। और फिर कुछ-न-कुछ वाक़ई घटित हुआ।

दरवाज़ा अकस्मात् खुला।

दोनों आदमियों ने एकदम घूमकर देखा और रोएंदार सिल्क का हैट पहने हुए एक सुर्ख़ चेहरे को देखकर इत्मीनान की सांस ली।

"पानी का नल!" चेहरे ने कहा और इधर-उधर झांकने लगा।

"नहीं।" दोनों ने एक साथ उत्तर दिया।

"दूसरी तरफ़ है।" बंटिंग ने कहा। "और कृपया दरवाज़ा बंद करते जाना।" कस ने चिढ़कर कहा।

"बहुत अच्छा!" जबर्दस्ती घुस आने वाले ने धीमे स्वर में कहा। यह स्वर निश्चित रूप से पहले स्वर से भिन्न था। "आप ठीक कह रहे हैं।" उसने अबकी पहले स्वर में कहा। "वहीं रहें आप लोग!" और वह लुप्त हो गया और दरवाज़ा बंद हो गया।

"मेरा ख़्याल है कि कोई नाविक है," बंटिंग ने कहा, "ये नाविक भी बड़े दिलचस्प होते हैं। सचमुच वहीं रहें। यह भी एक नाविकों की भाषा में संकेत है, जिसका अर्थ शायद दरवाज़े से बाहर चले जाना है।"

"मैं भी यही सोचता हूं," कस ने कहा, "मेरे होश आज ठीक नहीं। इस प्रकार दरवाज़ा खुलने से मैं तो एकदम घबरा गया।"

बंटिंग मुस्कराया जैसे वह न घबराया हो। "और अब," उसने आह भरकर कहा, "यह पुस्तकें।"

"एक मिनट," कस ने कहा और वह उठकर दरवाज़े पर ताला लगा आया। "अब हम लोग सभी तरह की बाधाओं से मुक्त हैं।"

उसने यह कहा ही था कि किसी ने सुंघनी सूंघी।

"एक बात सच है," उसने कस के निकट कुर्सी खींचते हुए कहा, "पिछले चंद दिनों इपिंग में वाकई विचित्र घटनाएं घट रही हैं—अत्यंत विचित्र लेकिन मेरा इस वाहियात अदृश्यता में तनिक भी विश्वास नहीं। यह कहानी⋯"

"विश्वास योग्य नहीं है," कस ने कहा, "लेकिन हकीकत यह है कि मैंने उसे खुद देखा⋯ उसके आस्तीन⋯"

"लेकिन क्या आपको विश्वास है कि आपने यही देखा? कई बार अपने ही

मन का भ्रम रूप धारण करके सामने आ जाता है। मेरा ख़्याल है कि आपका कभी किसी अच्छे जादूगर से सामना नहीं हुआ।"

"मैं फिर तर्क नहीं करूंगा," कस ने कहा, "बंटिंग, हम इस विषय पर काफ़ी बहस कर चुके हैं। और अब तो ये पुस्तकें हमें देखनी हैं... ओह, यहां कुछ ग्रीक है। मेरा ख़्याल है कि यह ग्रीक लिपि है।"

उसने पन्ने के बीच की ओर संकेत किया। बंटिंग तनिक शरमा गया। अपनी ऐनक में दोष निकालते हुए उसने चेहरा और निकट किया। उसे ग्रीक बहुत ही मामूली आती थी। लेकिन लोग यही समझते थे कि उसे ग्रीक और हिब्रू का अच्छा ज्ञान है। क्या अब वह अपनी अज्ञानता स्वीकार कर ले? सहसा उसे अपनी गर्दन पर किसी का हाथ महसूस हुआ। उसने अपना सिर हिलाने का प्रयत्न किया तो उसे ठोस और जबर्दस्त दबाव का आभास हुआ।

गर्दन पर वह अजीब दबाव था। उस पर किसी भारी मज़बूत हाथ की गिरफ्त थी, जो उसकी ठुड्डी को मेज़ के निकट से हिलने नहीं देता था। "बौने आदमी, हिलो मत, वरना मैं तुम दोनों का भेजा निकाल दूंगा।" एक आवाज़ ने फुसफुसाकर कहा।

उसने कस के चेहरे की ओर देखा, जो उसके अपने चेहरे के निकट था और अपनी ही जैसी व्यथा का उभार उस पर आया।

"मुझे तुम्हारे साथ इस कठोरता के व्यवहार का अफ़सोस है, पर क्या करूं मज़बूर था।" आवाज़ ने कहा।

"तुमने एक अनुसंधानकर्ता के व्यक्तिगत कागज़ों में काफ़ी झांकना कब से सीख लिया?" आवाज़ ने कहा और दो ठुड्डियां एक साथ मेज़ से टकराईं और दो व्यक्तियों के दांत कटकटाए।

"तुमने एक विपदाग्रस्त व्यक्ति के कमरे पर चढ़ दौड़ना कब से सीख लिया?" ठुड्डियां फिर टकराईं और दांत कटकटाए।

"उन्होंने मेरे कपड़े कहां रखे हैं?"

"सुनो," आवाज़ ने कहा, "खिड़कियां बंद हैं और मैंने दरवाज़े में से चाभी निकाल ली है। मैं काफ़ी मज़बूत आदमी हूं। और अदृश्य होने के बावजूद मेरे बाजू लोहे के डंडे की भांति कठोर हैं। इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि अगर मैं चाहूं तो तुम दोनों को जान से मारकर साफ़ बच निकल सकता हूं—समझे? खैर, अगर मैं तुम्हें छोड़ दूं तो क्या तुम वायदा करते हो कि कोई अनुचित बात नहीं करोगे और जो मैं कहूंगा, वही करोगे?"

पादरी और डॉक्टर ने एक-दूसरे की ओर देखा और डॉक्टर ने मुंह बनाया। "हां," बंटिंग ने कहा और डॉक्टर ने भी यह दोहराया। तब गर्दनों पर दबाव कम हो गया और डॉक्टर और पादरी ने सिर ऊपर उठाया। उनके चेहरे सुर्ख़ थे और सिर

चकरा रहे थे। "जहां हो वहीं बैठे रहो।" अदृश्य पुरुष ने कहा, "वरना यह लोहे की छड़ है।"

"जब मैं इस कमरे में आया," अदृश्य पुरुष ने लोहे की छड़ दोनों की नाक पर स्पर्श करते हुए बात जारी रखी, "तो मेरा ख़्याल था कि कमरा खाली होगा। और मुझे आशा थी कि मेरी इन तीनों पुस्तकों के अलावा मेरे कपड़े भी वहां होंगे। वे कहां हैं? हिलो मत! मैं देख रहा हूं कि वे यहां नहीं हैं। आजकल यद्यपि अदृश्य पुरुष दिन में नंगा घूम सकता है क्योंकि काफ़ी गर्मी पड़ती है, लेकिन शाम को सर्दी हो जाती है। मुझे कपड़े और रहने के लिए जगह चाहिए। और ये तीन पुस्तकें भी मुझे चाहिए।"

अदृश्य पुरुष का क्रोध

क्या करें कहानी का क्रम फिर यहां टूटता है। इसका एक दुखद कारण है जो यहां प्रस्तुत किया जाता है। जब बैठक में ये बातें हो रही थीं और श्री हक्स्टर श्री मार्वेल को फाटक पर झुके पाइप पीता देख रहा था, उसी समय दस-बारह गज़ के फ़ासले पर श्री हाल और श्री टेडी हेन्फ्रे इपिंग के उस समय के एकमात्र विषय पर बड़ी व्यग्रता से विचार कर रहे थे।

सहसा बैठक के दरवाज़े पर धक्का लगा, एक तेज़ चीख़ निकली और फिर खामोशी छा गई।

"हल्लो!" टेडी हेन्फ्रे ने कहा।

"हल्लो!" मदिरा कक्ष से आवाज़ आई।

श्री हाल बात को देर से समझता था लेकिन समझता ठीक था। "यह तो कुछ गड़बड़ है।" उसने कहा कि मदिरा कक्ष से बैठक की ओर चला।

उत्सुक और चिंतित हाल और टेडी एक साथ बैठक के दरवाज़े पर पहुंचे। उनकी आंखें मिलीं। "कुछ गड़बड़ है।" हाल ने कहा और हेन्फ्रे ने सिर हिलाकर समर्थन किया। उन्हें किसी रसायन की तीखी गंध महसूस हुई। और मद्धिम बातचीत सुनाई दी, जो जल्दी-जल्दी और दबी आवाज़ में हो रही थी।

"तुम ठीक-ठाक हो?" हाल ने दरवाज़े पर दस्तक दी।

"बातचीत एकाएक बंद हो गई"—एक क्षण के लिए निस्तब्धता छा गई। फिर बातचीत कानाफूसी में शुरू हुई तब 'नहीं', तुम ऐसा नहीं करोगे की तेज़ चीख़। कोई सहसा हिला और एक कुर्सी उलट गई, एक मामूली संघर्ष और दोबारा निस्तब्धता।

"यह क्या मामला है?" हेन्फ्रे चिल्लाया।

"तुम वहां ठीक-ठाक हो?" हाल ने दोबारा पूछा।

"हम बिलकुल ठीक हैं। हमें त¨ तंग मत करो।" पादरी की उखड़ी-उखड़ी आवाज़ ने उत्तर दिया।

"विचित्र!" हेन्फ्रे ने कहा।

"विचित्र!" हाल ने दोहराया।

"कहते हैं 'तंग मत करो।" हेन्फ्रे बोला।

"मैंने सुना।" हाल ने कहा।

"और नाक से हवा निकली।" हेन्फ्रे ने कहा।

ध्यान से सुनने लगे। बातचीत जल्दी-जल्दी और दबे स्वर में हो रही थी। "मैं नहीं कर सकता।" बंटिंग ने कहा, उसका स्वर ऊंचा हो रहा था, "जनाब मैं कह रहा हूं कि मैं नहीं करूंगा।"

"यह क्या है?" हेन्फ्रे ने पूछा।

"कहता है कि वह नहीं करेगा।" हाल ने उत्तर दिया। "वह हमसे तो नहीं कह रहा था, क्यों क्या ख़्याल है?"

"अपमानजनक!" भीतर बंटिंग ने कहा।

"अपमानजनक!" हेन्फ्रे ने कहा, "मैंने साफ़-साफ़ सुना।"

"यह अब कौन बोल रहा है?" हेन्फ्रे ने पूछा।

"मेरा ख़्याल है कि कस है। तुम कुछ सुन सकते हो?" हाल ने कहा।

निस्तब्धता। अंदर की आवाज़ें अस्पष्ट और परेशानी में डालने वाली।

"लगता है जैसे मेज़पोश फेंका जा रहा हो।" हाल ने कहा।

श्रीमती हाल मधुशाला के पीछे आईं। हाल ने उसे चुप रहने का संकेत किया और अपने पास बुलाया। इसका श्रीमती हाल ने पत्नी के अधिकारस्वरूप विरोध किया।

"हाल, तुम वहां क्या सुन रहे हो?" वह बोली, "ऐसा व्यस्त दिन इस तरह बिताने के अलावा तुम्हें और कुछ काम नहीं है?"

हाल ने मुंह बनाकर और संकेतों द्वारा सबकुछ समझाने का प्रयत्न किया, पर श्रीमती हाल किसी तरह मानती ही न थी। उसने अपनी आवाज़ ऊंची की। तब हाल और हेन्फ्रे बड़े निराश होकर पंजों के बल चलते हुए उसे इशारे से समझाने आए।

उन्होंने जो कुछ कहा, श्रीमती हाल ने पहले तो उस पर विश्वास करने से बिलकुल इनकार कर दिया। फिर उसने कहा कि हाल चुप रहे और हेन्फ्रे सारी बात बताए। तब भी उसका विचार था कि यह उनका भ्रममात्र है, शायद वे फर्नीचर सरका रहे हैं।

"मैंने उन्हें 'अपमानजनक' कहते सुना।" हाल ने कहा।

"मैंने भी सुना! श्रीमती हाल!" हेन्फ्रे बोला।

"इस तरह नहीं।" हाल ने कहा।

"चुप!" टेडी हेन्फ्रे ने कहा, "मुझे खिड़की की आवाज़ सुनाई दे रही है।"

"कौन-सी खिड़की?" श्रीमती हाल ने पूछा।

"बैठक की।" हेन्फ्रे ने उत्तर दिया।

सब ध्यान से सुनने लगे। श्रीमती हाल की आंखें सामने की ओर टकटकी

लगाए गड़ी रहीं, जहां सराय का बड़ा, सफ़ेद, चौकोर दरवाज़ा, सड़क, हक्स्टर की दुकान का अगला भाग, धूप में चमकता हुआ, सफ़ेद और स्पष्ट दीख रहा था। एकाएक हक्स्टर का दरवाज़ा खुला और हक्स्टर बाहर निकला। वह घबराया हुआ इधर-उधर देख रहा था और बांहों से इशारे कर रहा था।

"चोर को रोको।" हक्स्टर ने कहा और वह आंगन के दरवाज़े की ओर भागा और ग़ायब हो गया।

उसी समय बैठक से शोर सुनाई दिया और खिड़कियां बंद होने की आवाज़ आई।

हाल, हेन्फ्रे और मदिरा कक्षा में जितने लोग मौजूद थे, सब अंधाधुंध ग़ली की ओर भागे। उन्होंने किसी को मोड़ घूमकर सड़क पर भागते और हक्स्टर को हवा में कलाबाज़ी खाकर चेहरे और कंधे के बल धरती पर गिरते देखा। ग़ली में लोग चकित खड़े थे या उनकी ओर भागे चले आ रहे थे।

हक्स्टर अचेत हो गया। हेन्फ्रे उसके पास ठहर गया, लेकिन हाल और मदिरा कक्ष के दो मज़दूर तुरंत मोड़ की ओर दौड़े। वे समझ में न आने वाली बातें चिल्ला रहे थे और उन्होंने मार्वेल को गिरज़े की दीवार के पास घूमते देखा। शायद वे इस निर्णय पर पहुंचे कि वही अदृश्य पुरुष है, जो सहसा दृश्य हो गया है। और वह ग़ली में उसे पकड़ने दौड़े। लेकिन हाल अभी दस-बारह गज़ ही गया होगा कि वह आश्चर्य में भरकर चिल्लाया, फिर वह हवा में उड़ता नज़र आया। उसने एक मज़दूर को पकड़ लिया और उसे भी धरती पर ले गिरा। उसे यों उछाल दिया गया था जैसे आदमी फुटबाल को उछाल दे। दूसरा मज़दूर जब मोड़ घूमकर आया तो उसने एक चक्कर खाकर आंखें फाड़कर हाल को पड़े देखा। उसने सोचा कि हाल अपने आप लुढ़क गया है। उसने चोर का पीछा करना जारी रखा, लेकिन उसे भी टख़ने से टांग अड़ाकर हक्स्टर की तरह गिरा दिया गया। पहले मज़दूर ने जब उठने की चेष्टा की तो उसकी बगल में इतने ज़ोर का घूंसा लगा, जिससे एक बैल भी धराशायी हो जाता।

जब वह मज़दूर गिरा तो मैदान की ओर से दौड़ती हुई भीड़ मोड़ पर पहुंची। नानबाई सबसे आगे था। वह नीली बास्केट पहने था और उसका शरीर भारी था। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि तीन व्यक्ति धरती पर चित्त लेटे हैं, बाक़ी सारी ग़ली ख़ाली है। इसी समय उसके पांव के पिछले हिस्से को जाने क्या हुआ कि वह लुढ़कता हुआ अपने भाई और हिस्सेदार के पांव में जा गिरा। लोग जो उत्सुकता में भरे दौड़े आ रहे थे, वे उन्हें गालियां देने लगे।

जब हाल और हेन्फ्रे और मज़दूर घर से बाहर दौड़ गए, श्रीमती हाल, जिसे बरसों के अनुभव ने बहुत कुछ सिखा दिया था, मदिरा कक्ष के दरवाज़े पर ठहरी रही। सहसा बैठक का दरवाज़ा खुला और कस बाहर आया। वह श्रीमती हाल को देखे

बिना ही तुरंत सीढ़ियां उतर गया और मोड़ की ओर भागा। "उसे पकड़ो!" वह चिल्लाया, "उसे वह बंडल मत गिराने दो! जब तक उसके हाथ में बंडल है, तुम उसे तभी तक देख सकते हो।"

उसे मार्वेल के बारे में कुछ मालूम नहीं था, जिसके हाथ में अदृश्य पुरुष ने पुस्तकें और बंडल आंगन में पकड़ा दिए थे। कस का चेहरा क्रुद्ध और दृढ़ था, लेकिन उसकी पोशाक ठीक नहीं थी। उसने एक प्रकार से मुलायम सफ़ेद रज़ाई-सी पहन रखी थी जो शायद यूनान में ही ठीक समझी जा सकती थी। "उसे पकड़ो!" वह चिल्लाया, "उसके पास मेरी पतलून और पादरी के सारे कपड़े हैं।"

"इसकी तीमारदारी करो।" धरती पर लेटे हक्स्टर के निकट से गुज़रते हुए उसने हेन्फ्रे से कहा। ज्यों ही वह मोड़ घूमा उसके पांव लड़खड़ाए और वह धरती पर आ गिरा। किसी व्यक्ति ने तेज़ी से दौड़ते हुए उसके हाथ की अंगुलियां कुचल डालीं। वह चीख़ा, खड़ा होने लगा तो उसे फिर धक्का देकर औंधा गिरा दिया गया। अब उसे मालूम हुआ कि लोग किसी को पकड़ने नहीं जा रहे, बल्कि उनमें भगदड़ मची हुई है। हर एक आदमी गांव की ओर वापस दौड़ रहा था। वह दोबारा उठा तो कनपट्टी पर ज़ोर का तमाचा लगा। वह लड़खड़ाया और फिर सराय की ओर भागा। वह हक्स्टर के ऊपर से कूद गया जो अब उठकर बैठ गया था।

जब वह सराय की आधी सीढ़ियां चढ़ गया, उसने एक क्रुद्ध चिंघाड़ सुनी जो कोलाहल से ऊंची थी और किसी के मुंह पर झन्नाटे से थप्पड़ लगा। उसने पहचाना कि यह अदृश्य पुरुष की आवाज़ है और कराह उस व्यक्ति की थी जिसे दर्दनाक थप्पड़ लगा था।

दूसरे क्षण कस वापस बैठक में था।

"वह फिर आ रहा है, बंटिंग।" उसने भीतर घुसते हुए कहा, "अपने आप को बचाओ!"

बंटिंग खिड़की के पास खड़ा था और अपने शरीर को फटे टाट और 'वेस्ट सरे गज़ट' नामक अख़बार से ढांपने का प्रयत्न कर रहा था।

"कौन आ रहा है?" उसने पूछा। और वह इतना घबरा गया कि उसकी पोशाक शरीर से फिसलते-फिसलते बची।

"अदृश्य पुरुष!" कस ने कहा और वह खिड़की की ओर दौड़ा। "बेहतर है कि हम यहां से भाग चलें। वह तो एकदम पागल हो रहा है।"

दूसरे क्षण वह आंगन में था।

"हे भगवान्!" बंटिंग ने कहा। वह इस दशा में जाए भी कैसे। उसने सराय के ग़लियारे में भयानक हाथापाई का शोर सुना और तब भागने का निर्णय किया। किसी प्रकार टाट और अख़बार को शरीर से चिपकाकर वह खिड़की से लटक गया और नीचे उतरकर सिर पर पांव रखकर भागा।

अदृश्य पुरुष के क्रोध से गरजने और बंटिंग के खिड़की से उतरकर भागने से बाद की घटनाओं का क्रमबद्ध वर्णन करना कठिन है। पहले-पहल अदृश्य पुरुष की मंशा शायद इतना ही था कि मार्वेल कपड़े और पुस्तकें लेकर भाग निकले। बाद में उसका मूड बिगड़ गया—वैसे ही उसका स्वभाव कभी अच्छा न था—और वह सिर्फ़ मारने-पीटने और चोट पहुंचाने के लिए ही लोगों को मारने लगा था।

अब क्या, लोग भाग रहे थे, दरवाज़े खुल रहे थे और सिर छिपाने के लिए संघर्ष हो रहा था। भीड़ फ्लैचर के तख़्ते और कुर्सियों से आ टकराई और उन्हें गिरा दिया। झूले में बैठे आश्चर्यान्वित जोड़े को पकड़ लिया गया। फिर थोड़ी देर में सब शांत हो गया। इपिंग की झंडियों से सजी हुई ग़ली सूनी हो गई। सिर्फ़ अदृश्य मनुष्य अभी भी गरज रहा था और सड़क पर नारियल, पर्दे और मिठाइयां बिखरी पड़ी थीं। हर तरफ़ से खिड़कियों के बंद होने और सिटकिनी बंद होने की आवाज़ें आ रही थीं और कभी-कभी किसी खिड़की के कोने से तनी भौहों के नीचे से झांकती आंखें दिखाई दे जाती थीं।

अदृश्य पुरुष ने कुछ देर सराय की खिड़कियां तोड़कर अपने को प्रसन्न किया। फिर उसने ग़ली का एक लैंप उखाड़कर खिड़की में से श्रीमती ग्रोग्रम की बैठक में फेंक दिया। उसने एडरडीन जाने वाली सड़क पर हिगिंस के मकान से ज़रा आगे तार की लाइन भी काट दी, वह एकदम लुप्त हो गया। उसे न किसी ने देखा, न सुना, न महसूस किया।

लेकिन उसके चले जाने के दो घंटे बाद तक किसी का इपिंग की सूनी सड़क पर निकलने का साहस नहीं हुआ।

श्री मार्वेल की दुर्गति

शाम हो रही थी और इपिंग के लोग दोबारा बाहर निकल कर नदी के उजड़े किनारे को देख रहे थे। ठीक इसी समय एक ठिगने क़द का आदमी भद्दा हैट पहने सड़क पर कठिनाई से चलता हुआ बेंबहर्स्ट की ओर जा रहा था। उसके पास इकट्ठी बंधी हुई तीन पुस्तकें और नीले मेज़पोश में बंधा एक बंडल था। उसकी मुखमुद्रा से उदासी और थकान व्यक्त हो रही थी और वह जल्दी-जल्दी कदम उठा रहा था। उसकी अपनी आवाज़ के अतिरिक्त एक और आवाज़ उसके साथ चल रही थी और अनदेखे कंधों के स्पर्शमात्र से अपने सुस्त पड़ रहे कदम वह फिर तेज़ कर देता था।

"अगर तुम मुझे फिर धोखा दोगे, धोखा देने का प्रयत्न करोगे!" आवाज़ ने कहा।

"मेरा यह कंधा पहले ही दुख रहा था।" मार्वेल बिलबिलाया।

"तुम कंधे की बात करते हो, मैं तुम्हें जान से मार डालूंगा।" आवाज़ ने कहा।

"मैंने तुम्हें धोखा देने का प्रयत्न नहीं किया।" मार्वेल ने ऐसे स्वर से कहा जो रुदन से कम नहीं था। "मैं कसम खाता हूं कि मैंने तुम्हें धोखा नहीं दिया। बात यह है कि मुझे मोड़ मालूम नहीं था। मोड़ मुझे मालूम भी कैसे हो सकता था। बस इतनी सी बात पर मेरी इतनी पिटाई हुई।"

"अगर तुम परवाह नहीं करोगे तो तुम्हारी पिटाई और अधिक होगी।" आवाज़ ने कहा और मार्वेल बड़बड़ाकर चुप हो गया। उसने गाल फुला लिए और उसकी आंखों से नैराश्य प्रकट होने लगा।

"यह बहुत बुरी बात होगी कि ये गंदे फूहड़ लोग मेरा भेद जान जाएं और यह संभव नहीं अगर तुम मेरी पुस्तकें उनके हाथ न पड़ने दो। जब मैं यहां आया तो किसी को मालूम नहीं था कि मैं अदृश्य हूं। अब मैं क्या करूं?"

"और मैं क्या करूं?" मार्वेल ने पूछा।

"अब सब जान गए। अख़बारों में यह बात निकलेगी। हर एक आदमी मुझे खोजेगा, देखने को उत्सुक होगा।"

आवाज़ भर्त्सना करने लगी और फिर बंद हो गई। मार्वेल के चेहरे पर नैराश्य गहरा हो गया और उसका कदम धीमा पड़ गया।

"चलते चलो।" आवाज़ ने कहा।

मार्वेल के चेहरे का रंग बदला, इस पर नीले लाल धब्बे उभर आए।

"पुस्तकें मत गिराओ मूर्ख!" आवाज़ ने डांटा।

"मुझे तुम्हारा प्रयोग करना है। तुम मेरे लिए एक मामूली उपकरण हो। लेकिन मुझे तुम्हारा प्रयोग करना ही पड़ेगा।" आवाज़ बोली।

"मैं अभागा हूं।" मार्वेल ने कहा।

"यह ठीक है।" आवाज़ ने कहा।

"मैं एक निकृष्टतम उपकरण हूं जो तुम्हें मिल सकता था।" और फिर एक बार निरुत्साहित करने वाले मौन के बाद कहा, "मैं मज़बूत नहीं हूं।"

"नहीं?"

"और मेरा हृदय कमज़ोर है। यह छोटा-सा काम! मैंने पूरा ज़रूर कर दिया है किसी तरह, लेकिन मैं किसी भी समय गिर सकता था।"

"तो?"

"जिस तरह का काम मुझसे लेना चाहते हो, उसके लिए मुझमें सामर्थ्य नहीं है।"

"मैं तुम्हें समर्थ बनाऊंगा।"

"मेरी प्रार्थना है, तुम मुझ पर दया करो। मैं तुम्हारी योजनाओं को बिगाड़ना नहीं चाहता। पर वे बिगड़ जाएंगी क्योंकि मैं लाचार हूं। केवल मेरी लाचारी और दयनीयता के कारण।"

"तुम नहीं बिगाड़ोगे।" आवाज़ ने शांतिपूर्वक ज़ोर देकर कहा।

"काश! मैं मर जाता," मार्वेल ने कहा, "तुम मेरे साथ न्याय नहीं कर रहे। तुम सोचो कि यह मेरा अधिकार..."

"चलो चलो।" आवाज़ ने कहा।

मार्वेल ने कदम तेज़ किया और थोड़ी देर वे चुपचाप चलते रहे।

"यह तो बड़ी मुसीबत है।" मार्वेल बोला।

अदृश्य पुरुष पर इसका क्रुद्ध प्रभाव नहीं हुआ।

इसलिए उसने फिर कहा, "मुझे इससे क्या लाभ होगा।"

उसके स्वर से यही भाषित हो रहा था मानो उससे ऐसा काम कराया जा रहा है, जिसे वह नहीं कर सकता।

"चुप रहो!" आवाज़ ने कठोर स्वर में कहा, "तुम निरे गधे हो। जो कुछ मैं कहता हूं, करते जाओ। तुम उसे कर सकते हो और करोगे। तुम मूर्ख ज़रूर हो, लेकिन काम कर सकते हो।"

"जनाब, मैं निवेदन कर रहा हूं कि मैं इसके योग्य नहीं।"

"अगर तुम चुप नहीं रहोगे तो मैं तुम्हारी कलाई फिर मरोड़ दूंगा।" अदृश्य पुरुष ने कहा, "मैं सोचने के लिए अवकाश चाहता हूं।"

पेड़ों में से पीले रंग की दो रोशनियां दिखाई दीं और अंधेरे में गिरजे का चौकोर बुर्ज़ नज़र आया।

"मैं अपना हाथ गांव से घर होते समय तुम्हारे कंधे पर रखूंगा," आवाज़ ने कहा, "सीधे चलना, धोखा देने का प्रयत्न न करना। अगर किया तो तुम्हारे लिए यह बहुत बुरा होगा।"

"मैं जानता हूं," मार्वेल ने ठंडी सांस छोड़ी, "मैं वह सब जानता हूं।"

बेचारा मार्वेल पुराना रेशमी हैट पहने अपना बोझ उठाए गांव की ग़ली में से चुपचाप गुज़र गया और खिड़कियों से झर रहे प्रकाश से दूर निकलकर अंधेरे में खो गया।

बंदरगाह

दूसरे दिन सुबह दस बजे श्री टामस मार्वेल स्टो बंदरगाह की बाहरी बस्तियों की एक छोटी सराय के सामने बेंच पर बैठा था। चेहरे पर थकान के निशान थे, दाढ़ी के बाल बढ़े हुए थे और दोनों हाथ जेबों में थे। वह बीच-बीच में गाल फुलाता था और उदास और घबराया हुआ इधर-उधर देख रहा था। उसके निकट पुस्तकें रखी थीं, जो अब तागे से बंधी हुई थीं। अदृश्य पुरुष की योजना में परिवर्तन होने के कारण उसे बेंबहर्स्ट से परे चीड़ के जंगल में छोड़ दिया गया था। मार्वेल बेंच पर बैठा था और यद्यपि कोई उसकी ओर नहीं देख रहा था, तथापि वह मन में डर रहा था। उसके हाथ बार-बार जेबों में जाते थे और अजीब बेचैनी से उनमें कुछ टटोलते थे।

जब उसे बैठे हुए एक घंटा हो गया, एक बूढ़ा नाविक सराय के बाहर आया। उसके हाथ में अख़बार था और वह उसके निकट बेंच पर बैठ गया।

"खुशगवार दिन है।" नाविक बोला।

मार्वेल ने भय की दृष्टि से अपने चारों ओर देखा और कहा, "हां।"

"साल का यह बेहतरीन मौसम है।" मार्वेल की भावभंगी की ओर ध्यान न देते हुए नाविक ने कहा।

"हां।" मार्वेल ने कहा।

नाविक ने दांत कुरेदनी निकाली और कुछ मिनट दांत कुरेदने में व्यस्त रहा। इसी बीच में उसकी आंखों ने मार्वेल के गर्द भरे चेहरे और उसके निकट पड़ी पुस्तकों का निरीक्षण किया। जब वह मार्वेल के निकट आकर बैठा तो उसने जेब में सिक्का गिरने की आवाज़ सुनी। उसे मार्वेल की वेशभूषा और उसके पास के धन में कोई मेल न जान पड़ा। तब उसके मस्तिष्क में वह विषय उभर आया जो उसके लिए उत्सुकता और उत्तेजना का कारण बना हुआ था।

"किताबें?" सहसा उसने दांत कुरेदनी बाहर निकालते हुए कहा।

मार्वेल चौंका और उसकी ओर देखा।

"हां, ये किताबें हैं।" उसने कहा।

"किताबों में बड़ी असाधारण बातें होती हैं।" नाविक ने कहा।

"आप ठीक कह रहे हैं।" मार्वेल ने समर्थन किया।

"और कुछ असाधारण बातें उनके बाहर भी होती हैं।"

"यह भी सच है।" मार्वेल ने उस पर सिर से पांव तक एक दृष्टि डाली।

"मिसाल के लिए अख़बार में भी कुछ असाधारण बातें होती हैं।" नाविक ने कहा।

"हां, होती हैं।"

"इस अख़बार में।" नाविक ने कहा।

"ओह!" मार्वेल ने कहा।

"इसमें एक कहानी है।" नाविक ने आंख के कोने से मार्वेल को एकटक देखते हुए कहा, "यह कहानी एक अदृश्य पुरुष के बारे में है।"

मार्वेल ने मुंह बनाकर सिर खुजलाया, उसे अपने कान जलते हुए मालूम हुए।

"अब वे जाने क्या लिखेंगे? आस्ट्रिया या अमरीका?" उसने पूछा।

"आस्ट्रिया या अमरीका में नहीं।" नाविक ने कहा।

"हे भगवान्!" मार्वेल चौंका।

"यहां का मतलब यह नहीं कि इस जगह, बल्कि यहीं आसपास।" नाविक ने कहा और मार्वेल ने इत्मीनान की सांस ली।

"अदृश्य पुरुष! वह क्या करता है?" मार्वेल ने पूछा।

"हरएक चीज़!" नाविक ने मार्वेल को आंख से टटोलते हुए कहा।

"मैंने चार दिन से अख़बार नहीं देखा।" मार्वेल ने कहा।

"वह इपिंग से चला है।" नाविक बोला।

"अच्छा!"

"वह वहां से चला है। लेकिन कहां से आया है यह कोई नहीं जानता। यह कहानी इपिंग से आई है और इसका सबूत है।"

"हे भगवान्!" मार्वेल चीख़ा।

"लेकिन कहानी बड़ी विचित्र है। एक पादरी और डॉक्टर गवाह हैं कि उन्होंने उसे प्रत्यक्ष देखा और फिर बाद में अदृश्य हो गया। वह सराय में ठहरा हुआ था। किसी को उसके अदृश्य होने का ज्ञान नहीं था। एक झगड़ा हुआ जिसमें उसके सिर की पट्टियां उतर गईं। तब मालूम हुआ कि उसका सिर अदृश्य है। उसे पकड़ने के प्रयत्न किए गए। बड़ी हाथापाई हुई, खूब लड़ाई मची जिसमें उसने हमारे बहादुर जैफ़र्स को घायल कर दिया। और अपने वस्त्र वहां फेंककर साफ़ निकल गया। इस कहानी में नाम-जगह सब दिए हैं।"

"हे भगवान्!" मार्वेल ने घबराहट से नाविक की ओर देखा। वह अपनी जेब

में पैसे गिन रहा था और उसके मस्तिष्क में विचित्र विचार आ रहे थे। "यह तो बड़ी अजीब कहानी है।"

"है न! इसे मैं असाधारण कहता हूं," नाविक बोला, "पहले तो कभी अदृश्य पुरुष की बात नहीं सुनी थी। आजकल बड़ी ही विचित्र बातें सुनने में आती हैं।"

"उसने बस इतना ही किया?" मार्वेल ने भावनाओं को संयत करने का प्रयत्न करते हुए कहा।

"क्या यह काफ़ी नहीं?" नाविक बोला।

"क्या दोबारा वहां नहीं गया? सिर्फ़ बचकर निकल ही आया, बस?"

"बस!" नाविक बोला, "क्यों? क्या यह काफ़ी नहीं है?"

"काफ़ी तो है।"

"मेरा ख़्याल है कि यह बहुत काफ़ी है।"

"उसके साथी नहीं थे? अख़बार में उसके साथी की बात शायद नहीं लिखी।" मार्वेल ने पूछा।

"तुम्हारे सिर यह काफ़ी नहीं? यह तो अच्छा ही हुआ कि उसका कोई साथी नहीं था।" नाविक ने कहा।

"मैं तो इसी बात से परेशान हूं कि वह पकड़ा नहीं गया और इधर-उधर भागा फिरता है। सुना है कि वहां से वह वोर्ट स्टोव को आनेवाली सड़क पर चला है। मेरा मतलब है कि वे ऐसा समझते हैं और हम भी यहीं हैं। इस बार यह अमरीकन चमत्कार नहीं चलेंगे। तनिक सोचो कि वह क्या कुछ कर सकता है। फर्ज़ करो, वह तुम्हें लूटना चाहता है तो उसे रोकने वाला कौन है? वह दीवार फांद सकता है, कमरे में घुस सकता है और पुलिस के घेरे में से इतनी आसानी से निकल सकता है। जितना कि मैं और तुम अंधे आदमी के सामने से जा सकते हैं। उसे रुकावट क्या है?"

"रोक तो कोई नहीं सकता। यह तो उसे बड़ा लाभ है," मार्वेल ने कहा, "और अच्छा..."

"तुम ठीक होते हो, उसे यह बड़ा लाभ है।"

इस बीच में मार्वेल बड़े ध्यान से इधर-उधर देख रहा था, वह मद्धिम-सी पांव की चाप सुनने का प्रयत्न कर रहा था। वह हाथ की ओट में खांसा, वह कोई दृढ़ निश्चय कर रहा जान पड़ता था।

उसने फिर इधर-उधर देखा, सुना और तब झुककर काना-फूसी के अंदाज़ में नाविक से कहा, "इस अदृश्य पुरुष के बारे में मैं कुछ और बातें भी जानता हूं जो मुझे व्यक्तिगत तौर पर मालूम हुई हैं।"

"ओह, तुम!" नाविक ने कहा।

"हां, मैं!" मार्वेल बोला।

“वाक़ई!” नाबिक ने क़हा, “क्या मैं जान सकता हूं?”

“सुनोगे तो हैरान रह जाओगे।” मार्वेल ने हाथ की ओट करते हुए कहा।

“सचमुच!” नाविक ने कहा।

“बात यह है।” मार्वेल ने अत्यंत धीमे स्वर में कहना शुरू किया। सहसा उसकी मुखमुद्रा आश्चर्यजनक ढंग से बदली। “ओह!” उसने कहा। वह अपनी जगह पर उठ खड़ा हुआ। उसके चेहरे से पीड़ा व्यक्त हो रही थी। “ओह हो!” उसने कहा।

“क्यों, क्या बात है?” नाविक ने चिंतित स्वर में कहा।

“दांत में दर्द है।” मार्वेल ने कहा और हाथ से कान सहलाया। उसने किताबें उठाईं। “मुझे अब चलना चाहिए।” उसने कहा। वह बेंच पर ही खिसकता हुआ नाविक से अलग हटने लगा।

“लेकिन तुम मुझे अदृश्य पुरुष के बारे में कुछ बताने जा रहे थे।” नाविक बोला।

मार्वेल जैसे अपने आप से सलाह कर रहा हो।

“झूठ!” एक आवाज़ ने कहा।

“यह सब झूठ है।” मार्वेल बोला।

“लेकिन यह तो अख़बार में है।” नाविक बोला।

“तब भी झूठ है।” मार्वेल ने कहा, “मैं उस लौंडे को जानता हूं जिसने यह गप उड़ाई है। अदृश्य पुरुष हो ही नहीं सकता।”

“और जो अख़बार में लिखा है?”

“इसका एक शब्द भी सही नहीं है।” मार्वेल ने ज़ोर से कहा।

नाविक ने अख़बार हाथ में लिए उसकी ओर देखा।

मार्वेल ने चलने के लिए गर्दन घुमाई।

“एक मिनट रुको,” नाविक ने उठते हुए धीरे से कहा, “क्या तुम कहना चाहते हो कि…?”

“हां, मैं कह चुका।” मार्वेल बोला।

“तब मुझसे तुम सारी कहानी क्यों सुनते रहे? तुम्हारा क्या मतलब है? क्या तुम मुझे बना रहे थे?”

मार्वेल ने अपने गाल बजाए। नाविक ने क्रोध से मुट्ठियां भींचकर कहा, “मैं दस मिनट तक बकता रहा। और तुम जाहिल, मूर्ख, मुर्ग़ी के बच्चे! तुम में इतना शिष्टाचार भी नहीं बाक़ी है कि…”

“मुझे गाली मत दो।” मार्वेल ने कहा।

“गाली! गाली की बात करते हो, मैं तुम्हें…”

“चलो।” एक आवाज़ ने कहा। मार्वेल तुरंत घूमा और अजीब ढंग से डग भरता हुआ चल पड़ा।

"अच्छा है, तुम चले ही जाओ।" नाविक ने कहा।

"कौन जा रहा है?" मार्वेल बोला।

वह तिरछे ढंग से चल रहा था और कभी झटके के साथ आगे बढ़ जाता था जैसे कोई खींच रहा हो। कुछ दूर जाकर वह बड़बड़ाता और जवाबी गालियां देने लगता।

"नामाकूल!" नाविक ने कहा। वह टांगें चौड़ी किए और बाजू कमर पर रखे था और उसे जाते देख रहा था। "मैं तुम्हें बताऊंगा, मूर्ख कहीं का। मुझे झूठा बताता है। यह देख अख़बारों में लिखा है।"

मार्वेल कुछ कहता हुआ चलता रहा और सड़क का एक मोड़ घूमकर निगाह से ओझल हो गया। यह नाविक टांगें फैलाए अब भी शान से सड़क पर खड़ा था। एक कसाई का छकड़ा आ गया और तब उसे हटना पड़ा। वह पोर्ट स्टो को लौटते हुए बड़बड़ा रहा था—"दुनिया में मूर्खों की कमी नहीं है। ठहरता तो मज़ा चखा देता⋯ यह तो अख़बार में है।"

और अब उसने एक और असाधारण बात सुनी जो उसके नज़दीक ही घटित हुई थी। यह पैसों से भरी मुट्ठी ही बता रही थी जो सेंट मिचेल की ग़ली वाली दीवार के साथ-साथ आप ही चल रही थी। उसके एक नाविक भाई ने एक अद्भुत दृश्य उसी समय देखा था। वह पैसों पर झपटा तो किसी ने उसे धरती पर गिरा दिया। जब वह दोबारा उठा तब तक वह पैसों की तितली उड़ गई थी। हमारा यह नाविक अपने कथनानुसार, किसी भी बात पर विश्वास करने को तैयार था, पर यह तो नितांत अविश्वसनीय था। लेकिन बाद में वह इस पर पुनः विचार करने लगा।

पैसे उड़ने की कहानी सच थी। उस दिन तमाम आस-पास के इलाके में 'लंडन एंड काउंटी बैंकिंग कंपनी' से लेकर दुकानों और सरायों के गल्लों से रुपया मुट्ठियों में उड़ता रहा, लोगों ने उसे दीवारों के साथ-साथ और छायादार स्थानों में उड़ते देखा और फिर जाने कहां ग़ायब हो गया। और यह रुपया, यद्यपि इसका किसी को पता नहीं चला, उड़-उड़कर उस भद्दे हैट वाले व्यक्ति की जेबों में पड़ता रहा जो पोर्ट स्टो की बाहरी बस्ती की छोटी सराय के सामने बेंच पर बैठा था।

दस दिन बाद—जब बरडोक की कहानी काफ़ी पुरानी हो गई—नाविक उड़ते पैसों का संबंध मार्वेल की जेब में खनकते सिक्कों से जोड़ने में सफल हो सका। तब वह समझा कि वह विचित्र अदृश्य पुरुष के कितना निकट पहुंच गया था।

आदमी जो भाग रहा था

शाम के समय डॉ. केम्प अपने अध्ययन के कमरे में बैठे थे। यह कमरा बरडोक से दिखाई देने वाली पहाड़ी पर था। यह छोटा-सा सुंदर कमरा था, जिसके उत्तर, पश्चिम और दक्षिण में खिड़कियां थीं। अलमारियों में पुस्तकें और विज्ञान संबंधी प्रकाशन भरे थे, एक लिखने की बड़ी मेज़ थी, एक खुर्दबीन, छोटे-छोटे दूसरे औज़ार और रसायनों की बिखरी बोतलें थीं। यद्यपि अभी बाहर सूर्य का प्रकाश था, डॉक्टर ने लैंप जला रखा था, पर्दे गिराने की ज़रूरत न थी क्योंकि वहां कोई अंदर झांकने वाला नहीं था। डॉ. केम्प लंबा दुबला व्यक्ति था। उसके बाल मुलायम और मूंछें सफ़ेद थीं। उसे आशा थी कि जो काम वह कर रहा था, उससे उसे एक दिन रायल सोसाइटी की फैलोशिप मिलेगी, जिसका उसकी दृष्टि में बड़ा महत्त्व था।

अब उसने काम से नज़र हटाकर बाहर देखा तो उसे पहाड़ी के पीछे सूर्यास्त के समय की रक्तिमा दिखाई दी। वह एक मिनट के लिए कलम मुंह में रखकर बैठ गया और इस दृश्य का आनंद लेने लगा कि सहसा उसकी दृष्टि एक ठिगने क़द के आदमी पर पड़ी, जो उसकी ओर दौड़ता हुआ आ रहा था। वह एक ऊंचा हैट पहने था और इतना तेज़ दौड़ रहा था कि कभी-कभी उसकी टांगें लड़खड़ा जाती थीं।

"यह एक और गधा है," डॉ. केम्प ने सोचा, "एक ऐसा ही आदमी आज सुबह 'अदृश्य आदमी आ रहा है, जनाब!' कहता हुआ मुझसे टकरा गया था। लोगों को मालूम नहीं क्या हो गया है। मानो हम अब भी तेरहवीं सदी में रह रहे हों।" डॉक्टर बड़बड़ाया।

दूसरे ही क्षण ऊंचे ग्राम्यगृहों ने दौड़ रहे व्यक्ति को छिपा लिया। वह फिर दिखाई दिया और फिर छिप गया, यों ही तीन बार हुआ और आख़िर चबूतरे के पीछे ओझल हो गया।

"गधे!" डॉक्टर ने कहा और वह अपनी लिखने की मेज़ की ओर लौटा।

लेकिन जिन लोगों ने उसे निकट से देखा और उसके पसीने से सराबोर चेहरे पर भय को अंकित देखा; उनके मन में डॉक्टर की भांति उसके प्रति घृणा उत्पन्न नहीं हुई। जब वह दौड़ रहा था तो ऐसे खनक रहा था जैसे भरी हुई थैली इधर-उधर

उछालने से खनकती है। वह न दाएं देखता था और न बाएं, बल्कि उसकी फैली हुई आंखें पहाड़ी के नीचे लैंपों पर और गली में जमा लोगों पर गड़ी हुई थीं। जिनके पास से गुज़रता था, वे प्रश्नसूचक दृष्टि से एक दूसरे की ओर देखते हुए ठहर जाते थे, जैसे उसके दौड़ने का कारण समझना चाहते हैं।

जब वे यों अचरज से भरे एक दूसरे को देख रहे होते थे तो उन्हें हवा की सरसराहट के साथ 'थप-थप' की ध्वनि और फूली हुई सांस की 'सा-सा' अपने पास से जल्दी-जल्दी गुज़रती महसूस होती थी।

लोग चीख़ते-चिल्लाते मार्ग छोड़कर अलग खड़े हो जाते। एक भय की भावना इन चीख़ों द्वारा और सहज ज्ञान द्वारा पहाड़ी के नीचे तक जा पहुंची। गली में लोग मार्वेल के पहुंचने से पहले ही चिल्ला रहे थे। लोग दौड़कर घरों में चले गए और भीतर से दरवाज़े बंद कर लिए। उसने दरवाज़े बंद होने की आवाज़ सुनी तो अंतिम प्रयास किया। भय उससे भी तेज़ दौड़ता हुआ आया और सारे गांव पर छा गया।

"अदृश्य पुरुष आ रहा है! अदृश्य पुरुष!"

'जौली क्रिकेटर्स' में

'जौली क्रिकेटर्स' सराय पहाड़ी के दामन में वहां है, जहां से ट्राम की लाइनें शुरू होती हैं। सराय वाला अपने सुर्ख़ मोटे बाजू 'काउंटर' पर रखे एक पीले चेहरेवाले गाड़ीवान से घोड़ों की बातें कर रहा था। जब कि एक काली दाढ़ी वाला अमरीकन भाषा में एक पुलिस वाले के साथ बातों में व्यस्त था।

"यह कैसा शोर है?" गाड़ीवान ने बाहर जाकर पहाड़ी के ऊपर देखने का प्रयत्न किया। बाहर कोई दौड़ा। "शायद आग लगी है।" सराय वाले ने कहा।

चाप निकट आई और दरवाज़ा ज़ोर से खुला। मार्वेल रोता हुआ भीतर आया और पलटकर दरवाज़ा बंद करने लगा। उसके बाल बिखरे हुए थे, हैट कहीं पीछे गिर पड़ा था और कोट का गला फटा हुआ था। दरवाज़ा कुंडी अड़ जाने से आधा खुला ही रह गया।

"आ रहा है!" भय के मारे उसकी चीख़ निकल गई। "वह आ रहा है! अदृश्य पुरुष मेरे पीछे पड़ा है। भगवान के लिए मुझे बचाओ।"

"दरवाज़े बंद करो।" सिपाही ने कहा। "कौन आ रहा है? मामला क्या है?" वह दरवाज़े के पास गया। उसने कुंडी हटा दी और दरवाज़ा बंद हो गया। अमरीकन ने दूसरा दरवाज़ा बंद किया।

"मुझे भीतर जाने दो।" मार्वेल ने लड़खड़ाते, रोते, मगर किताबें संभाले हुए कहा, "मुझे भीतर जाने दो। मुझे कहीं ताले में बंद कर दो। मैं उसे चकमा देकर निकल आया हूं। वह मेरे पीछे पड़ा है और कहता है कि 'मार डालूंगा।' और मार डालेगा।"

"तुम सुरक्षित हो।" काली दाढ़ी वाले ने कहा, "दरवाज़े बंद हैं। मामला क्या है?"

"मुझे भीतर जाने दो।" मार्वेल की चीख़ निकल गई। और कांप गया क्योंकि दरवाज़े पर सहसा धक्का लगा और बाहर से किसी के थपथपाने और चिल्लाने की आवाज़ आई।

"हैलो!" सिपाही ने कहा, "बाहर कौन है?"

मार्वेल चौखटों से टक्करें मारने लगा, जो दरवाज़ों की तरह दिखाई दे रहे थे। "वह मुझे मार डालेगा। उसके पास चाकू के अलावा कोई चीज़ है। भगवान के लिए..."

"तुम इधर आ जाओ।" सराय वाले ने मदिरा कक्ष का पर्दा ऊपर उठाकर कहा।

दरवाज़े पर दस्तक पड़ रही थी और मार्वेल मदिरा कक्ष के पीछे चला गया था। "दरवाज़ा मत खोलना। बिलकुल मत खोलना। मैं कहां छिपूं?"

"तब यही अदृश्य पुरुष है?" काली दाढ़ी वाले आदमी ने दरवाज़े की ओर संकेत करते हुए कहा।

सहसा सराय की खिड़की टूटी और ग़ली में चीख़ने और दौड़ने की आवाज़ सुनाई दी। सिपाही कुर्सी पर खड़ा बाहर झांक रहा था। जिसमें दरवाज़ा थपथपाने वाले आदमी को वह देख सके। वह आंखें ऊपर उठा नीचे उतरा। "वही है।" उसने कहा। सरायवाला मदिरा कक्ष के दरवाज़े पर खड़ा था जिसके भीतर मार्वेल को बंद किया गया था। उसने टूटी हुई खिड़की को देखा और दो अन्य व्यक्तियों के पास आया।

अब सहसा खामोशी छा गई। "काश! मेरे पास डंडा होता।" सिपाही ने अनमने से दरवाज़े की ओर जाते हुए कहा, "अगर हमने दरवाज़ा खोला तो वह झट आ जाएगा। उसे कोई रोक नहीं सकेगा।"

"दरवाज़ा खोलने की ऐसी जल्दी क्या है?" गाड़ीवान ने चिंतित स्वर में कहा।

"चिटकनियां लगा दो।" काली दाढ़ी वाले ने कहा, "और अगर वह आया..." उसने पिस्तौल दिखाया।

"इससे कुछ नहीं बनेगा। यह तो कत्ल है।" सिपाही ने कहा।

"मुझे मालूम है कि मैं किस देश में हूं।" दाढ़ी वाले ने कहा, "मैं सिर्फ़ उसकी टांगों को निशाना बनाऊंगा। चिटकनियां चढ़ा दो।"

"कोई परवाह नहीं। तुम पिस्तौल चला देना।" सराय वाले ने कहा।

"बहुत अच्छा!" काली दाढ़ी वाले ने कहा। सरायवाला, गाड़ीवान और सिपाही सब एक-दूसरे की ओर देख रहे थे।

"भीतर आओ।" दाढ़ीवाले ने पिस्तौल हाथ में लिए हुए कहा। कोई नहीं आया। दरवाज़ा बंद रहा। पांच मिनट बाद जब एक दूसरे गाड़ीवान ने सावधानी से अपना सिर अंदर किया तब भी वे इंतज़ार कर रहे थे। मार्वेल बैठक का दरवाज़ा खोलकर बाहर निकला और चिंतित स्वर में बोला, "क्या सब दरवाज़े बंद हैं? वह चारों तरफ़ घूम रहा है। वह शैतान से भी तेज़ है।"

"हे भगवान्!" सराय वाले ने कहा, "दरवाज़ों की चौकसी रखो।" उसने घबराते हुए से इधर-उधर देखा। बैठक का दरवाज़ा बंद हुआ और भीतर से खटका

लग गया। "उधर आंगन का दरवाज़ा और व्यक्तिगत दरवाज़ा है। आंगन का दरवाज़ा..."

वह दौड़कर मदिरा कक्ष से बाहर गया।

थोड़ी देर में एक चाकू हाथ में लिए लौटा।

"आंगन का दरवाज़ा खुला था।" सराय वाले ने कहा और उसका मोटा होंठ नीचे को लटक गया।

"वह अब भीतर आ चुका होगा।" पहले गाड़ी वाले ने कहा।

"वह रसोईघर में तो नहीं।" सराय वाले ने कहा, "वहां दो औरतें हैं। उनको तो ख़्याल नहीं कि वह आया हो। उन्होंने देखा..."

और उसी समय किवाड़ की चूल चरवरा कर टूटी और बैठक का दरवाज़ा धम से खुल गया। उन्होंने मार्वेल को पकड़े गए नन्हें खरगोश की भांति आवाज़ निकालते सुना और वे मदिरा कक्ष से उसकी सहायता के लिए दौड़े। काली दाढ़ी वाले आदमी ने पिस्तौल चलाया और उसकी गोली बैठक की पिछली दीवार में लगे हुए आईने में जा लगी, जो टुकड़े-टुकड़े होकर धरती पर जा गिरा।

जब सराय वाले ने भीतर प्रवेश किया तो उसने देखा तो मार्वेल विचित्र ढंग से सुकड़ा हुआ है और रसोईघर और आंगन में खुलने वाले दरवाज़े की ओर धकेला जा रहा है। सराय वाले के देखते-ही-देखते दरवाज़ा खुल गया और मार्वेल को रसोई में घसीट लिया गया। बर्तन खनखनाए और एक चीख़ सुनाई दी। मार्वेल को जबर्दस्ती भीतर खींचकर दरवाज़ा बंद कर लिया गया।

सिपाही सराय वाले के पास से गुज़र कर आगे बढ़ा और एक गाड़ीवान भी उसके साथ था। उसने अदृश्य पुरुष के उस हाथ की कलाई पकड़ ली, जो मार्वेल को कालर से पकड़े हुए था। सिपाही के मुंह पर चपत लगा और वह लड़खड़ाकर पीछे हट गया। दरवाज़ा खुला और मार्वेल ने उसके पीछे छिप जाने का भरसक प्रयत्न किया।

तब गाड़ीवान का हाथ किसी चीज़ पर जा पड़ा और उसने कहा, "मैंने उसे पकड़ लिया।"

सराय वाले के सुर्ख़ हाथों ने भी अदृश्य को स्पर्श किया और वह बोला, "वह यहां है।"

मार्वेल को छुटकारा मिला तो वह धरती पर लेट गया और उसने लड़ने वाले की टांगों के पीछे छिप जाने का प्रयत्न किया। लड़ाई दरवाज़े के निकट हो रही थी। अदृश्य पुरुष की आवाज़ पहली बार सुनाई दी, पुलिस वाले जिस प्रकार ठप-ठप चलते हैं वह उसी प्रकार चीख़ रहा था। तब वह क्रोध में भरकर चिल्लाया और उसके घूंसे मूसलों के सदृश इधर-उधर चलने लगे। गाड़ीवान के कलेजे में ज़ोर की ठोकर लगी, वह हू-हू करके चिल्लाया और दुहरा हो गया। रसोई से बैठक में जाने वाला

दरवाज़ा बंद हुआ। और मार्वेल छिप गया। किचिन में जो लोग थे उन्होंने महसूस किया कि वे सिर्फ़ खाली हवा में लड़ रहे हैं और उसे ही पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं।

"वह कहां गया?" दाढ़ी वाले ने कहा, "बाहर?"

"इधर!" सिपाही ने कहा और वह आंगन की ओर बढ़ा।

एक ईंट उसके सिर पर से सनसनाती गुज़री और रसोई में मेज़ पर रखे चीनी के बर्तनों के दरम्यान गिरकर टूट गई।

"मैं उसे मज़ा चखाता हूं।" दाढ़ी वाले आदमी ने कहा। सहसा एक लोहे का कनस्तर सिपाही के कंधों पर से रगड़ता हुआ आया और जिस ओर से ईंट आई थी उस दिशा में पांच गोलियां लगातार चलीं। गोलियां चलाते समय दाढ़ी वाले आदमी ने अपने हाथ को एक वक्र रेखा में इस प्रकार घुमाया कि गोलियां तंग आंगन में पहिए की तीलियों के सदृश मचल गईं।

निस्तब्धता छा गई। 'पांच कारतूस!' काली दाढ़ी वाले ने कहा, "मैंने खूब हाथ साधकर चलाई। चार इक्के और एक गुलाम! कोई दौड़कर लालटेन लाए ताकि हम उसकी लाश ढूंढ़ सकें।"

डॉ. केम्प का मुलाकाती

डॉक्टर केम्प अपने कमरे में बैठा लिख रहा था कि गोलियों की आवाज़ ने उसे चौंका दिया। 'ठांय, ठांय, ठांय' वे एक के बाद एक छूटीं।

"हैलो!" डॉक्टर फिर कलम मुंह में डालकर सुनने लगा।

"बारडोक में गोलियां कौन चला रहा है? ये गधे अब क्या कर रहे हैं?"

उसने दक्षिणी तरफ़ की खिड़की खोली और उस पर झुककर कस्बे की खिड़कियों, गैस के लैंपों, छतों और आंगनों के काले धब्बों को देखा। यह सबकुछ रात का आभास करा रहा था। "लगता है कि पहाड़ी के नीचे सराय के पास लोगों की भीड़ है।" वह बड़बड़ाया फिर उसकी आंखें कस्बों से दूर बंदरगाह को देखने लगीं, जहां जहाज़ों की रोशनियां चमक रही थीं और घाट जगमगा रहा था। सातवें दिन का चांद पश्चिम की ओर पहाड़ी के ऊपर दिखाई दे रहा था। आकाश स्वच्छ था और तारे छिटके उष्ण कटिबंधीय सितारों से चमक रहे थे।

डॉ. केम्प देखते-ही-देखते विचारों में खो गया और भविष्य में सामाजिक परिस्थितियों की कल्पना करने लगा। पांच मिनट बाद उसकी विचार-तंद्रा भंग हुई और एक गहरी सांस लेने के बाद खिड़की बंद करके फिर लिखने की मेज़ पर जा बैठा।

इसके लगभग एक घंटा बाद बाहर के दरवाज़े की घंटी बजी। गोलियों की आवाज़ सुनने के बाद से वह रुक-रुककर लिख रहा था। वह बैठा सुनने लगा। उसने सुना कि नौकरानी ने घंटी के उत्तर में दरवाज़ा खोला है। वह उसके लौटने का इंतज़ार करने लगा, लेकिन वह नहीं आई। "आश्चर्य है कि कौन आया है?" डॉ. केम्प ने सोचा।

डॉक्टर ने फिर काम शुरू करने का प्रयत्न किया, पर कर नहीं सका, उठकर सीढ़ियों से नीचे उतरा। उसने घंटी बजाई और जंगले पर से झुककर नौकरानी को पुकारा। जब वह हाल में आई तो उससे, "क्या कोई ख़त आया है?"

"कोई सिर्फ़ घंटी बजाकर चला गया।" उसने उत्तर दिया।

"मैं आज रात परेशान हूं।" उसने अपने आपसे कहा और फिर कमरे में जाकर

दृढ़ निश्चय के साथ काम में लग गया। कमरे में सिर्फ़ घड़ी की टिक-टिक और अपने कलम की सर-सर सुनाई दे रही थी और लैंप की परछाई मेज़ पर पड़ रही थी।

उस रात जब डॉक्टर केम्प ने अपना काम ख़त्म किया तो दो बज चुके थे। वह उठा, जंभाई ली और सोने के लिए ऊपर गया। कोट और वास्केट उतारने के बाद महसूस हुआ कि उसे प्यास लगी है। उसने एक मोमबत्ती ली और खाने के कमरे में ह्विस्की और साइफ़न तलाश करने नीचे गया।

अपने वैज्ञानिक अनुसंधान के कारण हर एक चीज़ को ध्यान से देखना डॉ. केम्प का स्वभाव बन गया था। जब वह दोबारा हाल में गया तो उसने सीढ़ियों के निकट फ़र्श पर काला धब्बा देखा, वह ऊपर चढ़ गया और सहसा उसके दिमाग़ में आया कि जरा जानना चाहिए कि वह धब्बा कैसा है। मन में यह बात खटकती रही। वह लौटकर हाल में आया तो ह्विस्की और साइफ़न एक ओर रख दिए और धब्बे को हाथ से छूकर देखा। उसे जान पड़ा कि इस धब्बे में सूखे हुए खून की चिरपिराहट और रंग है।

उसने ह्विस्की उठाई, फिर ऊपर गया और सोचने लगा कि यह खून कहां से आया। उसने सीढ़ियों पर कुछ देखा और हैरान होकर ठहर गया। उसके दरवाज़े के हत्थे पर ख़ून के अनेक धब्बे थे।

उसने अपना हाथ देखा। हाथ बिलकुल साफ़ था। उसने याद किया कि जब वह काम से निपटकर आया था तो दरवाज़ा खुला था, इसलिए उसने तो हत्थे को घुमाया ही नहीं था। वह अपने कमरे में गया। उसका चेहरा शायद पहले से ज़्यादा गंभीर और शांत था। उसकी नज़र इधर-उधर देखती हुई बिस्तर पर पड़ी तो देखा कि पलंगपोश पर खून छिटका हुआ है और चादर फटी हुई है। जब वह पहले कमरे में आया था तो उसने यह नहीं देखा था क्योंकि वह सीधा ड्रेसिंग टेबल के पास चला गया था। सिरहाने की ओर बिस्तर दबा हुआ था जैसे अभी-अभी वहां कोई बैठा हो।

तब उसे कुछ ऐसा महसूस हुआ जैसे उसने एक आवाज़ को 'हे भगवान्!' कहते सुना हो। लेकिन डॉ. केम्प का आवाज़ों में विश्वास नहीं था।

वह खड़ा फटी चादर की ओर ताकता रहा। क्या यह वाक़ई आवाज़ थी? उसने फिर इधर-उधर देखा, लेकिन अस्त-व्यस्त बिस्तर और खून में सनी चादर के अतिरिक्त कुछ नज़र नहीं आया। फिर उसे कमरे में हाथ धोने के नल के निकट पांव की चाप सुनाई दी। सब लोगों के मन में, चाहे वे कितने ही पढ़े-लिखे क्यों न हों, कुछ-न-कुछ अंधविश्वास अवश्य रहता है। डॉ. केंप भ्रम में पड़ गया। उसने दरवाज़ा बंद किया और ड्रेसिंग टेबल के निकट आकर शराब रख दी। सहसा वह चौंक उठा, क्योंकि उसने अपने और हाथ धोने के नल के बीच खून से भरी एक पट्टी हवा में लटकते देखी।

वह चकित उसकी ओर देखता रहा। वह एक खाली पट्टी थी ठीक ढंग से बंधी

हुई लेकिन खाली। वह उसे पकड़ने आगे बढ़ने ही वाला था कि एक स्पर्श और समीप ही एक आवाज़ ने उसे रोक लिया।

"केम्प!" आवाज़ ने कहा।

"उंह?" केम्प ने कहा और उसका मुंह खुले का खुला रह गया।

"घबराओ मत," आवाज़ ने कहा, "मैं अदृश्य पुरुष हूं।"

केम्प ने कुछ क्षण उत्तर नहीं दिया, सिर्फ़ पट्टी की ओर देखता रहा, फिर बोला, "अदृश्य पुरुष?"

"मैं अदृश्य पुरुष हूं।" आवाज़ ने दोहराया।

जिस कहानी का वह सुबह से मज़ाक उड़ा रहा था, केम्प के दिमाग़ में वह दौड़ गई। उस समय न तो वह बहुत ही भयभीत जान पड़ता था और न बहुत स्तब्ध। उसे स्थिति का बोध धीरे-धीरे हुआ।

"मेरा ख़्याल था कि यह सब झूठ है।" उसने कहा। उसके मस्तिष्क में जो विचार सबसे ऊपर था वह था अदृश्य पुरुष के बारे में सुबह का वार्तालाप। "क्या तुमने पट्टी बांध रखी है?"

"हां।" अदृश्य पुरुष ने उत्तर दिया।

"ओह!" केम्प ने जैसे होश में आते हुए कहा, "लेकिन यह सब बकवास है। कोई चालाकी है।" वह एकाएक आगे बढ़ा। हाथ पट्टी की ओर फैलाया कि अदृश्य अंगुलियों का स्पर्श हुआ।

वह एकदम पीछे हटा और उसके चेहरे का रंग बदल गया।

"केम्प, भगवान् के लिए अपने होश ठीक रखो! मुझे तुम्हारी सहायता चाहिए।"

किसी ने उसका बाजू पकड़ लिया। "केम्प, सीधे खड़े रहो।" आवाज़ ने कहा और बाजू पर गिरफ्त मज़बूत हो गई। इस गिरफ्त से अपने आपको मुक्त कर लेने की एक उत्कट अभिलाषा केम्प के मन में उत्पन्न हुई। पट्टी बंधी बांह के हाथ ने उसे कंधे से पकड़ लिया और उसे लंगड़ी लगाकर बिस्तर पर चित्त गिरा दिया। उसने चिल्लाने के लिए मुंह खोला तो चादर दांतों के बीच ठूंस दी गई। अदृश्य पुरुष ने उसे गिरा ज़रूर दिया था लेकिन केम्प की बांहें आज़ाद थीं और उसने ज़ोर से मुक्का और ठोकर मारने की कोशिश की।

"आराम से बात सुनो," अदृश्य पुरुष उसे दबाए हुए था, यद्यपि उसकी बगल में मुक्का लगा था, "ईश्वर की सौगंध, तुम मुझे एक मिनट में पागल बना दोगे। चुपचाप लेट जाओ, मूर्ख!" अदृश्य पुरुष ने गुर्रा कर कहा।

केम्प ने कुछ क्षण संघर्ष जारी रखा और फिर निश्चल लेट गया।

"अगर तुम चिल्लाओगे तो मैं तुम्हारा मुंह तोड़ दूंगा।" अदृश्य पुरुष ने उसके मुंह से चादर हटाकर कहा। "मैं अदृश्य पुरुष हूं। न यह कोई मूर्खता है और न कोई

जादू। मैं सचमुच अदृश्य पुरुष हूं और मुझे तुम्हारी सहायता की ज़रूरत है। मैं तुम्हें चोट पहुंचाना नहीं चाहता, लेकिन अगर तुम उजड्ड देहाती का रवैया दिखाओगे तो लगानी पड़ेगी। क्या तुम मुझे पहचानते नहीं केम्प ग्रिफ़िन, यूनिवर्सिटी कालेज वाला ग्रिफ़िन।"

"मुझे उठने दो। मैं जहां हूं, वहीं बैठा रहूंगा। मुझे एक क्षण के लिए शांत बैठने दो।" केम्प ने कहा।

वह बैठ गया और गर्दन सहलाने लगा।

"मैं यूनिवर्सिटी कालेज वाला ग्रिफ़िन हूं और मैंने अपने आपको अदृश्य बना लिया है। मैं एक साधारण व्यक्ति हूं। एक ऐसे व्यक्ति से जिसे तुम जानते हो, बस अदृश्य हो गया हूं।"

"ग्रिफ़िन?" केम्प ने कहा।

"ग्रिफ़िन," आवाज़ ने उत्तर दिया, "मैं तुमसे जूनियर विद्यार्थी था, क़द छः फुट, छाती चौड़ी, चेहरा गुलाबी और सफ़ेद, आंखें सुर्ख़ जिसने रसायन में मेडल जीता था।"

"कुछ याद नहीं आ रहा," केम्प ने कहा, "दिमाग़ ही काम नहीं कर रहा। इस बात का ग्रिफिन से क्या संबंध है?"

"मैं ग्रिफ़िन हूं।"

केम्प सोचने लगा और बोला, "भयानक बात है। लेकिन किसी मनुष्य को अदृश्य बनाने के लिए क्या जादूगरी दिखानी पड़ती होगी?"

"यह जादूगरी नहीं, यह एक प्रक्रिया है जिसके लिए समझ-बूझ और बुद्धि…"

"यह भयानक बात है।" केम्प ने कहा, "कैसे…?"

"यह काफ़ी भयानक है।" लेकिन मैं घायल हो गया हूं। तकलीफ में हूं और थका हुआ हूं।… हे भगवान्! केम्प, तुम एक इंसान हो। इंसान की दृष्टि से देखो। मुझे भोजन और शराब दो और मुझे बैठने दो।"

केम्प ने पट्टी को कमरे में चलते देखा, तब एक बेंत की क़ुर्सी फ़र्श पर घिसटती हुई चारपाई के निकट आ गई। वह चरचराई और सीट एक इंच के लगभग नीचे धंस गई। उसने अपनी आंखें मलीं और गर्दन दोबारा सहलाई। "इसने तो भूतों को भी मात कर दिया।" उसने कहा और मूर्खता से हंसा।

"यह ठीक है। अब तुम समझदार होते जा रहे हो।"

"या सनकी।" वह फिर हंसा।

"मुझे कुछ ह्विस्की दो। मैं मर रहा हूं।"

"मुझे तो ऐसा नहीं लगा। तुम कहां हो? अगर मैं उठूं तो तुमसे टकरा तो नहीं जाऊंगा? वहां! ठीक है। यह ह्विस्की है, मैं तुम्हें कहां दूं?"

कुर्सी चरचराई और केम्प ने महसूस किया कि गिलास किसी ने पकड़ लिया है। मन न होते हुए भी गिलास उसने छोड़ दिया। गिलास कुर्सी के अगले बाजू से बीस इंच ऊपर उठकर ठहर गया। केम्प अत्यंत घबराहट के साथ उसकी ओर देखता रहा।

"यह तो सम्मोहिनी का जादू है।"

"वाहियात!" आवाज़ ने कहा।

"यह पागलपन है।"

"मेरी बात सुनो।"

"मैं तो आज सुबह," केम्प ने कहना शुरू किया, "दिखा रहा था कि अदृश्यता–"

"तुम क्या दिखा रहे थे, इस पर खाक डालो। मैं भूखा हूं।" आवाज़ ने कहा, "और बिना कपड़े के सर्दी भी काफ़ी लगती है।"

"भोजन?" केम्प ने पूछा।

"ह्विस्की का गिलास खाली हो गया," अदृश्य पुरुष ने उसे नीचे रखते हुए कहा, "क्या तुम्हारे पास ड्रेसिंग गाउन है?"

केम्प ने धीमे स्वर में कुछ उत्तर दिया। वह कपड़ों की अलमारी के पास गया और धुंधले बैंगनी रंग की एक पोशाक लाया। "यह ठीक है?" उसने पूछा। वह उससे ले ली गई। वह एक क्षण हवा में लटकती रही, फड़फड़ाई, फिर निश्चित होकर शान से खड़ी हो गई। अपने आप बटन बंद्ब करने लगी और कुर्सी पर बैठ गई।

"जांघिया, जुराबें और स्लीपर से आराम मिलेगा।" आवाज़ ने विनम्रता से कहा। "और फिर भोजन।"

"कुछ भी कहो। ज़िंदगी में पहले कभी मुझे ऐसी हिमाक़त से वास्ता नहीं पड़ा।"

पहले उसने अलमारी में से ये चीज़ें निकालीं, फिर नीचे जाकर किचन की तलाशी ली। वह कुछ ठंडा मांस और रोटी लेकर आया और एक हल्की-सी मेज़ खींचकर उन्हें मेहमान के सामने रख दिया।

"छुरी-कांटे की ज़रूरत नहीं।" मेहमान ने कहा। एक मांस का टुकड़ा हवा में ऊपर उठा और फिर चबाने की आवाज़ आई।

"चलो, कुछ मिला तो सही।" अदृश्य पुरुष ने रोटी और मांस काफी मात्रा में ठूंसकर उसे निगलते हुए कहा।

"कलाई तो अब ठीक होगी?" केम्प ने कहा।

"ठीक ही है। लेकिन यह इत्तफ़ाक की बात है कि मैं पट्टी बांधने तुम्हारे ही घर में आया। मेरा प्रथम सौभाग्य! तुम्हें कष्ट तो होगा, लेकिन मैं रात को यहीं सोऊंगा। तुम्हें मेरे लिए इतना तो करना ही होगा। खून काफ़ी बह गया है। जब जम

जाता है तो दिखाई देने लगता है। मैं सिर्फ़ जीवित तंतुओं को बदल सकता हूं वह भी सिर्फ़ तब तक के लिए जब तक कि मैं जीवित हूं..."

"तुमने यह किया कैसे?" केम्प ने पूछा। "मुझे तो यह एकदम असंभव जान पड़ता है।"

"विश्वसनीय, बिलकुल विश्वसनीय!" अदृश्य पुरुष ने कहा।

उसने उठकर ह्विस्की की बोतल उठाई। केम्प गपड़-शपड़ खाती हुई ड्रेसिंग गाउन को देखता रहा। मोमबत्ती के प्रकाश की एक किरण दाएं कंधे के एक सुराख़ में से दाखिल होकर बाईं पसली के नीचे प्रकाश का त्रिकोन बना रही थी।

"ये गोलियां कैसी थीं? गोलियां चलना शुरू कैसे हुईं?" डॉक्टर ने पूछा।

"एक मूर्ख आदमी था—एक प्रकार से मेरा साथी था। उसने मेरा रुपया चुराने का प्रयत्न किया। रुपया चुरा ही ले गया।"

"क्या वह भी अदृश्य है?"

"नहीं।"

"तो?"

"क्या मुझे सबकुछ बताने से पहले खाने को कुछ और नहीं मिल सकता? मैं भूखा हूं, तकलीफ़ में हूं और चाहते हो कि मैं तुम्हें कहानियां सुनाऊं।"

केम्प ने उठते हुए पूछा, "तुमने तो गोली नहीं चलाई?"

"मैंने नहीं चलाई।" मेहमान ने कहा, "कोई मूर्ख आदमी था। मैंने तो कभी किसी को यों अंधाधुंध गोली चलाते नहीं देखा। वे सब डर गए थे। खैर, उन्हें लानत भेजो। मुझे कुछ और भोजन चाहिए।"

"देखता हूं, नीचे और क्या है। लेकिन अधिक की आशा नहीं।" केम्प ने कहा।

जब वह खा चुका और उसने खूब पेट भर लिया, तब अदृश्य पुरुष ने सिगार मांगा। केम्प चाकू तलाश ही रहा था कि उसने सिगार के सिरे को दांतों से काटकर ऊपर की पत्ती निकाली और गाली दी।

उसे सिगार पीते देखना भी एक तमाशा था। जब धुआं नीचे जाता था तो उसका मुंह, कंठ और भोजन-नली धुएं की चकरी-सी दिखाई देती थी।

"अगर तुम्हारे यहां न आया होता केम्प, तो मैं सिगार पीने के आनंद से वंचित रह जाता," उसने गहरे लंबे कश लगाते हुए कहा, "तुम अवश्य मेरी सहायता करो। मुझे तुमसे अभी हाथापाई करनी पड़ती! क्या करूं, मैं एक तरह से पागल हो गया था। क्या-क्या मुझ पर गुज़री! लेकिन हम बहुत कुछ करेंगे। मैं तुम्हें बताता हूं।"

उसने अपने लिए और ह्विस्की तथा सोडा डाला। केम्प ने उठकर इधर-उधर देखा और दूसरे कमरे से अपने लिए गिलास लाया।

"बड़ी अजीब हालत है, लेकिन मैं भी पी लूं।"

"इस बारह वर्ष में तुममें ज़्यादा परिवर्तन नहीं हुआ, केम्प। तुम योजना के साथ धीरे-धीरे काम करते हो। अब हम इकट्ठे काम करेंगे।"

"लेकिन तुमने यह कैसे किया?" केम्प ने कहा, "और तुम्हारी यह दशा कैसे हुई?"

"मुझे पहले आराम से सिगार पी लेने दो, फिर मैं बताऊंगा।"

लेकिन उस रात कहानी बयान नहीं हुई। अदृश्य पुरुष की कलाई दर्द कर रही थी, वह थका हुआ था और सराय की घटना और पहाड़ी तक पीछा किया जाना उसके मस्तिष्क में बार-बार उभर रहा था। वह तेज़-तेज़ कश लगा रहा था और कभी-कभी मार्वेल का नाम लेने लगता था। और नाराज़ होता जा रहा था। केम्प ने भरसक समझने का प्रयत्न किया।

"वह मुझसे डरता था, मैं देखता था कि वह मुझसे डरता है।" अदृश्य पुरुष ने कई बार दोहराया, "वह मुझे चकमा देना चाहता था—उसने कई बार कोशिश की। मैं भी कितना मूर्ख था!"

"कुत्ता!"

"मुझे गुस्सा खा जाता था। मुझे उसको मार डालना चाहिए था।"

"तुम्हें रुपया कहां से मिला?" केम्प ने पूछा।

अदृश्य पुरुष एक क्षण के लिए मौन रहा और फिर बोला, "मैं आज रात तुम्हें यह नहीं बता सकता।"

उसने एक आह भरी और अपने अदृश्य सर को अदृश्य हाथों पर थामा।

"केम्प!" वह बोला, "तीन दिन से घंटा आध घंटा आंख झपकाने के अलावा मैं बिलकुल नहीं सोया। अब मैं जल्द सोना चाहता हूं।"

"तो मेरे इस कमरे में सो जाओ।"

"लेकिन मैं सो कैसे सकता हूं? अगर मैं सो गया तो वह बच निकलेगा। उफ़! क्या फ़र्क पड़ेगा इससे?"

"तुम्हारा घाव कैसा है?" केम्प ने पूछा।

"कुछ नहीं, खरोच लग गई है और खून निकल रहा है। मुझे बड़ी नींद आ रही है।"

"तो सो क्यों नहीं जाते?"

लगा कि अदृश्य पुरुष केम्प को संदिग्ध दृष्टि से देख रहा है। "क्योंकि मुझे अपने ही आदमियों द्वारा पकड़े जाने का ख़तरा है।" उसने कहा।

केम्प चौंका।

"मैं कितना मूर्ख हूं!" उसने मेज़ पर मुक्का मारते हुए कहा, "मैंने यह विचार तुम्हारे दिमाग़ में डाल दिया है।"

अदृश्य पुरुष की नींद

अदृश्य पुरुष यद्यपि थका हुआ था, घायल था तथापि उसने केम्प के इस वचन पर विश्वास नहीं किया कि यहां उसकी स्वतंत्रता को कोई खतरा नहीं है। उसने कमरे की दोनों खिड़कियों के पर्दे गिरा लिए, फ्रेम खोलकर देखा और केम्प की इस बात की जांच की कि उनमें से निकल जाना संभव है। बाहर रात निस्तब्ध थी और नया चांद क्षितिज पर डूब रहा था। तब उसने सोने के कमरे और दोनों ड्रेसिंग कमरों की चाबियों की जांच करके विश्वास कर लिया कि ये भी स्वतंत्रता का माध्यम है। अंत में उसने अपना संतोष व्यक्त किया। वह फ़र्श पर खड़ा हो गया और केम्प को जंभाई की आवाज़ सुनाई पड़ी।

"मुझे अफ़सोस है कि अपनी सारी कहानी आज रात तुम्हें नहीं सुना सकता।" अदृश्य पुरुष ने कहा, "मैं बहुत थका हुआ हूं। निस्संदेह यह सबकुछ बड़ा भयानक और अविश्वसनीय है, लेकिन तुम्हारे आज सुबह के तमाम तर्कों के बावजूद यह संभव है। मैंने एक खोज की है। मैं इसे अपने तक सीमित रखना चाहता हूं, लेकिन नहीं रख सकता। मुझे किसी को अपना सहयोगी बनाना होगा। और तुम··· हम ऐसे काम कर सकते हैं··· लेकिन कल। इस समय केम्प, ऐसा महसूस हो रहा है कि या तो मैं सो जाऊं या मेरा सिर फट जाएगा।"

कमरे के मध्य में खड़ा केम्प बिना सिर की पोशाक की ओर देखते हुए बोला, "अच्छा! तुम सोओ। मैं चलता हूं। विश्वास नहीं आता। अगर ऐसी तीन घटनाएं हो जाएं और मेरे सारे विश्वासों को उलट-पुलट दें तो मैं पागल हो जाऊंगा। लेकिन यह तो सच है! क्या तुम्हें कुछ और चाहिए?"

"बस, अब गुडनाइट कर लो!" ग्रिफ़िन ने कहा।

"गुडनाइट!" केम्प ने एक अदृश्य हाथ से हाथ मिलाते हुए कहा, और दरवाज़े की ओर चल पड़ा।

सहसा ड्रेसिंग गाउन जल्दी-जल्दी डग भरती हुई उसकी ओर आई। "मेरी बात समझ ली।" ड्रेसिंग गाउन ने कहा, "मुझे पकड़ने या नुकसान पहुंचाने का कोई प्रयत्न मत करना। अथवा···"

केम्प के चेहरे का रंग तनिक बदला और वह बोला, “मेरा ख़्याल है कि मैं तुम्हें वचन दे चुका हूं।”

केम्प दरवाज़ा बंद करके बाहर निकला और अदृश्य पुरुष ने भीतर से ताला लगा लिया। जब वह हैरान खड़ा कुछ सोच रहा था, तेज़-तेज़ कदम ड्रेसिंग रूम की तरफ आए और उसे भी ताला लगा लिया। केम्प ने अपने माथे पर हाथ मारा, “क्या मैं स्वप्न देख रहा हूं दुनिया पागल हो गई है अथवा मैं पागल हो गया हूं।”

वह हंसा और बंद दरवाज़े को स्पर्श किया। “एक अविश्वसनीय घटना ने मुझे मेरे ही कमरे से बाहर निकाल दिया।” वह बड़बड़ाया।

वह सीढ़ियों के पास आया और पलटकर बंद दरवाज़े को देखा, “यह सत्य है।” उसने अपनी दर्द करती गर्दन सहलाते हुए कहा, “इसे झुठलाया नहीं जा सकता!”

“लेकिन…”

उसने निराशापूर्वक सिर हिलाया और पलटकर सीढ़ियां उतर गया।

उसने खाने के कमरे का लैंप जलाकर सिगार निकाला और बड़बड़ाते हुए इधर से उधर घूमने लगा। कभी-कभी वह अपने आप से तर्क करने लगता।

“अदृश्य!” उसने कहा।

“क्या कोई अदृश्य जीव भी होता है?… समुद्र में हां। हज़ारों लाखों। तमाम लार्वा, जीवाणु, नन्हीं-नन्हीं मछलियां और कितने ही जीव-जन्तु! समुद्र में तो दृश्य की अपेक्षा अदृश्य जीव अधिक हैं। मुझे पहले इसका ख़्याल ही नहीं आया… और तालाबों में भी तालाब के वे सब जीव-जन्तु, वे रंगीन नन्हीं जेली!… लेकिन हवा में! नहीं! ”

“यह नहीं हो सकता।”

“लेकिन आख़िर क्यों नहीं?”

“अगर आदमी शीशे का बना हुआ हो तो भी दिखाई देगा।”

उसने यों ही सोचते बड़बड़ाते तीन सिगार राख कर दिए और राख कालीन पर फैल गई। तब उसने आश्चर्य व्यक्त किया। डॉक्टर केम्प प्रेक्टिस नहीं करता था, फिर भी उसका छोटा-सा कंसल्टिंग रूम था। अब उसमें आकर गैस जलाई। सुबह का अख़बार यों ही एक ओर फेंका पड़ा था। उसने अख़बार उठाकर एक पृष्ठ निकाला, जिस पर 'इपिंग वाली विचित्र कहानी' प्रकाशित हुई थी, जिस पर पोर्ट स्टो में नाविक का मार्वेल से झगड़ा हुआ था। केम्प इसे जल्दी-जल्दी पढ़ गया।

“कोई भी व्यक्ति अपने दुर्भाग्य से परिचित नहीं। आख़िर वह करना क्या चाहता है?”

डॉक्टर ने अख़बार फेंक दिया और उसकी आंखें कुछ और खोजने लगीं। “ओह!” उसने 'सेंट जेम्स गज़ट' उठाया जो वैसे ही बंद पड़ा था। “इससे सब हाल

सही-सही मालूम होगा।" केम्प ने कहा और अख़बार खोला। एक लंबे शीर्षक पर दृष्टि पड़ी–'ससैक्स में पूरा गांव पागल!'

"हे भगवान्!" केम्प ने कहा और इपिंग की कल अपराह्न की घटनाओं को बड़ी उत्सुकता से जल्दी-जल्दी पढ़ने लगा। एक बार पढ़कर दोबारा पढ़ा। 'दाएं-बाएं बार करता हुआ गलियों में दौड़ता फिरा। जैम्फ़र्स बेहोश है। हक्स्टर बड़े कष्ट में है–उसके साथ क्या बीती, अभी नहीं बता सकता। पादरी का दुखप्रद अपमान। भय से स्त्रियों का बुरा हाल। खिड़कियां तोड़ दी गई, "यह सारी कहानी मनगढ़ंत है। इसका न छपना बेहतर था।"

उसने अख़बार फेंक दिया और शून्य में झांकने लगा, "शायद मनगढ़ंत ही हो!"

उसने अख़बार फिर उठाया और सारा वृतांत फिर पढ़ा।

"लेकिन वह दूसरा आदमी कब आ घुसा? यह उसका पीछा क्यों कर रहा था?"

वह एकदम काउच पर बैठ गया।

"वह सिर्फ़ अदृश्य ही नहीं। पागल है और हत्या भी कर सकता है..."

जब सुबह की सफ़ेदी लैंप के प्रकाश और सिगार के धुएं में आकर मिलने लगी, केम्प उस समय भी कमरे में घूम रहा था और इस अविश्वसनीय घटना पर विचार कर रहा था।

वह इतना उत्तेजित था कि उसे नींद नहीं आ रही थी। नौकर ऊंघते हुए से ऊपर आया तो उसे यों टहलता देखकर सोचने लगा कि शायद अधिक पढ़ने से बीमार हो गया है। उसने नौकरों को असाधारण लेकिन स्पष्ट आदेश दिए कि वे ऊपर पढ़ने के कमरे में दो आदमियों का नाश्ता लगा दें और खुद नीचे की मंज़िल में रहें। तब वह सुबह का अख़बार आने तक वहीं टहलता रहा। अख़बार में कल शाम की घटनाओं के अलावा पोर्ट बरडोक की दिलचस्प कहानी थी। इससे केम्प के 'जोली क्रिकेटर्स' की घटना मालूम हुई और मार्वेल का नाम मालूम हुआ। "उसने मुझे चौबीस घंटे अपने साथ रखा।" मार्वेल ने बताया। इपिंग की टेलीग्राफ तार काटने की भी बात लिखी थी, लेकिन अदृश्य पुरुष और मार्वेल के संबंध पर कुछ प्रकाश नहीं पड़ता था। क्योंकि मार्वेल ने तीन पुस्तकों और पैसों की बात छिपा ली थी। अब कहानी मनगढ़ंत अथवा बनावटी नहीं लग रही थी। संवाददाता पूर्ण विवरण मालूम कर रहे थे।

केम्प ने इस घटना संबंधी एक-एक पंक्ति पढ़ी और फिर नौकरानी को उस दिन के सब अख़बार लाने को भेजा। वे भी उसने पढ़ डाले।

"वह अदृश्य है," उसने कहा, "यह तो लगता है जैसे क्रोध पागलपन बनता

जा रहा हो। वह क्या कुछ नहीं कर सकता। और वह ऊपर हवा की भांति स्वतंत्र है। मुझे क्या करना चाहिए?"

"उदाहरण के लिए, क्या यह विश्वासघात होगा अगर… नहीं।"

वह कोने में पड़े डैस्क के पास गया और एक पुर्ज़ा लिखना शुरू किया। आधा लिखकर फाड़ दिया और दोबारा लिखा। लिखकर पढ़ा और उस पर विचार किया। तब लिफ़ाफ़ा लेकर उस पर पता लिखा—'कर्नल एडी, पोर्ट बरडोक।'

इस समय अदृश्य की आंख खुली। वह कुछ उत्तेजित था और केम्प ने ऊपर कमरे में उसके पांव की तेज़-तेज़ चाप सुनी। तब एक कुर्सी फेंकी गई जिससे हाथ धोने का बर्तन टूट गया। केम्प दौड़कर ऊपर गया और दरवाज़े पर दस्तक दी।

कुछ प्रथम सिद्धान्त

"क्या बात है?" जब दरवाज़ा खुला, तो केम्प ने ग्रिफ़िन से पूछा।

"कुछ नहीं।" उत्तर मिला।

"लेकिन यह शोर! टूटने की आवाज़ क्या थी?"

"क्रोध का दौरा," अदृश्य पुरुष ने कहा, "मेरा यह बाजू दर्द कर रहा है।"

"तुम्हें ये दौरे पड़ते रहते हैं?"

"हां।"

केम्प ने कमरा पार किया और टूटे हुए शीशे के टुकड़े उठाए। "तुम्हारा सब हाल छप चुका है।" केम्प ने टुकड़े हाथ में लिए कहा, "इपिंग और बरडोक में जो कुछ भी हुआ। दुनिया को अपने अदृश्य नागरिक के बारे में मालूम हो चुका है। लेकिन यह किसी को मालूम नहीं कि तुम यहां हो।"

अदृश्य पुरुष बड़बड़ाया।

"भेद खुल चुका है। मैं सोचता हूं यह भेद ही है। मुझे मालूम नहीं तुम्हारी योजनाएं क्या हैं, पर मैं तुम्हारी सहायता करने को उत्सुक हूं।"

अदृश्य पुरुष चारपाई पर बैठ गया।

"ऊपर नाश्ता रखा है।" केम्प ने यथासम्भव सहजता से कहा, और खुश हुआ कि उसका मेहमान चलने को उठ खड़ा हुआ। केम्प आगे-आगे चलता हुआ उसे ऊपर ले गया।

"इससे पहले कि हम कुछ और करें, मैं आपकी इस अदृश्यता के बारे में कुछ अधिक जानना चाहूंगा।" केम्प ने घबराई हुई-सी दृष्टि खिड़की के बाहर डालते हुए एक ऐसे व्यक्ति के स्वर में कहा जो बातचीत के लिए बातें कर रहा हो। ग्रिफ़िन नाश्ते की मेज़ पर उसके सामने बैठा था। एक गाउन थी जिसका न सिर था न हाथ थे। वह अपने अदृश्य होठों को अजीब ढंग से तौलिए से पोंछ रहा था।

"यह बहुत ही सीधी और समझ में आने वाली बात है।" ग्रिफ़िन ने तौलिया अलग रखते हुए कहा।

"बेशक तुम्हारे लिए सीधी है, लेकिन···" केम्प हंसा।

"शुरू में मुझे भी बड़ी विचित्र लगती थी लेकिन अब, हे भगवान्! खैर, अब हम बड़े-बड़े काम करेंगे। यह बात मुझे पहले-पहल चेसिल स्टो में सूझी।"

"चेसिल स्टो?"

"लंडन से मैं वहां गया। तुम्हें मालूम है कि मैंने रसायन छोड़कर पदार्थ विज्ञान ले लिया था। प्रकाश में मेरी विशेष दिलचस्पी थी।"

"फिर?"

"प्रकाशकीय घनत्व। यह पूरा विषय पहेलियों का एक जाल है, जिसके भीतर से उसका हल झलकता है। मेरी उम्र उस समय बाईस साल थी और मन में उत्साह था। मैंने सोचा कि मैं सारा जीवन इस कार्य के लिए अर्पित कर दूंगा। तुम जानते हो कि हम बाईस साल की अवस्था में ज्ञान के कितने भूखे होते हैं!"

"भूखे तब और भूखे अब!" केम्प ने कहा।

"जैसे सब कुछ जान लेना ही एक संतोष हो। मैं एक हब्शी के सदृश काम में जुट गया। छः महीने बाद सहसा इस समस्या के हल के लिए एक प्रकाश-किरण दिखी। मुझे रंगों का और प्रकाश-वक्रता का सामान्य सिद्धान्त—एक फार्मूला—मिल गया। एक ज्यामितीय फार्मूला जिसमें चार विधाएं हैं। मूर्ख, साधारण लोग अथवा साधारण गणित शास्त्री नहीं समझ पाते कि एक साधारण सर्वमान्य सिद्धान्त का पदार्थ विज्ञान के विद्यार्थी के लिए कितना महत्त्व है। पुस्तकों में—उन पुस्तकों में जो मार्वेल ने छिपा रखी हैं, अद्भुत बातें हैं, चमत्कार हैं। यह कोई पद्धति नहीं, एक विचार था जिसे पद्धति में परिणत किया जा सकता है। और इस पद्धति द्वारा किसी पदार्थ की आकृति, चाहे वह ठोस हो अथवा द्रव, आवर्तनांक कम करके हवा के बराबर पारदर्शक बनाई जा सकती थी।"

"बड़ी विचित्र बात है!" केम्प ने कहा, "लेकिन मैं समझ नहीं पाया। इस पद्धति द्वारा किसी पत्थर को बिगाड़ देना सम्भव है, पर एक मनुष्य की अदृश्यता तो बड़ी दूर की चीज़ है।"

"ठीक है।" ग्रिफ़िन ने कहा, "लेकिन तुम यह तो मानोगे कि दृश्य वस्तुओं की प्रकाश पर जो क्रिया होती है, दृश्यता उसी पर निर्भर करती है। अच्छा, मैं प्रारम्भिक तथ्य तुम्हारे सामने ऐसे रखता हूं जैसे तुम कुछ नहीं जानते। इससे मेरा भाव स्पष्ट हो जाएगा। तुम जानते हो कि पदार्थ या तो प्रकाश को शोषित करते हैं, या परावर्तित करते हैं, अथवा आवर्तित करते हैं, या तीनों बातें एक साथ करते हैं। अगर तीनों में से कोई भी बात न हो तो वह पदार्थ नज़र नहीं आएगा। मिसाल के लिए तुम एक चौकोर लाल संदूक देखते हो क्योंकि रंग कुछ प्रकाश को शोषित करता है, कुछ को परावर्तित करता है, यों तमाम लाल रोशनी तुम तक पहुंचती हैं। अगर वह प्रकाश का कोई एक भाग शोषित न कर तमाम परावर्तित कर दे तो वह चमकदार सफ़ेद संदूक होगा। चांदी! मोती का संदूक आम सतह से न तो अधिक शोषित करेगा और न अधिक परावर्तित करेगा, लेकिन जहां-तहां से प्रकाश को परावर्तित और आवर्तित करेगा। और अगर तुम साधारण कांच

की एक चादर पानी में अथवा उससे भी अधिक घनत्व वाले द्रव में फेंक दो तो वह दिखाई ही नहीं देगी क्योंकि पानी में से जो प्रकाश गुज़रेगा, उसका चादर पर कोई प्रभाव नहीं होगा। वह उतना ही अदृश्य रहेगा जितनी कि कार्बन अथवा हाइड्रोजन गैस हवा में अदृश्य है। और वह भी ठीक इसी कारण से।

"हां, ठीक है।" केम्प ने कहा, "आज स्कूल का कोई विद्यार्थी ये बातें भली भांति समझ सकता है।"

"ऐसा ही एक और तथ्य है जिसे स्कूल का हरएक विद्यार्थी जानता है। केम्प! अगर कांच की एक चादर को पीसकर चूरा बना लिया जाए तो वह हवा में कहीं अधिक दृश्य हो जाता है। कारण यह है कि चूरा बनकर कांच की अनेक सतहें बन जाती हैं। कांच की चादर की सिर्फ दो सतहें होती हैं। चूरे में जितने कण होते हैं उन सबसे प्रकाश परावर्तित होता है, और बहुत कम चूरे के पार जाता है। लेकिन अगर इस चूरे को पानी में डाला जाए तो एकदम लुप्त हो जाता है। कांच के चूरे और पानी के आवर्तनांक लगभग समान हैं, इसलिए एक में से दूसरे में जाते हुए बहुत कम प्रकाश परावर्तित या आवर्तित होता है।

"कोई भी विमल पदार्थ समान वर्तनांक वाले द्रव में डालने से अदृश्य हो जाता है। और अगर तुम एक क्षण विचार करो तो कांच के चूरे को हवा में भी लुप्त किया जा सकता है। अगर उसका वर्तनांक हवा के वर्तनांक के बराबर बना दिया जाए। तब प्रकाश जब कांच से हवा में जाएगा तो वह न तो परावर्तित होगा और न आवर्तित।"

"हां, हां।" केम्प ने कहा, "लेकिन आदमी कांच का चूरा नहीं।"

"नहीं," ग्रिफ़िन ने कहा, "वह अधिक पारदर्शी है।"

"वाहियात!"

"यह एक डॉक्टर कह रहा है। अजीब बात है। क्या तुमने अपना पदार्थ विज्ञान दस साल में सब भुला दिया? उन सब पदार्थों के बारे में सोचो जो पारदर्शी हैं, लेकिन ऐसे लगते नहीं। उदाहरण, काग़ज़ पारदर्शी रेशों का बना होता है। सफ़ेद काग़ज़ पर तेल मल दो, कणों के बीच के छिद्र तेल से भर जाएंगे। सतह के अलावा कहीं परावर्तन अथवा आवर्तन न होगा और काग़ज़ शीशे के सदृश्य पारदर्शी हो जाएगा। सिर्फ काग़ज़ ही क्यों, रुई के रेशों, लकड़ी के रेशे और हड्डियां, मांस व बाल, नाखून और नसें दरअसल खून की सुर्खी और बालों की कालिख के अतिरिक्त समस्त मानव शरीर पारदर्शी रेशों का बना हुआ है। किसी भी जीव के रेशे अधिकांश में पानी से अधिक अपारदर्शी नहीं हैं।

"ठीक है!" केम्प ने कहा, "मैं कल रात में सिर्फ़ समुद्र के लावी और जेली मछली की बात सोच रहा था।"

"अब तुम समझे! लंडन छोड़ने के एक साल बाद से जो कुछ मेरे मन में था, मैंने किसी को नहीं बताया। मुझे भयानक और विपरीत परिस्थितियों में काम करना

पड़ता था। मेरा प्रोफेसर होबेमा विचारों का चोर था, वह प्रति क्षण टोह में रहता था और तुम वैज्ञानिक संसार की दुष्ट व्यवस्था से परिचित हो। मैं अपनी खोज प्रकाशित करके उसे श्रेय नहीं देना चाहता था। मैं काम करता रहा और मुझे विश्वास होता गया कि मैं अपने फार्मूले को व्यावहारिक रूप दूंगा। मैंने इस बारे में किसी को भी नहीं बताया क्योंकि मैं चाहता था कि यह पूर्ण रूप से दुनिया को मालूम हो और मुझे एकदम ख्याति प्राप्त हो जाए। कुछ खाली जगहें भरने के लिए मैंने रंगों के प्रयोग शुरू किए और मैंने सहसा बिलकुल संयोग से शारीरिक विज्ञान में एक खोज की।"

"हां!"

"तुम जानते हो, खून के सुर्ख़ पदार्थ को सफ़ेद—रंगहीन—बनाया जा सकता है, और शरीर में उसकी जो क्रिया है, वह फिर भी वही रहे!"

केम्प असीम आश्चर्य से चिल्लाया।

अदृश्य पुरुष उठा और कमरे में टहलने लगा। "मैं रात को काम करता था क्योंकि दिन को तो बाधाएं पड़ती रहती थीं, विद्यार्थी आते रहते थे। कई बार सारी रात काम करते बीत जाती थी। मुझे वह रात याद है जब वह विचार पूर्ण रूप से मस्तिष्क में सहसा आया। मैं अकेला था, प्रयोगशाला में नितांत सन्नाटा, बिजली की बत्तियां चुपचाप जल रही थीं—" एक जीव, एक रेशे को पारदर्शी बनाया जा सकता है! उसे अदृश्य भी बनाया जा सकता है। रंगों के अतिरिक्त और सब कुछ! मैं अदृश्य हो सकता हूं। मैंने दोहराया।

"यह काम तो जादू को भी मात कर देगा। मन में संदेह का लेश भी नहीं था, मैं अदृश्यता की महान शक्ति को स्पष्ट रूप से देख रहा था। रहस्य, शक्ति और स्वतंत्रता। त्रुटि मुझे कोई नज़र नहीं आई। तुम अनुमान तो करो। मैं एक ग़रीब प्रोफ़ेसर जो एक छोटे-से कालेज में मूर्खों को पढ़ाता था, क्या बनने वाला था। केम्प, मैं तुमसे पूछता हूं कि अगर तुम" या कोई भी यह कार्य सम्पन्न करता, क्या उसे खुशी न होती? मैं तीन साल तक काम करता रहा, प्रत्येक कठिनाई को पार करके शिखर पर चढ़ता रहा। प्रोफेसर हमेशा भेद जानने की टोह में रहता था। 'तुम अपनी यह चीज़ कब प्रकाशित कर रहे हो?' वह सदा यही सवाल करता था। तीन साल तक लगातार काम करता रहा—"

"तीन साल की कठोर परिश्रम और साधना के बाद मैंने देखा कि इस कार्य को पूर्ण करना असंभव बिलकुल असंभव है।"

"कैसे?" केम्प ने पूछा।

"रुपया!" अदृश्य पुरुष ने कहा और वह दोबारा खिड़की से बाहर झांकने गया।

उसने एकदम पलटकर कहा, "मैंने बूढ़े को—अपने पिता को लूट लिया।"

"रुपया उसका नहीं था। उसने अपने आप को गोली मार ली।"

ग्रेट पोर्टलैंड स्ट्रीट के मकान में

एक क्षण के लिए केम्प चुप बैठा खिड़की पर खड़े बेसिर के व्यक्ति की पीठ देखता रहा। तब वह एक विचार से चौंक पड़ा और उसने उठकर अदृश्य पुरुष को बांह से पकड़ा और घुमाकर अपनी ओर कर लिया।

"तुम थक गए हो।" उसने कहा, "मैं बैठा हूं और तुम टहल रहे हो। मेरी कुर्सी पर बैठ जाओ।"

वह ग्रिफ़िन के और सबसे पास वाली खिड़की के बीच खड़ा हो गया। एक क्षण के लिए ग्रिफ़िन मौन बैठा रहा, फिर उसने एकाएक अपनी कहानी शुरू कर दी :

"इसके बाद मैंने वेसिलस्टो कालेज छोड़ दिया। यह गत दिसंबर की बात है। मैंने ग्रेट पोर्ट लैंड स्ट्रीट के निकट की गंदी बस्ती के एक अव्यवस्थित मकान में एक छोटा-सा कमरा किराए पर लिया, जिसमें कोई फर्नीचर नहीं था। कमरा जल्दी ही उन औज़ारों से भर गया, जो मैंने पिता के पैसे से खरीदे थे। काम धीरे-धीरे सफलतापूर्वक समाप्ति की ओर बढ़ने लगा। मैं जैसे किसी झाड़ी से बाहर निकला था और सहसा मेरे सामने कोई अर्थहीन ट्रेजेडी आ गई थी। मैं अपने पिता को दफ़नाने गया। मेरा मन अब भी इस अनुसंधान में लगा हुआ था। मैंने उसके आचरण की रक्षा में एक शब्द भी नहीं कहा। सारी रसम निहायत मामूली थी। उसे एक उजाड़ पहाड़ी के दामन में दफ़नाया गया और उसके कालेज के पुराने और बूढ़े साथी ने सर्दी से कांपते हुए यह रसम अदा की।"

"मुझे उस स्थान में से सूने घर को लौटकर आना याद है, जहां पहले कभी गांव था और अब कस्बा-सा बन रहा था। हर दिशा में सड़कें बन गई थीं, जो खेतों और सरकंडों में जाकर खत्म हो जाती थीं। मैं जैसे इस स्थान की झूठी प्रतिष्ठा और नीरस व्यापारिकता से बचता हुआ सड़क के किनारे-किनारे चल रहा था..."

"मुझे पिता के मर जाने का ज़रा भी अफ़सोस नहीं था। मुझे वह अपनी मूर्ख भावुकता का शिकार जान पड़ता था। रिश्ते का तकाज़ा था कि मैं उसे दफ़नाने जाऊं, वरना इसकी ज़रूरत नहीं थी।"

"लेकिन 'हाई स्ट्रीट' में चलते हुए एक क्षण के लिए मेरे पुराने जीवन की

स्मृति लौट आई है। मैं उस लड़की से मिला जिसे मैं गत वर्ष से जानता था। हमारी आंखें चार हुईं…"

"मेरे मन में आया कि लौटकर उससे बात करूं। वह बहुत ही साधारण लड़की थी।"

"उस जगह जाना एक स्वप्न की-सी बात थी। मैंने तब अपने आपको अकेला महसूस नहीं किया और यह महसूस नहीं किया मैं दुनिया से वीरान में आ गया। अपने कमरे में दाखिल होते ही मैंने जैसे वास्तविकता को प्राप्त कर लिया। वहां ऐसी चीज़ें थीं जिन्हें मैं जानता था, जिनसे मैं प्यार करता था। वहां औज़ार थे, प्रयोग समंजित थे और मेरा इंतज़ार कर रहे थे। और अब कुछ सूक्ष्म बातों को छोड़कर और कुछ करना बाक़ी नहीं रह गया था।"

"केम्प, जल्द या देर, मैं तुम्हें वे सब पेचीदी प्रक्रियाएं बताऊंगा। इस समय उनके विवरण में जाने की ज़रूरत नहीं । वे किताबें जो मार्वेल ले गया है, उनमें मैंने सबकुछ लिख दिया है। हमें उस आदमी को खोजना होगा। हमें उन किताबों को फिर से पाना होगा। हमें एक आवश्यक काम करना था वह यह कि उस पदार्थ को, जिसका आवर्तनांक कम करना था, दो एक प्रकार का विकिरण फेंकने वाले केंद्रों के बीच रखना था। इसके बारे में मैं विस्तारपूर्वक तुम्हें बाद में बताऊंगा। हां, इतना ज़रूर है कि एक्स किरणों से मुझे काम नहीं लेना था। मैं नहीं जानता कि मेरे इन विकिरणों को कोई नाम दिया गया है या नहीं। लेकिन वे बिलकुल स्पष्ट हैं। इसके लिए मुझे दो घंटे डायनेमो की ज़रूरत थी, जो मैंने सस्ते गैस ईंधन से चलाया। मैंने अपना पहला प्रयोग ऊन के सफ़ेद टुकड़े पर किया। यह बड़ा ही विचित्र अनुभव था। पहले उसके रेशे झिलमिलाने लगे, फिर वह धुएं के समान हवा में विलीन हो गया।"

"विश्वास करना कठिन था कि मैंने यह काम किया है। मैंने शून्य में टटोला, तो टुकड़ा मेरे हाथ आ गया। यह पहले की भांति ठोस था। मैंने इसका स्पर्श किया। और फ़र्श पर फेंक दिया। उसे दोबारा ढूंढने में थोड़ी परेशानी हुई।"

"तब एक विचित्र घटना घटित हुई। मैंने अपने पीछे 'म्याऊं' की आवाज़ सुनी। पलटकर देखा तो खिड़की में एक बहुत ही गंदी, दुबली-पतली सफ़ेद बिल्ली थी। 'मेरे लिए हर चीज़ तैयार है।' मेरे मन में विचार आया। मैंने जाकर खिड़की खोली और उसे हलके से बुलाया। बिल्ली भीतर आ गई। वह बेचारी भूखी थी। मैंने उसे कुछ दूध पिलाया। मेरा सारा खाना कमरे के कोने में एक अलमारी पर रखा था। तब वह कमरे में इधर-उधर घूमने और सूंघने लगी, जैसे अपने आपको परिचित बना रही हो। ऊन के उस अदृश्य टुकड़े ने उसे तनिक परेशान किया। लेकिन मैंने उसे अपने तकिए पर आराम से लिटा दिया। और तब बहलाने के लिए मक्खन खिलाया।"

"और तुमने उसे अपने प्रयोग के लिए तैयार किया?"

"हां, लेकिन केम्प, एक बिल्ली को दवाइयां देना खेल नहीं है। और विधि असफल रही।"

"असफल?"

"दो बातों में। एक तो पंजे और दूसरे बिल्ली की आंखों के पीछे वह क्या चीज़ होती है? तुम जानते होगे?"

"आंखों की पुतलियों की रंगीन चमक! टेपटम!"

"हां, वही। जब मैंने बिल्ली को रक्त साफ़ करने के लिए दवा दे चुका और कुछ और बातें कर लीं, तो फिर उसे अफीम खिलाई और तकिए समेत उपकरण पर रख दिया। और सब बदल जाने के बाद भी सिर्फ़ उसकी आंखें रह गईं।"

"विचित्र!"

"मैं इसका कारण नहीं बता सकता। मैंने उसे पट्टियां बांधकर सुरक्षित बना दिया था। लेकिन प्रक्रिया के बीच ही में वह जाग उठी और उसने 'म्याऊं' कहा। उसी समय दरवाज़े पर दस्तक हुई। मैंने बिल्ली को क्लोरोफार्म सुंघाकर दरवाज़ा खोला। एक बुढ़िया भीतर आई। वह नीचे रहती थी और उसका दुनिया में सबकुछ यही एक बिल्ली थी। 'मैंने एक बिल्ली की आवाज़ सुनी है। क्या मेरी बिल्ली यहां है?' उसने पूछा। 'नहीं तो।' मैंने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया। मैंने संदिग्ध दृष्टि से कमरे में इधर-उधर देखा। खिड़कियों पर पर्दे नहीं थे, दीवारें नंगी थीं, बिस्तर खुला था। गैस के इंजन विकिरण फेंक रहे थे और क्लोरोफार्म की गंध कमरे में भरी थी। आखिर वह अपनी खोज से संतुष्ट होकर चली गई।"

"उस पर कितना समय लगा?" केम्प ने पूछा।

"तीन-चार घंटे। हड्डियां, नसें और चर्बी और रंगदार बालों के सिरे देर में अदृश्य हुए। जैसा कि मैं कह चुका हूं, आंख का पिछला भाग अधिक कठोर और चमकदार था, वह अदृश्य नहीं हुआ।"

"काम समाप्त होने से पहले ही रात हो चुकी थी। मद्धिम आंखों और पंजों के अतिरिक्त अब कुछ दिखाई नहीं देता था। मैंने इंजन बंद कर दिया। मैंने बिल्ली को टटोला और थपथपाया। वह अब भी बेहोश थी। मैंने उसका बंधन ढीला किया। मैं अब बहुत थक गया था। मैंने बिल्ली को खोला और उसे अदृश्य रूप में तकिए पर सोते छोड़कर बिस्तर पर जा लेटा। मुझे नींद नहीं आ रही थी। मैं बिस्तर पर लेटा सोच रहा था और निरुद्देश्य विचार मस्तिष्क में आ रहे थे। अपने प्रयोग की बातें बार-बार याद आ रही थीं। वस्तुएं धीरे-धीरे मद्धिम होकर विलीन हो रही थीं, यहां तक कि धरती भी अदृश्य होकर मेरे पांव तले से खिसक गई। दो बजे के करीब बिल्ली 'म्याऊं-म्याऊं' करती कमरे में घूमने लगी। मैंने उससे बातें करके चुप कराने का प्रयत्न किया। और आखिर निर्णय किया कि उसे बाहर निकाल दिया जाए। बिजली जलाई तो बिल्ली की हरी चमकदार आंखों के अतिरिक्त कुछ दिखाई न देता

था। मुझे एक झटका-सा लगा। मैं उसे दूध पिला देता, मगर उस समय दूध था ही नहीं। वह चुप नहीं होती थी। दरवाज़े पर बैठी 'म्याऊं-म्याऊं' कर रही थी। सोचा कि पकड़कर खिड़की से बाहर निकाल दूं, पर वह हाथ नहीं लगती थी। ग़ायब हो जाती थी। वह कमरे में कभी यहां और कभी वहां बोल रही थी। आखिर मैंने खिड़की खोल दी और ताली बजाई। मेरा ख़्याल है कि वह बाहर निकल गई क्योंकि उसके बाद न मैंने उसे देखा और न उसके बारे में सुना।"

"क्या तुम यह कहना चाहते हो कि दुनिया में एक अदृश्य बिल्ली भी है?" केम्प ने कहा।

"अगर वह मर न गई हो तो वाक़ई है।" अदृश्य पुरुष ने कहा।

"तुम अपनी बात ज़ारी रखो। मेरा इरादा तुम्हें रोकने का नहीं था।" केम्प ने कहा।

"शायद वह मर चुकी है।" अदृश्य पुरुष ने कहा। "चार दिन बाद तक वह जीवित थी क्योंकि मैने ग्रेट टिचफील्ड स्ट्रीट में लोगों की भीड़ देखी। वे यह जानने का प्रयत्न कर रहे थे कि 'म्याऊं' की आवाज़ कहां से आ रही है।"

एक मिनट के करीब वह मौन रहा। तब एकाएक बोला, "परिवर्तन से पहले की वह सुबह मुझे खूब याद है।"

"मैं शायद पोर्टलैंड स्ट्रीट में गया क्योंकि मुझे अलबैनी स्ट्रीट के बैरक याद हैं। घुड़सवार सिपाही बैरकों से निकल रहे थे। मैं प्रिमरोज़ पहाड़ी पर जा बैठा। जनवरी का महीना था और उस दिन धूप निकली हुई थी। वैसा ही दिन जैसा इस साल बर्फ़ पड़ने से पहले हुआ करता है। मेरा थका हुआ मस्तिष्क भावी काम की योजना बना रहा था। मुझे यह जानकर आश्चर्य हो रहा था कि मैंने अपना उद्देश्य लगभग प्राप्त कर लिया है जिसे पाना कितना मुश्किल मालूम पड़ रहा था। दरअसल चार साल के अविरल परिश्रम ने मुझे थका दिया था। मुझमें न शक्ति रह गई थी और न कोई भावना। मैं उदासीन था और मैंने उस जोश को जीवित रखने का व्यर्थ प्रयत्न किया, जो इस खोज के विचार मात्र से मेरे भीतर उत्पन्न हुआ था और जिसके कारण मैं पिता की मृत्यु को भी सहन कर सका था। किसी भी बात का महत्त्व ही नहीं मालूम होता था। लेकिन यह अस्थायी शिथिलता थी, जो अधिक काम और नींद की कमी से उत्पन्न हुई थी और आराम और दवा से दूर हो सकती थी।"

"मुझे यह कार्य सम्पन्न करना है। बस यही विचार मस्तिष्क पर छाया हुआ था और शीघ्र समाप्त करना है, क्योंकि मेरे पास जो रुपया था वह खत्म हो चला था। मैं देख रहा था, पहाड़ी के दामन में दो लड़के खेल रहे थे और लड़कियां उन्हें देख रही थीं और मैं देख रहा था कि अदृश्य मनुष्य के लिए दुनिया में कितनी सहूलियतें होंगी। थोड़ी देर बाद मैं घर लौटा। भोजन करके स्ट्राइडीन की एक पूरी खुराक ली और बिना कपड़े उतारे ही सोने के लिए सिकुड़े-सिमटे बिस्तर पर लेट

गया। स्ट्राइडीन बड़ा शानदार टॉनिक है केम्प! वह सारी शिथिलता दूर कर देती है।"

"वह तो, यों कहो कि, बोतल में शैतान बंद है।" केम्प ने कहा।

"जागा तो शरीर में स्फूर्ति थी, बल्कि चिड़चिड़ापन भी था। तुम जानते ही हो।"

"मुझे उसका प्रभाव मालूम है।"

"और दरवाज़े पर कोई दस्तक दे रहा था। लंबा कोट और चिकने स्लीपर पहने मकान मालिक आया था। वह एक बूढ़ा पोलैंडवासी यहूदी था। और बड़ा नाराज़ मालूम होता था। उसका विश्वास था कि मैं रात भर एक बिल्ली को तंग करता रहा हूं। वास्तव में बुढ़िया ने यह बात फैला दी थी। बूढ़ा मकान मालिक इसी बारे में सबकुछ जानने आया था। उसका कहना था कि इस देश के कानून बहुत कड़े हैं और मुझे भयंकर दंड मिल सकता है। मैंने साफ़ इनकार कर दिया। 'इंजन की धड़धड़ सारे मकान में सुनाई देती रही है,' उसने कहा। यह बात सच थी कि वह मेरे पास से गुज़र कर अपनी जर्मन ऐनकों में से कमरे में झांकने लगा। मेरे मन में संदेह उठा कि वह अवश्य मेरा कोई भेद ले जाएगा। मैंने अपने आपको उसके और प्रयोग के औजारों के बीच रखने का प्रयत्न किया। इससे उसका संदेह और बढ़ा। मैं क्या कर रहा हूं? मैं हमेशा अकेला और गुपचुप क्यों रहता हूं? क्या मेरा काम भयंकर है? कहीं गैर-कानूनी तो नहीं? मैं उसे किराए के अलावा कुछ नहीं देता। उसका मकान एक कुप्रसिद्ध मोहल्ले में होते हुए भी हमेशा प्रसिद्ध रहा है। सहसा मुझे क्रोध आ गया और उसे कमरे से निकल जाने को कहा। वह बोला कि मैं मकान मालिक हूं और मुझे भीतर आने का अधिकार है। मैंने उसे कालर से पकड़कर बाहर निकाल दिया और वह चक्कर लगाता हुआ अपने ही गलियारे में आ पहुंचा। मैंने भीतर से दरवाज़ा बंद करके ताला लगा दिया और कांपते हुए बैठ गया।"

"बूढ़ा बाहर बकता-झकता रहा। मैंने ज़रा भी परवाह नहीं की। थोड़ी देर बाद वह चला गया।"

"लेकिन झगड़ा बढ़ने की संभावना थी। मुझे मालूम नहीं था कि वह क्या करेगा और न यह मालूम था कि वह क्या कर सकता है। इस समय किसी दूसरे मकान में जाने से काम में देरी होती, और मेरे पास सिर्फ़ बीस पौंड एक बैंक में रह गए थे। शायद पुलिस आए और मेरे कमरे की तलाशी हो।"

"इस संभावना ने कि मेरा काम जब समाप्त होने वाला है, उसमें बाधा पड़ेगी, मुझे क्रुद्ध और सक्रिय बना दिया। मैंने वे तीन किताबें जिन्हें वह बदमाश ले गया है, और चैकबुक ली और निकटवर्ती डाकखाने की ओर चला ताकि ग्रेट पोर्टलैंड स्ट्रीट में पार्सल और खत प्राप्त करने वाले मकान के पते पर उन्हें भेज दूं। मैंने बिना आवाज़ किए बाहर जाने की कोशिश की। बाहर आकर देखा कि मकान मालिक चुपचाप ऊपर जा रहा है। उसने शायद मेरा दरवाज़ा बंद होने की आवाज़ सुन ली

थी। जब मैं निकट आया तुम उसे उछलकर एक ओर हटता देखकर हंस पड़ते। ख़ैर, जब मैं पास से गुज़रा तो वह मुझे कनखियों से देखता रहा। दरवाज़ा मैंने ज़ोर से बंद किया तो एक बार पूरा मकान कांप गया।"

"मैं उस शाम को और फिर रात भर काम करता रहा। मैं अभी खून को बेरंग बनाने वाली दवाइयों के प्रभाव में बैठा ऊंघ रहा था कि दरवाज़े पर बार-बार दस्तक पड़ने लगी। दस्तक बंद हो गई और पांव की चाप दूर चली गई। कोई फिर लौटा और दरवाज़े पर फिर दस्तक हुई। एक नीला कागज़ भी किवाड़ के नीचे से फेंकने का प्रयत्न किया गया। मैं चिढ़कर उठा और खट से दरवाज़ा खोला। 'क्या है?' मैंने कहा।"

"मकान मालिक था। शायद वह कमरा ख़ाली कराने का नोटिस लेकर आया था। उसने कागज़ मेरी ओर बढ़ाया और ख़्याल है कि उसने मेरे हाथ पर कुछ विचित्र चीज़ देखी और दृष्टि चेहरे पर डाली।"

"एक क्षण के लिए वह हतबुद्धि-सा खड़ा रह गया। फिर उसने अस्पष्ट सी चीख़ मारी और मोमबत्ती और कागज़ वहीं फेंककर अंधेरे रास्ते से सीढ़ियां उतर गया।"

"मैं दरवाज़ा बंद करके आईने के सामने गया। अब मुझे उसके भय का कारण मालूम हुआ।··· मेरा चेहरा सफ़ेद पत्थर की भांति सफ़ेद था।"

"मुझे बड़ा कष्ट हो रहा था। मुझे इस कष्ट की आशा नहीं थी। कष्ट रात भर बढ़ता रहा और पीड़ा के मारे मैं बेहोश-सा हो गया। मैंने दांत कचकचाए। मेरा सारा शरीर चल रहा था और लगता था कि अब प्राण निकल जाएंगे। अब मैं समझा कि क्लोरोफार्म सुंघाने से पहले बिल्ली क्यों चिल्ला रही थी। ग़नीमत यह थी कि मैं कमरे में अकेला था। कई बार मैं चीख़ता, कराहता और अपने आपसे बातें करता। मैं बेहोश हो गया और फिर मुंह अंधेरे आंख खुली। उस समय मैं बड़ा शिथिल था।"

"दर्द बंद हो गया था। मुझे वह सुबह कभी नहीं भूलेगी। अपने हाथों को शीशे के सदृश सफ़ेद देखकर मैं कितना डर गया था और मैं दिन भर उन्हें देखता रहा। मैंने अपने पारदर्शक पपोटे बंद कर लिए थे, फिर भी मैं उनमें से अपने अस्त-व्यस्त कमरे को देख रहा था। मेरे अवयव शीशे के हो गए। हड्डियां और धमनियां विलीन हो गईं और छोटी सफ़ेद नसें भी अंत में लुप्त हो गईं··· आख़िर अंगुलियों के नाखूनों के निर्जीव किनारे रह गए और मेरे हाथ पर तेजाब के कुछ पीले धब्बे दिखाई देते थे।"

"मैं उद्यम करके उठा। पहले तो मैंने अपने को एक नवजात शिशु के सदृश निर्बल और अदृश्य पैरों के सहारे चलने के अयोग्य पाया। मैं बहुत कमज़ोर और भूखा था। मैंने आईना देखा तो आंखों के पीछे मद्धिम-से रंग के अतिरिक्त और कुछ नज़र नहीं आया। मैं मेज़ पर झुका हुआ था और माथा आईने पर टेक दिया था।"

"मनोबल के भागीरथ प्रयत्न से मैं अपने आप को प्रयोग-यंत्र के निकट घसीट ले गया और विधि पूरी की।"

"मैं चादर ओढ़कर सो रहा। दोपहर बाद जब आंख खुली तो दरवाज़े पर फिर दस्तक थी। शरीर में शक्ति लौट आई थी। मैं बैठ गया। मुझे कानाफूसी सुनाई पड़ी। मैं उठा और इतने चुपके-चुपके जितना संभव हो सकता था प्रयोग यंत्र के औज़ारों को अलग-अलग करना शुरू किया ताकि इसकी व्यवस्था का किसी को तनिक भी आभास न हो। दस्तक फिर होने लगी। पहले बूढ़े मकान मालिक ने और फिर दो अन्य व्यक्तियों ने पुकारा। मैंने समय बिताने के लिए उत्तर दिया। मैंने खिड़की खोली, और अदृश्य तकिया और गलीचा उसमें से छत पर फेंक दिया। ज़्यों ही खिड़की खुली किवाड़ पर ज़ोर का धक्का लगा। मैंने पेंच कुछ दिन पहले कस दिए थे, इसलिए सांकल नहीं टूटी। लेकिन मैं चौंक गया और मुझे गुस्सा आया। मैं कांपते हुए जल्दी-जल्दी काम करने लगा।"

"मैंने कमरे के बीच में कुछ कागज़, गत्ते और घास इकट्ठी की और गैस खोल दी। दरवाज़े पर धक्के लगने शुरू हुए। मुझे दियासलाई नहीं मिली। मैं क्रोध से दीवार पीटने लगा। मैंने फिर गैस बंद की और खिड़की में से निकलकर छत पर जा रहा। मैं वहां सुरक्षित और अदृश्य बैठा था और क्रोध से कांपता हुआ देख रहा था कि अब क्या होता है? उन्होंने शीशा तोड़कर सांकल अलग की और अब खुले दरवाज़े में तीन आदमी खड़े थे। बूढ़ा और दो सौतेले बेटे जो तेईस या चौबीस साल के तगड़े जवान थे। उनके पीछे चढ़ती हुई एक बुढ़िया आ रही थी।"

"कमरे को खाली देखकर उन्हें जो आश्चर्य हुआ, उसका तुम अंदाज़ा कर सकते हो। एक नौजवान दौड़कर खिड़की के पास आया और उसे खोलकर बाहर झांकने लगा। उसकी तेज़ आंखें और मोटे होंठ मेरे चेहरे से एक फुट के फासले पर थे। जी में आया कि उस मूर्ख के चेहरे पर घूंसा दे मारूं, लेकिन मैंने अपनी बंद मुट्ठी को रोके रखा।"

"बाक़ी दोनों भी वहां आ गए और वे मेरे शरीर में से झांक रहे थे। बूढ़े ने चारपाई के नीचे नज़र दौड़ाई और फिर उन्होंने अलमारी में देखा। वे टूटी-फूटी अंग्रेजी में तर्क करने लगे और इस निर्णय पर पहुंचे कि मैंने उनकी बात का उत्तर नहीं दिया था। सिर्फ़ उनकी कल्पना ने उन्हें धोखा दिया है। अब बूढ़ी औरत भी भीतर आ गई और एक बिल्ली की भांति इधर-उधर झांककर मेरे अस्तित्व की पहेली बूझने का प्रयत्न कर रही थी। मैं खिड़की से बाहर बैठा इन चारों व्यक्तियों को देख रहा था। और क्रोध का स्थान अपूर्व उल्लास ने ले लिया था।"

"बूढ़ा बुढ़िया से इस बात पर सहमत था कि मैं जीवों की चीर-फाड़ करता था। लड़कों का कहना था कि मैं इंजीनियर था और डायनेमो और रेडिएटर इसका प्रमाण थे। मैंने देखा कि उन्होंने सामने का दरवाज़ा बंद कर दिया है। रेड़ीवाला जो

सामने के कमरे में एक मोची के साथ रहता था—सीढ़ियों पर नज़र आया, तो उसे भी बुलाकर सारी समझ में न आने वाली बात सुना दी।"

"मुझे ख़्याल आया कि अगर मेरे रेडिएटरों को किसी पढ़े-लिखे व्यक्ति ने देख लिया तो मेरा भेद बहुत कुछ खुल जाएगा। इसलिए मैं खिड़की की देहली से उतरकर कमरे में आया। बुढ़िया के पास से गुज़र कर मैंने एक डायनेमो गिराया और दोनों प्रयोग-यंत्र तोड़ दिए। वे एकदम कितने डर गए!''' जब वे टूटने का कारण मालूम कर रहे थे मैं दबे पांव कमरे से निकलकर सीढ़ियां उतर गया।"

"मैं एक बैठक में जा बैठा और उनके लौटने का इंतज़ार करने लगा। आख़िर वे आपस में तर्क करते हुए नीचे उतरे और मेरे निकट ही आ खड़े हुए। मैंने एक माचिस उठाई और ऊपर जाकर काग़ज़ों के ढेर को दियासलाई दिखा दी। कुर्सियां और बिस्तर भी उसमें रख दिया और गैस खोल दी।"

"तुमने घर को आग लगा दी।" केम्प ने पूछा।

"हां, आग लगा दी। भेद छिपाने का यही एक उपाय था और वह छिप गया। '''मैंने सामने का दरवाज़ा खोला और ग़ली में चला गया। मैं अदृश्य था और अब मैंने महसूस करना शुरू कर दिया कि इस अदृश्यता का मुझे कितना असाधारण लाभ है। मस्तिष्क में वे अद्भुत बातें और योजनाएं आ रही थीं जिन्हें करने में अब मैं समर्थ था।"

आक्सफोर्ड स्ट्रीट में

"सीढ़ियां उतरा तो पहली बार मुझे यह कठिनाई हुई कि मैं अपने पांव नहीं देख सकता था। मैं दो मर्तबा ठोकर खाकर गिरते-गिरते बचा। लेकिन समतल स्थान पर मैं बिना नीचे देखे सहज में चल सकता था।"

"मेरे मन में प्रसन्नता की एक लहर-सी उठ रही थी। मेरी भावनाएं उस मनुष्य के सदृश थीं, जो अंधों के शहर में अकेला देखने वाला हो, जिसके पांव गद्देदार हों और कपड़ों में सरसराहट न हो। जी चाहता था कि लोगों से मज़ाक करूं। किसी की कमर थपथपाऊं, किसी की हैट उछाल दूं और यों उन्हें चौंकाता चलूं।"

"लेकिन मैं ग्रेट पोर्टलैंड स्ट्रीट में पहुंचा ही था कि मुझे ज़ोर का धक्का लगा। पलटकर देखा तो एक आदमी सोड़े की नलकियों का टोकरा सर पर उठाए चकित ऊपर झांक रहा था। मुझे चोट तो काफ़ी लगी थी, लेकिन उसके आश्चर्य को देखकर मैं ज़ोर से हंसा। 'टोकरे में शैतान है।' उससे कहा और टोकरा उससे लेकर हवा में उछाल दिया।"

"लेकिन एक मूर्ख गाड़ीवान जो एक दुकान के बाहर खड़ा था, टोकरे की ओर लपका। उसकी अंगुलियां मेरी कनपट्टी में गड़ गईं। मैंने टोकरा धम से उसके सिर पर फेंक दिया। तब क्या था, लोग गाड़ियों से दुकानों और इधर-उधर से चिल्लाते हुए दौड़े। अब मैंने यह महसूस किया कि मैंने अपने लिए क्या खतरा मोल ले लिया है। मैं एक खिड़की की ओट में छिप गया, वरना भीड़ में भिंच जाता और लोगों को मेरी अदृश्यता मालूम हो जाती। एक मोची का लड़का मुझसे आ टकराया, पर उसने इस ओर ध्यान नहीं दिया और एक गाड़ी के नीचे जा छिपा। मालूम नहीं, उन्होंने क्या परिणाभ निकाला पर मैं लपककर सड़क पर जा बढ़ा। सड़क साफ़ थी और बिना सोचे एक दिशा में चलते हुए आक्सफोर्ड स्ट्रीट में चलनेवाली आदमियों की भीड़ में जा मिला।"

"मैं राह चलते लोगों में खो जाना चाहता था, लेकिन उनकी भीड़ अधिक थी और उनकी ठोकरों से मेरी एड़ियां छिलने लगीं। मैने गंदी नाली पकड़ी पर उसके

कंकड़ पांव में चुभने लगे और एक गाड़ी का लंबा बांस मेरे कंधे को छील ले गया। मैं लड़खड़ाता हुआ गाड़ी के मार्ग से बचा और एक बच्चों की हाथगाड़ी से मुश्किल से टकराते-टकराते बचा। अब मैं एक बग्घी के पीछे था। बग्घी धीरे-धीरे चल रही थी और मैं कांपता हुआ उसके पीछे-पीछे चलने लगा। जनवरी का महीना था और सड़क पर कीचड़ जम-सी गई थी और मैं बिलकुल नंगा था। मेरी मूर्खता देखिए कि मैंने यह नहीं सोचा कि अदृश्यता के बावजूद मौसम का प्रभाव तो मुझ पर होगा ही।"

"तब एक सुंदर विचार मेरे मन में आया और मैं उछलकर गाड़ी में बैठ गया। मैं सर्दी से कांप रहा था और मेरा कंधा दर्द कर रहा था। इस प्रकार मैं आक्सफोर्ड स्ट्रीट पार करके टाटेनहम कोर्ट पहुंच गया। दस मिनट पहले जो मेरा मूड था, वह अब बदल गया था। इस अदृश्यता के कारण मैं जिस विकट परिस्थिति में जा फंसा था, उससे बाहर कैसे निकलूं।

"हम थोड़ी दूर ही गए थे कि एक लंबे क़द की औरत पांच-छः पुस्तकें उठाए गाड़ी में सवार हुई। मैं नीचे कूद पड़ा और एक रेलवे गाड़ी के नीचे आते-आते बचा। मैं ब्लम्सवरी स्क्वेयर की ओर चला। सोचा, यह था कि अजायबघर के पास से गुज़रकर शांत और एकांत स्थान में जा पहुंचूंगा। सर्दी के मारे मेरा बुरा हाल था। मैं अपनी इस स्थिति में इतना परेशान था कि दौड़ और रिरिया रहा था। स्क्वेयर के पश्चिमी कोने पर एक छोटा सफ़ेद कुत्ता फ़ार्मेस्युटिकल सोसाइटी के दफ़्तर से बाहर निकला और धरती सूंघता हुआ मेरी ओर बढ़ा।"

"मैंने यह बात पहले कभी महसूस नहीं की थी कि कुत्तों के दिमाग़ के लिए नाक वही काम करती है, जो आंख मनुष्य के दिमाग़ के लिए। कुत्ते आदमी को उसी प्रकार सूंघ लेते हैं जिस प्रकार मनुष्य उसे चलते हुए देखते हैं। यह कुत्ता मुझ पर भौंकते हुए झपट पड़ा। यह बात स्पष्ट थी कि उसे मेरे अस्तित्व का ज्ञान था। अपने कंधों के ऊपर से पीछे देखते हुए मैंने ग्रेट रसेल स्ट्रीट पार की और कुछ दूर तक मांटेग्यू स्ट्रीट पर दौड़ता गया। तब मुझे ख़्याल आया कि मैं किधर जा रहा हूं।"

"अब मुझे गाने की आवाज़ सुनाई दी। ग़ली में झांककर देखा तो मालूम हुआ कि रसेल स्क्वेयर से लाल वाड़ियां पहने और 'मुक्तिसेना' झंडे उठाए एक जुलूस आ रहा है। इस भीड़ से बचने के लिए मैं एक मकान की सफ़ेद सीढ़ियों पर चढ़ गया और वहां खड़ा इस जुलूस के गुज़र जाने का इंतज़ार करने लगा। सौभाग्य से कुत्ता इस भीड़ से डर गया और दुम हिलाता हुआ ब्लूम्सबरी स्क्वेयर को लौट गया।"

"जुलूस के आगे-आगे बैंड बज रहा था और लोग उसके विद्रूप से अनभिज्ञ यह भजन गा रहे थे—'हम उसका चेहरा कब देखेंगे।' वे इसी प्रकार गाते-बजाते मेरे निकट से गुज़र गए और मैंने उन दो चंचल लड़कों को नहीं देखा जो मेरे निकट ही

जंगले के पास आ खड़े हुए थे। 'वह देखो!' एक ने कहा। 'क्या?' दूसरे ने पूछा। 'वे पांव के निशान जैसे हम कीचड़ में बनाते हैं'।"

"मैंने देखा कि सफ़ेद सीढ़ियों पर मेरे पांव के निशान उभर आए थे और लड़के स्तब्ध-से उन्हें देख रहे थे। यात्रियों की कुहनियां और कंधे उन्हें लग रहे थे, लेकिन वे अपने आप में खोए इन निशानों को देख रहे थे। 'ढम, ढम, ढम, हम उसका चेहरा, ढम, ढम, ढम, कब देखेंगे। ढम, ढमां!' 'कोई आदमी नंगे पांव सीढ़ियों पर चढ़ा है, इतना मैं जानता हूं।' एक ने कहा। और वह फिर नीचे नहीं उतरा। और उसके पांव से खून बह रहा है।'"

"भीड़ गुज़र चुकी थी। 'टेडी, वहां देखो।' छोटे लड़के ने चकित स्वर में कहा और ठीक मेरे पांव की ओर संकेत किया। मैंने भी अपने पांव की ओर देखा, वे कीचड़ में लिथड़े हुए हलके-हलके दिखाई पड़ रहे थे। एक क्षण के लिए मुझे जैसे काठ मार गया।"

"'पूरा पांव है।' बड़े ने कहा, 'ऐसा लगता है जैसे भूत का पांव है। क्यों ठीक है न?' उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। एक आदमी यह देखने के लिए ठहर गया कि वह क्या पकड़ना चाहता है, और फिर एक लड़की। दूसरे ही क्षण उसने मुझे छू लिया होता। मैंने पांव हटा लिया। लड़का चौंककर पीछे हट गया। मैं जल्दी-जल्दी डग भरता हुआ पड़ौस के पोर्टिको में जा पहुंचा। छोटा लड़का तेज़ था। वह बड़े ध्यान से मेरी गतिविधि देख रहा था। कुछ संभलकर चिल्लाया कि देखो पांव दीवार पार कर रहे हैं।"

"वे सब दौड़े और उन्होंने नीचे की सीढ़ी और पक्के फ़र्श पर मेरे पांव के निशान देखे।"

"क्या है?" किसी ने पूछा।

"पांव! देखो! पांव दौड़ रहे हैं!"

"मुक्तिसेना का जुलूस न सिर्फ़ मेरे, बल्कि मेरा पीछा करने वालों के लिए भी बाधा बना हुआ था। लोग आश्चर्य में भरे एक-दूसरे से पूछ रहे थे। मुझसे टकराकर एक नौजवान गिर पड़ा, लेकिन मैं निकल गया और रसेल स्क्वेयर के चक्कर में तेज़-तेज़ दौड़ने लगा और छः-सात चकित आदमी मेरे पांव का पीछा कर रहे थे। कारण मालूम करने का समय नहीं था वरना सभी मेरे पीछे दौड़ने लगते।"

"दो बार मैंने मोड़ घूमा और तीन मर्तबा सड़क पार की और मैं अपना पीछा करने वालों के पीछे आ गया। दौड़ने से मेरे पांव गर्म हो गए थे और सूख गए थे, इसलिए निशान मद्धिम पड़ने लगे। फिर जब फुरसत मिली तो मैंने पांव को हाथों से पोंछ डाला और यों साफ़ बच निकला। आख़िरी बात मैंने यह देखी कि दस-बारह आदमी आश्चर्य से भरे एक धीरे-धीरे खुश्क होते हुए पद-चिह्न को देख रहे थे।

जिसका जन्म टेविस्टाक स्क्वेयर के एक कीचड़ में हुआ था। यह पदचिह्न उनके लिए उतना ही रहस्यमय और अविश्वसनीय था, जैसा क्रूसो के लिए था जब उसने देखा था।"[1]

"दौड़ने से शरीर में कुछ गर्मी आ गई थी और मैं किसी कदर सूनी सड़कों पर इत्मीनान से चल रहा था। मेरी पीठ अकड़ गई थी और कनपटी के नीचे दर्द हो रहा था। गाड़ीवान की अंगुलियों से गला दबने के कारण मेरे टांसिल दर्द कर रहे थे। एक पांव कट जाने से मैं कुछ लंगड़ाने लगा था। मैंने एक अंधे को सामने से आते देखा और लपककर उससे दूर हो गया क्योंकि मुझे भय था कि वह अपनी तीव्र आंतरिक सूझ से मेरी उपस्थिति को जान लेगा। एक-दो बार मैं यों ही लोगों से टकरा गया और उन्हें स्तब्ध खड़ा छोड़कर आगे बढ़ गया। मुझे जुकाम हो गया था और हज़ार रोकने के बावजूद कभी-कभी छींक आ जाती थी। जो भी कुत्ता नाक से सूंघता हुआ दिखाई देता था, मैं उससे डरता था।"

"तब आदमी और लड़के दौड़ते और चिल्लाते हुए आए। आग लगी थी। वह मेरी रिहायश की ओर दौड़ रहे थे। मैंने नज़र दौड़ाई तो देखा कि छतों और टेलीफोन की तारों के ऊपर काले धुएं के बादल उठ रहे हैं। मुझे विश्वास हो गया कि मेरे कपड़े, औज़ार और सारी चीज़ें जल गई हैं। सिर्फ़ चैक बुक और तीन पुस्तकें बच रही हैं, जो पोर्ट लैंड स्ट्रीट में मेरा इंतज़ार कर रही हैं। मैंने अपना सबकुछ जला डाला था।"

अदृश्य पुरुष रुककर सोच रहा था। केम्प ने घबराए हुए-से खिड़की से बाहर देखा।

"हां, सुनते जाओ।" उसने कहा।

1. डैरियल डिफ़ो कृत 'राबिन्सन क्रूसों' का हवाला जनशून्य द्वीप में एक आदमी के पद-चिन्ह देखकर क्रूसो हज़ार आशंकाओं से भर गया था।

एम्पोरियम में

"मेरा यह नया जीवन गत जनवरी को शुरू हुआ। सर्दी के मारे मेरा बुरा हाल था। बर्फ़ पड़ने लगी थी, अगर वह मेरे शरीर पर जम जाती, तो मैं लोगों के लिए दृश्य हो जाता। मेरे पास न सिर छिपाने को ठिकाना था, न कपड़ा था और न दुनिया में कोई ऐसा व्यक्ति था जिसका मैं विश्वास करता। अपने भेद बताने का मतलब यह था कि मैं प्रदर्शन की एक अद्‌भुत वस्तु बनकर रह जाता। फिर मेरे मन में यह बात उठ रही थी कि मैं किसी यात्री के गले लिपट जाऊं और दया की प्रार्थना करूं। लेकिन मैं जानता था कि इससे मुझे अपने लिए आतंक और बर्बर अत्याचार सहन करने के अतिरिक्त और कुछ प्राप्त नहीं होगा। मैं सर्दी से ठिठुर रहा था और ग़ली में कुछ सोच भी नहीं सकता था। मैं चाहता था कि बर्फ़ से बचने का ठिकाना मिले। शरीर में कुछ गर्मी आए और तब मैं योजना बनाऊं। लेकिन मुझ अदृश्य मनुष्य के लिए लंदन के सब मकान बंद थे।"

"मुझे जो चीज़ स्पष्ट दिखाई दे रही थी, वह थी सर्दी, बर्फ़ के तूफ़ान में नंगे ठिठुरना और भयानक रात।"

"मेरे मन में एक बढ़िया विचार आया और मैं टोटेनहम कोर्ट की ओर घूमा। अब मैं उस बड़ी दुकान के सामने खड़ा था, जिसका नाम एम्पोरियम है और जहां हर चीज़ मिलती है। यों कहिए कि यह एक दुकान नहीं, कई दुकानें हैं। मेरा ख़्याल था कि दरवाज़े खुले होंगे, लेकिन वे बंद थे। इतने में एक गाड़ी आई, जिसमें से वर्दी पहने हुए एक आदमी उतरा। वह दरवाज़ा खोलकर भीतर गया तो उसके साथ मैं भी चला गया। यह दुकान का वह हिस्सा था, जहां फ़ीते, दस्ताने, मोज़े तथा उसी तरह की चीज़ें बिकती थीं। घूमते हुए मैं दुकान के दूसरे भाग में पहुंचा। यह अपेक्षाकृत बड़ा था और इसमें पिकनिक की डलियां तथा बेंत का सामान रखा था।"

"मैं अपने को वहां भी सुरक्षित महसूस नहीं कर रहा था, क्योंकि लोग काफ़ी संख्या में चल-फिर रहे थे। आख़िर मैं ऊपर की मंज़िल के ऐसे भाग में गया जहां चारपाइयां पड़ी थीं। मैं चटाइयों के एक ढेर पर आराम से लेट गया। वहां रोशनी थी और काफ़ी गर्मी थी। ख़्याल यह था कि जब दुकान बंद हो जाएगी तो पहले

उठकर कुछ खाऊंगा-पीऊंगा और फिर ऐसे कपड़े ढूंढकर पहनूंगा जिनसे मैं भद्दा और कुरूप भी न लगूं, और जिनसे मेरा शरीर छिप सके।"

"दुकान जल्द ही बंद हो गई। मेरे चटाइयों पर लेट जाने के एक घंटे बाद पर्दे गिराए जाने लगे और ग्राहक दुकान से बाहर निकलने लगे। जब भीड़ खत्म हो गई तो मैं चुपके से उठकर दुकान के सूने भाग में चला गया। नौजवान मर्द और औरतें दुकान में बिखरा हुआ सामान झटपट समेटने लगीं। जब सामान समेट लिया तो उन्होंने कुर्सियां उठाकर काउंटर पर रख दीं। और फ़र्श पर कोई चीज़ नहीं रह गई। अब ये दुकान में काम करने वाले नौजवान बड़े प्रसन्न थे और मुस्कराते हुए बाहर निकल रहे थे। इनके बाद छोटे लड़के आए जिन्होंने फ़र्श पर झाड़ू लगाना शुरू किया। मैं एक ओर हट गया और अंधेरे में खड़ा रहा। घंटे-सवा घंटे में दरवाज़े बंद हो गए और ताले लगाकर सब चले गए। अब मैं दुकान में अकेला था और जहां चाहूं अपनी इच्छा से घूम सकता था।"

"मैं पहले उस भाग में गया, जहां जुराबें और दस्ताने बेचे जाते थे। दुकान में अंधेरा था, इसलिए दियासलाई की ज़रूरत थी, जो मुझे एक छोटे से नकदी रखने के डेस्क में मिल गई। मैंने एक मोमबत्ती जला ली और बहुत-से संदूकों और दराज़ों में ढूंढ-ढूंढकर ऊन की बढ़िया जुराबें और दस्ताने निकाले। फिर मैं कपड़ों के भाग में गया और एक पतलून, एक बंडी, एक ओवरकोट और एक मुलायम हैट, जिसके कोने नीचे को मुड़े हुए थे, पहना। मैं एक बार फिर इंसान बना और अब मुझे भोजन की आवश्यकता थी।"

"सीढ़ियों के ऊपर जल-पान विभाग था। वहां मुझे ठंडा गोश्त मिला। बर्तन में कॉफी भी पड़ी थी, जिसे मैंने गैस जलाकर गर्म कर लिया। अब मैं कंबल तलाश करने लगा, तो मुझे रज़ाइयों का एक ढेर हाथ लगा। संयोग से मैं उस विभाग में भी जा पहुंचा, जहां चाकलेट और खुश्क मेवे थे। बिल्ली के भागों छींका टूटा। नज़दीक ही खिलौनों का विभाग था। वहां से मैंने नकली नाकें देखीं, जिससे मेरे मस्तिष्क में एक नया विचार आया। नाक को छिपाना कठिन था। मैंने उसपर पेंट करने की सोची थी। इसके बाद बनावटी बालों और काली ऐनक की ज़रूरत महसूस हुई, पर ये चीज़ें वहां नहीं थीं। मैं उनके बारे में सोचता हुआ रज़ाइयों में लिपटकर सो गया।"

"सोने से पहले मेरा चित्त बड़ा प्रसन्न था, इसलिए मस्तिष्क में मधुर और सुंदर विचार उठ रहे थे। मैं सोच रहा था कि सुबह कपड़े, पहने-पहनाए दुकान से बाहर निकल जाऊंगा, चेहरा सफ़ेद मफलर से ढांप लूंगा, जो पैसे चुराए हैं उनसे काली ऐनक खरीदूंगा और यों वेश बदलने में सफल हो जाऊंगा। मैं रात भर पिछले चार-पांच दिनों की घटनाओं के स्वप्न देखता रहा। मैंने बूढ़े यहूदी मकान-मालिक और उसके दोनों लड़कों को चकित देखा और फिर झुर्रियों भरे चेहरे वाली बूढ़ी औरत अपनी बिल्ली के बारे में पूछने आई। मैंने कपड़े को विलीन होते देखकर फिर

प्रसन्नता महसूस की। फिर मैं सूनी पहाड़ी के दामन में अपने पिता की कब्र के निकट पहुंचा जहां बूढ़ा पादरी 'मिट्टी मिट्टी में', 'धूल धूल में' और 'राख राख में मिलेगी' का भजन गुनगुना रहा था।"

'तुम भी' एक आवाज़ ने कहा और मुझे हठात् कब्र की ओर घसीटा जाने लगा। मैंने अपने आपको छुड़ाने का प्रयत्न किया, मैं चिल्लाया और मातम मनाने वालों से अपील की, लेकिन वे स्थिर दृष्टि से पादरी से भजन सुनने में व्यस्त थे। मैंने सोचा कि मैं अदृश्य हूं और अश्रव्य हूं। मैं विवश था और मुझे ज़बरदस्ती धकेला जा रहा था। मुझे कब्र के भीतर धकेल दिया गया। मेरे गिरने से खोखले ताबूत के बजने की आवाज़ आई और उसके बाद कंकड़ मिट्टी पड़ने लगी। किसी को मेरे बारे में कुछ मालूम नहीं था, किसी ने मेरी परवाह नहीं की। मैं चीख़ा और आंख खुल गई।"

"दिन निकल आया था और सूर्य का प्रकाश खिड़कियों के पर्दों में से छन-छनकर भीतर आ रहा था। मैं उठकर बैठ गया। कुछ देर तो मैं यही नहीं सोच सका कि ये रज़ाइयां, यह दूसरा सामान, यह लोहे के खम्भे और यह काउंटर क्या हैं और मैं कहा हूं। मुझे कुछ होश आया तो मैंने कानाफूसी की आवाज़ें सुनीं।"

"फिर एक निचले भाग में जहां अधिक प्रकाश था और जहां खिड़कियों के पर्दे उठ गए थे, मैंने दो आदमियों को आते देखा। मैं उठा और इधर-उधर बच निकलने का मार्ग सोचने लगा। मेरे पांव की चाप ने उन्हें चौंका दिया। 'वह कौन है?' एक चिल्लाया। 'वहीं ठहर जाओ।' दूसरा बोला। मैं एक बेचेहरे का व्यक्ति एक कोने की ओर दौड़ा और पंद्रह साल के एक लड़के से टकरा गया। वह चिल्लाया, मैं उसे धक्का देकर पास से गुज़र गया। मैं एक और कोना घूमा और एक काउंटर के नीचे छिपने में सफल हो गया। लोग इधर-उधर दौड़ रहे थे। 'दरवाज़ों पर होशियार हो जाओ' 'देखना निकल न जाए।' मुझे पकड़ने की हिदायतें दी जा रही थीं।"

"मैं सहमा और घबराया हुआ-सा धरती पर पड़ा था। अजीब बात है कि कपड़े उतार देने का विचार ही मेरे मन में नहीं आया, क्योंकि मैंने निश्चय किया था कि मैं उनके समेत दुकान से बाहर निकल जाऊंगा। यह निश्चय ही उस समय मुझ पर अधिकार किए था।"

"वह यही है।" किसी ने काउंटर के नीचे झांकते हुए कहा।

"मैं उठ खड़ा हुआ और काउंटर से एक कुर्सी उठाकर उस मूर्ख पर दे मारी, जो मेरी ओर देखकर चिल्ला रहा था। वह चकरा गया और मैं दौड़कर सीढ़ियां चढ़ गया। वह भी दौड़ता हुआ मेरे पीछे आया। ऊपर रंग-बिरंगे सुंदर मर्तबानों के—क्या कहते हैं उन्हें, ढेर पड़े थे।"

"कलात्मक बर्तन?" केम्प ने पूछा।

"हां-हां वही। जैसे ही वह मेरे निकट आया, मैंने एक मर्तबान उठाकर उसके

सिर पर दे मारा। फिर एक के बाद एक मर्तबान उठाकर नीचे फेंकना शुरू किया और लोग घबराकर इधर-उधर दौड़ने लगे। मैं दौड़कर जलपान विभाग में गया। यहां एक रसोइए ने मुझे देख लिया और मेरे पीछे दौड़ने लगा। अब मैं लैंपों और लोहे के दूसरे सामानों के विभाग में था। मैं यहां काउंटर के पीछे छिप गया। ज्यों ही रसोइया दौड़ता हुआ आया, मैंने एक लैंप उठाकर मारा और वह दोहरा हो गया। मैंने वहीं छिपे-छिपे ही अपने कपड़े उतारने शुरू किए। जुराबें, पतलून और कोट को झपटकर उतार दिया, लेकिन बंडी जैसे शरीर से चिपक गई हो। मुझे अधिक कदमों की चाप सुनाई दी। रसोइया काउंटर के दूसरी ओर लुढ़का पड़ा था और उसकी आवाज़ भी नहीं निकल रही थी। मैं यहां से भी भागा।"

"सिपाही साहब! इधर!" किसी ने कहा।

"मैं दोबारा चारपाइयों वाले भाग में पहुंचा। उसके निकट पोशाकें थीं। मैं वहां जा छिपा और बड़ी कोशिश के बाद बंडी उतारी। मैं अब फिर अदृश्य व्यक्ति था, लेकिन मैं सहमा हुआ था और सांस फूली हुई थी। सिपाही और दुकान के तीन नौकर कोने के पास आए। उन्होंने दौड़कर जुराबें और पैंट उठाई। 'वह चोरी का सामान फेंक रहा है।' एक ने कहा। 'वह यहीं कहीं होगा।'"

"लेकिन उन्हें मेरा पता नहीं चला।"

"वे मुझे ढूंढ रहे थे और मैं खड़ा उन्हें देख रहा था। मुझे कपड़े चले जाने का अफ़सोस था। मैं फिर जल-पान विभाग में आया और वहां जो थोड़ा दूध पड़ा था, वह पीकर आग तापने बैठ गया।"

"मैं बैठा अपनी स्थिति पर विचार कर रहा था कि दुकान के दो नौकर उत्तेजना से भरे वहां आए। वे मेरे ही बारे में बातें कर रहे थे और बातें बड़ी अजीब थीं। मैं उठकर नीचे के भाग में आया। दुकान लंबी-चौड़ी थी और सब लोग सतर्क थे, इसलिए यहां से कुछ चुरा ले जाना कठिन था। ग्यारह बजे के करीब जब बर्फ़ पड़ना बंद हो गई और धूप निकल आई, मैं दुकान से बाहर निकला। मुझे अपनी असफलता का अफ़सोस था, लेकिन मस्तिष्क की नई धुंधली-सी योजना बना रहा था।"

ड्रेरी लेन में

"अब तुम अनुमान लगा सकते हो कि मेरी स्थिति कितनी कठिन थी। सिर छिपाने को ठिकाना नहीं था, कपड़े नहीं थे और मैं सारे सुखों से वंचित हो गया था। मुझे जान-बूझकर उपवास करना पड़ता था क्योंकि कोई अपच चीज़ खा लूं तो फिर दृश्य बन जाने का भय था।"

"मैंने यह नहीं सोचा था।" केम्प ने कहा।

"मैंने भी नहीं सोचा था। बर्फ़ ने एक और ख़तरा पैदा कर दिया था। वर्षा में भीगकर चलता-फिरता बुलबुला बन जाऊं और यही मुसीबत पानी और धुंध में थी। फिर लंदन की हवा में तो धुआं और मिट्टी इतनी थी कि वह शरीर पर जम जाती थी। अदृश्य रहने के लिए यह भी एक बड़ा ख़तरा था और इस ख़तरे से अधिक देर तक बचे रहना असंभव नहीं था।"

"कम-से-कम लंदन में तो संभव नहीं था।"

"मैं ग्रेट पोर्टलैंड स्ट्रीट की ओर गया और उस ग़ली की नुक्कड़ पर पहुंच गया, जहां मैं रहता था। जिस मकान को मैंने आग लगाई थी, उसका मलबा अब भी सुलग रहा था। वहां भीड़ जमा थी, इसलिए उधर नहीं गया। मेरी पहली समस्या अपने लिए वस्त्र प्राप्त करना था। सामने की छोटी विभिन्न दुकानों में अख़बार, मिठाइयां, खिलौने, स्टेशनरी और क्रिसमस का सामान देखा। इसके अलावा वहां बनावटी चेहरे, बाल और नाकें थीं। इम्पोरियम वाला विचार मेरे मन में फिर आया। अब मैं एक विशेष उद्देश्य से स्टैंड के उत्तर वाली गलियों की ओर चल पड़ा क्योंकि वे मुझे मालूम था कि वहां थिएटर की पोशाकें बेचने वालों की दुकानें हैं।"

"ठंडी हवा चल रही थी। मैं तेज़ डग भरता हुआ अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचा। गंदी तंग ड्रेरी लेन में एक छोटी-सी दुकान थी, जिसमें थिएटर के वस्त्र, स्लीपर, नकली हीरे, नकली बाल और पादरियों के टोप आदि बिकते थे। दुकान पुराने फैशन की नीची और अंधेरी थी और उसके ऊपर चार मंज़िला इतना ही अंधेरा घर था। मैंने खिड़की में से झांककर देखा। वहां कोई नहीं था। इसलिए मैं भीतर चला गया। दरवाज़ा खुलने से घंटी बजी। मैंने दरवाज़ा खुला छोड़ दिया और खुद एक कोने

की ओर बढ़कर शीशे की एक अलमारी के पीछे जा खड़ा हुआ। एक-दो मिनट तक कोई नहीं आया। तब मैंने एक कमरे में भारी कदमों की चाप सुनी और दुकान में एक आदमी ने प्रवेश किया।"

"मेरी योजना अब तक निश्चित हो चुकी थी। मैंने निश्चय किया कि सीढ़ियां चढ़कर घर में छिप जाऊं और जब वहां कोई न हो तो नकली बाल, नकली चेहरा ऐनक और कपड़ों के अलावा जो रुपया हाथ लगे वह भी लेता चलूं।"

"जो आदमी भीतर आया, वह छोटे क़द का और कुछ कुबड़ा था। उसकी बांहें बहुत लंबी और टांगें छोटी थीं। लगता था कि वह खाना छोड़कर आया है। उसने ग्राहक की आशा में इधर-उधर देखा। दुकान को खाली पाकर पहले तो उसे आश्चर्य हुआ और फिर क्रोध आया। 'बदमाश लड़के!' उसने कहा। ग़ली में जाकर इधर-उधर झांका। वह एक मिनट में फिर आया, किवाड़ को अवज्ञा से ठोकर मारी और बड़बड़ाता हुआ घर के दरवाज़े की ओर बढ़ा।"

"मैं भी उसके पीछे-पीछे चला। मेरे पांव की चाप सुनकर वह ठहर गया। मैं भी ठहर गया और उसकी श्रवण-शक्ति पर चकित रह गया। उसने घर का दरवाज़ा बंद कर दिया।"

"मैं स्तब्ध-सा खड़ा रहा। सहसा मैंने उसके लौट रहे कदमों की चाप सुनी और दरवाज़ा खुला। वह यों खड़ा दुकान में देख रहा था जैसे उसकी तसल्ली न हुई हो। फिर उसने बड़बड़ाते हुए काउंटर और अलमारियों के पीछे देखा। तब वह संदेह में भरा खड़ा रहा। उसने घर का दरवाज़ा खुला छोड़ दिया था और मैं भीतर के कमरे में चला गया।"

"यह छोटा-सा अजीब कमरा था, फर्नीचर बहुत ही साधारण था। एक कोने में बड़े-बड़े नकली चेहरे पड़े थे। मेज़ पर उसका भोजन लगा हुआ था, जो वह बीच में छोड़कर गया था। केम्प, मेरे लिए इसमें बड़ी उत्तेजना थी। कॉफ़ी मेरी नाक के नीचे पड़ी थी। वह लौटकर आया और फिर भोजन करने लगा और मैं खड़ा देखता रहा। कमरे में तीन दरवाज़े थे, एक ऊपर जाता था और एक नीचे, लेकिन वे सब बंद थे। उसकी उपस्थिति में मैं कमरे से बाहर नहीं जा सकता था और उसकी सतर्कता के कारण हिलडुल भी नहीं सकता था। दो बार छींक आई जो मैंने मुश्किल से ऐन मौके पर रोकी।"

"मेरी अनुभूतियों की शक्ति अद्भुत थी और एकदम नई। लेकिन इसके बावजूद उसके भोजन समाप्त करते-करते मैं थक गया और मुझे क्रोध आ गया। आख़िर उसने भोजन समाप्त किया और अपने भद्दे बर्तन समेटकर टीन की काली ट्रे में रखे और मेज़पोश पर जो टुकड़े गिर पड़े थे, वे भी चुने। उसके बाद उसने यह सारा सामान उठाया। उसका हाथ रुका हुआ था, इसलिए वह अपने पीछे दरवाज़ा बंद नहीं कर सका, वरना यह ज़रूर करता। मैं भी उसके साथ-साथ नीचे एक गंदे-से

किचन में गया। वह बर्तन धोने लगा। ईंटों का फ़र्श ठंडा था और वहीं खड़े उसे देखते रहना व्यर्थ था, इसलिए मैं ऊपर जाकर उसकी कुर्सी पर बैठ गया और आग तापने लगा। आग मद्धिम पड़ गई थी और मैंने बिना सोचे ही उसमें कोयले डाल दिए। वह शोर सुनकर तुरंत ऊपर आया। वह घबराया हुआ-सा कमरे में झांक रहा था और बिलकुल मेरे निकट खड़ा था। खूब देखभाल कर भी वह संतुष्ट नहीं जान पड़ता था। उसने दरवाज़े में खड़े होकर एक दृष्टि कमरे पर डाली और फिर नीचे चला गया।"

"मैं काफ़ी देर वहीं बैठा उसका इंतज़ार करता रहा। आख़िर वह आया। और उसने ऊपर का दरवाज़ा खोला। मैं भी उसके बिलकुल पीछे-पीछे ऊपर चला।"

"सीढ़ियों में भी वह सहसा ठहर गया और मैं उससे टकराते-टकराते बचा। वह खड़ा देखता और सुनता रहा। 'मैं कसम खा सकता हूं।' उसने कहा। उसका बालों वाला लंबा हाथ होंठ पर था और उसने सीढ़ियों में ऊपर-नीचे नज़र दौड़ाई। तब वह बड़बड़ाया और फिर ऊपर चला गया।"

"उसका हाथ एक किवाड़ के हत्थे पर था। वह फिर ठिठक गया। उसके चेहरे पर क्रोध मिश्रित घबराहट अंकित थी। वह मेरे पांव की मद्धिम चाप से अवगत हो रहा था। उसकी श्रवण-शक्ति बड़ी ही तेज़ थी। उसने सहसा क्रोधित होकर कहा, 'अगर इस घर में कोई व्यक्ति है'''। वह चिल्लाया और फिर वाक्य अधूरा छोड़ दिया। उसने अपना हाथ जेब में डाला। कुछ टटोला जो उसे मिला नहीं । तब वह चिड़चिड़ाता हुआ जल्दी-जल्दी नीचे उतर गया। लेकिन मैं साथ नहीं गया, उसके लौटने तक ऊपर की सीढ़ी पर बैठा रहा।"

"वह फिर ऊपर आया और अभी तक बड़बड़ा रहा था। उसने कमरे का दरवाज़ा खोला और मेरे घुसने से पहले ही बंद कर दिया।"

"मैंने चुपचाप सारे घर में घूम लेने का निश्चय किया। घर बड़ा पुराना, खस्ता और नम था। अधिकांश किवाड़ों के हत्थे सख़्त थे और मैं उन्हें घुमाते हुए डरता था। कई कमरों में फर्नीचर नहीं था और बाक़ी में थिएटर का पुराना सामान भरा हुआ था। उसके पास वाले कमरे में मैंने बहुत-से पुराने कपड़े देखे। मैंने उन्हें उलटना-पलटना शुरू किया और यह भूल गया कि उसके कान बड़े तेज़ हैं। वह दबे पांव भीतर आया और शुक्र है कि मैं ठीक समय पर चेत गया। उसके हाथ में एक पुराने फैशन का रिवाल्वर था। जबकि वह मुंह बाए संदिग्ध दृष्टि से कपड़ों के ढेर की ओर देख रहा था, मैं अचल और स्थिर खड़ा था। 'तब वही होगी,' उसने धीरे से कहा, 'बड़ी कंबख़्त है!'"

"उसने दरवाज़ा धीरे-से बंद कर दिया और मैंने ताले में चाबी के घूमने की आवाज़ सुनी। वह चला गया तो मुझे महसूस हुआ कि मैं तो अंदर बंद हो गया हूं। मैं दरवाज़े से खिड़की तक गया और फिर लौट आया और एक मिनट तक किंकर्तव्यविमूढ़ खड़ा रहा। मुझे क्रोध आ रहा था। लेकिन मैंने फ़ैसला किया कि और

कुछ करने से पहले कपड़े देख लूं। इसी प्रयास में मैंने ऊपर के खाने से एक बंडल नीचे गिराया। वह फिर भीतर आया और अबकी उसका संदेह और बढ़ गया था। इस बार उसने मुझे स्पर्श किया, वह उचककर पीछे हट गया और कमरे में बीचोबीच चकित खड़ा हो गया।"

"चूहे!" उसने होठों पर अंगुली रखकर धीमे स्वर में कहा, "निस्संदेह वह कुछ डरा हुआ था। मैं पंजों के बल कमरे से बाहर निकला, लेकिन एक तख़्ता चरचराया। अब वह कुबड़ा पिस्तौल हाथ में लिए सारे घर में घूमने लगा। वह ताले बंद करके तालियां जेब में डाल रहा था। जब मुझे महसूस हुआ कि वह क्या करने जा रहा है, मुझे क्रोध आ गया। अब तक मुझे यह भी मालूम हो गया था कि वह घर में अकेला है और मैंने निस्संकोच उसके सिर पर आक्रमण किया।"

"उसके सिर पर आक्रमण किया।" केम्प चीख़ पड़ा।

"हां, जब वह सीढ़ियां उतर रहा था, मैंने एक स्टूल उठाकर उसके सर पर मारा। वह पुराने बोरे की तरह सीढ़ियों पर से लुढ़क गया।"

"लेकिन मैं कहता हूं कि मानवता के साधारण नियम!"

"वे साधारण लोगों के लिए ठीक हैं। लेकिन केम्प, बात यह है कि मुझे वेश बदलकर उसके घर से बाहर निकलना था। इसका और कोई तरीका नहीं था। मैंने उसके मुंह में कपड़ा ठूंस दिया और उसे एक चादर में बांध दिया।"

"चादर में बांध दिया!"

"मैंने उसकी गठरी-सी बना दी। उस मूर्ख को भयभीत और शांत करने का यही एक उपाय था। केम्प, तुम व्यर्थ मेरी ओर यों देख रहे हो जैसे मैंने हत्या की हो। उसके पास पिस्तौल था। अगर वह मुझे देख लेता तो फिर जिंदा थोड़े ही छोड़ता।"

"लेकिन फिर भी," केम्प ने कहा, "आज के इंगलैड में। वह अपने घर में था और तुम उसे लूट रहे थे।"

"लूट रहा था! इसका मतलब है कि तुम मुझे चोर भी कहोगे। केम्प! मैं तुम्हें इतना मूर्ख नहीं समझता कि इस रूढ़िगत सदाचार को मानोगे। क्या तुम मेरी स्थिति को नहीं समझते?"

"और उसकी स्थिति को भी!"

अदृश्य पुरुष उठ खड़ा हुआ और तीव्र दृष्टि से देखते हुए बोला, "इससे तुम्हारा क्या मतलब है?"

केम्प का चेहरा तनिक कठोर पड़ गया। उसने अपने आपको संयत किया और स्वर बदलकर कहा, "आख़िर तुम्हें कुछ करना ही था। तुम भी तो एक विकट स्थिति में थे। मगर फिर भी..."

"हां, मेरी स्थिति बड़ी विकट थी। फिर उसने मुझे उत्तेजित भी किया।

रिवाल्वर हाथ में लिए मेरा पीछा कर रहा था और दरवाज़ों को ताले लगा रहा था। तुम मुझे तो अपराधी नहीं कह सकते। क्या तुम ऐसा कहते हो?"

"मैं किसी को अपराधी नहीं कहा," केम्प ने कहा, "अब ऐसा नहीं कहा जाता। तुमने आगे क्या किया?"

"मैं भूखा था। नीचे रसोईघर में थोड़ी-सी रोटी और पनीर मिला, जो मेरे लिए काफ़ी था। मैंने ब्रांडी और थोड़ा-सा पानी पिया। फिर उस बंडल बने कुबड़े के पास से गुज़रा और पुराने कपड़ों के कमरे में चला गया। उसकी एक खिड़की ग़ली में खुलती थी। मैंने उसमें से झांककर देखा तो धूप निकली हुई थी। ग़ली में खूब भीड़-भाड़ थी। लोग-बाग तथा फलों व मछलियों से भरे छकड़े आ-जा रहे थे। कमरे से स्प्रिट की गंध आ रही थी, जो शायद कपड़े साफ़ करने के लिए प्रयोग की गई थी।"

"मैंने एक-एक चीज़ देखना शुरू किया। जो चीज़ मेरे काम आ सकती थी, उसे मैंने स्टोर में ला रखा और फिर छांटना शुरू किया। मुझे एक हैंड बेग, कुछ पाउडर, सुर्खी और प्लास्टर भी मिल गई।"

"मैंने अपने चेहरे को पेंट करके पाउडर लगाने की बात सोची थी, ताकि मैं दृश्य हो जाऊं। लेकिन मुश्किल यह थी कि ऐसी दशा में दोबारा अदृश्य बनने के लिए तारपीन और दूसरी वस्तुओं की ज़रूरत पड़ती। आख़िर मैंने एक भद्दी-सी नाक, काली ऐनक, भरी-सी मूंछें और नकली बाल लगाए। नीचे का कपड़ा कोई नहीं था। बेग मैं बाद में खरीद सकता था। इस समय मैंने पादरी की टोपी और एक चोगा पहन लिया। जुराबें नहीं थीं, लेकिन कुबड़े के बूट मेरे लिए कुछ ढीले थे, लेकिन काम दे गए। दुकान के एक डेस्क में तीन सोवरन और चांदी के तीस शिलिंग और बंद ताक में सोने के आठ पौंड थे। अब मैं इत्मीनान से दुनिया में जा सकता था।"

"अब मन में एक अजीब दुविधा उत्पन्न हुई। क्या मैं वाक़ई मनुष्य दिखाई दूंगा? मैंने आईना देखा तो सब ठीक दिखाई पड़ा। मैं ऐसा लगता था जैसे कोई थिएटर में कंजूस का अभिनय करने वाला व्यक्ति हो, लेकिन लगता था आखिर आदमी जैसा ही। अब मैंने आत्मविश्वास के साथ अपने को एक बड़े आईने में हर पहलू से देखा।"

"मैं दो-चार मिनट साहस बटोरता रहा। फिर मैंने दुकान का दरवाज़ा खोला और उस ठिगने आदमी को चादर में बंधा छोड़कर गली में निकल आया। पांच मिनट में मैंने कोई बारह मोड़ घूमे। किसी ने मेरी ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। मेरी मुश्किल दूर हुई।"

"और कुबड़े के बारे में तुमने कुछ नहीं सोचा?" केम्प ने पूछा।

"नहीं," अदृश्य पुरुष ने उत्तर दिया, "और मैंने आज तक यह नहीं सुना कि

फिर उसका क्या हुआ। मेरा ख़्याल है कि उसने अपने आप को हाथ-पांव मारकर खोल लिया होगा। गांठें काफ़ी सख़्त थीं।"

वह चुप हो गया और खिड़की के पास जाकर बाहर देखा।

"जब तुम स्ट्रैंड में गए तब क्या हुआ?"

"ओह! भ्रम फिर टूटा। मेरा ख़्याल था कि मुसीबतें अब ख़त्म हो गईं। मैं सोचता था कि अपना भेद बताने के अतिरिक्त मैं जो चाहूं कर सकता हूं। मैंने जो कुछ किया, उसका मुझ पर प्रभाव नहीं पड़ सकता। मैं जब चाहूं कपड़े उतारकर अदृश्य हो सकता हूं। कोई मुझे रोक नहीं सकता। रुपया जहां भी मिले मैं उड़ा सकता हूं। मैंने एक अच्छे-से होटल में शानदार दावत खाने और रिहायश करने की सोची। मैं एक होटल में गया और लंच का आर्डर दे ही रहा था कि सहसा ध्यान आया कि मैं अपने अदृश्य चेहरे को नंगा किए बिना तो खा ही नहीं सकूंगा। मैंने आर्डर देने का विचार छोड़ दिया। यह कहकर कि मैं अभी पांच मिनट में आया, उत्तेजित-सा बाहर निकल आया। मैं नहीं समझता कि तुम्हें भूख में कभी यों निराश होना पड़ा हो।"

"इस प्रकार तो नहीं, लेकिन मैं इसकी कल्पना कर सकता हूं।" केम्प ने कहा।

"मैं किसी का सिर तोड़ देने की स्थिति में था। आख़िर मैं एक-दूसरे होटल में गया और एक अलग कमरा मांगा। 'मैं बुरी तरह विकृत हूं।' मैंने कहा। उन्होंने कौतूहल से मेरी ओर देखा, लेकिन उससे उन्हें कोई सरोकार नहीं था। मुझे लंच मिल गया। उनकी सर्विस अच्छी नहीं थी। खैर, मैंने भोजन किया और सिगरेट पीते हुए आगे का प्रोग्राम सोचने लगा। बाहर बर्फ़ का तूफ़ान शुरू हो रहा था।"

"जितना मैं सोच रहा था केम्प, उतना ही मुझे मालूम हो रहा था कि इस गंदे और ठंडे वातावरण में और एक सभ्य गुंजान शहर में अदृश्य पुरुष होना कितनी बड़ी लाचारी है। इस अनुभव से पहले मैंने अनेक लाभों ही की कल्पना की थी। इस समय मुझे बड़ी निराशा हुई। मैंने उन चीज़ों की सूची बनाई जिनकी एक व्यक्ति को आवश्यकता होती है। निस्संदेह अदृश्यता ने उन्हें प्राप्त करना संभव बना दिया, लेकिन जब वे प्राप्त कर ली जाएं तो उनसे यथोचित लाभ उठाना संभव नहीं था। किसी स्थान का महत्त्व है, जब तुम वहां जा नहीं सकते? स्त्रियों से प्रेम का क्या अर्थ है, जब तुम किसी एक स्त्री से मिल नहीं सकते? राजनीति में, खेलों में, दानशीलता में और जोड़-तोड़ से ख्याति प्राप्त करने में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी। तब मैं क्या करूं? और वह क्या चीज़ है जिसके लिए मैं एक रहस्य और पट्टियों बंधा कंकाल बन गया हूं?"

वह रुका और उसने फिर खिड़की के बाहर निगाह डाली।

"लेकिन तुम इपिंग कैसे पहुंचे?" केम्प ने पूछा जो अपने मेहमान को बातों में व्यस्त रखने के लिए उत्सुक था।

"मैं वहां काम करने के लिए गया था। मेरे मन में एक विकसित विचार था। वह अब भी है और वह अब पूर्ण रूप से विकसित है। यह वापस जाने का ढंग है! जो कुछ खोया है उसे प्राप्त करने का। इसी के बारे में मैं तुमसे बात करना चाहता हूं..."

"तुम सीधे इपिंग गए?"

"हां, मुझे सिर्फ़ अपनी तीनों पुस्तकें और चैक-बुक लेनी थी और इसके अतिरिक्त कपड़े और अपने इस विचार को कार्यान्वित करने के लिए रासायनिक पदार्थ खरीदने थे। इसके बाद मैं फौरन चल पड़ा। कितना भयानक तूफ़ान था। मुझे डर था कि कहीं चिपकी हुई नाक पर बर्फ़ न जम जाए।"

"अंत में," केम्प ने कहा, "परसों जब उन लोगों ने तुम्हारे बारे में जान लिया, तो तुमने... अख़बारों से यही अंदाज़ा लगता है..."

"क्या, क्या मैंने उस मूर्ख सिपाही की हत्या कर डाली?"

"नहीं," केम्प ने कहा, "उसके शीघ्र ठीक हो जाने की आशा है।"

"यह उसकी किस्मत है। मैं तो आपे से बाहर हो गया था। मूर्ख कहीं के। उन्होंने मुझे जाने क्यों नहीं दिया? और वह नानबाई?"

"किसी के मरने की संभावना नहीं।" केम्प ने कहा।

"मुझे अपने इस आवारा आदमी के बारे में कुछ मालूम नहीं।" अदृश्य पुरुष ने एक नीरस हंसी हंसते हुए कहा।

"भगवान की कसम, केम्प!... तुम जैसे लोग नहीं जानते कि क्रोध क्या होता है। तुम वर्षों व्यवस्थित ढंग से काम करो, उसके लिए अपनी जान खपा दो और फिर दुनिया भर के ऐरे-गैरे, कीड़े-मकोड़े तुम्हारे मार्ग में आकर बाधा बनें... अगर फिर ऐसा हुआ तो मैं एकदम पागल हो जाऊंगा और उनके सिर तोड़ दूंगा।"

"उन्होंने अपने कारनामों से परिस्थिति को हज़ारों गुना कठिन बना दिया है।"

योजना जो असफल रही

"लेकिन हमें अब करना क्या होगा?" केम्प ने खिड़की से बाहर झांकते हुए कहा।

वह उठकर अपने मेहमान के निकट चला गया ताकि वह उन तीन आदमियों को न देख सके, जो सड़क से पहाड़ी पर चढ़ रहे थे। केम्प के ख़्याल में उनकी चाल असह्य रूप से धीमी थी।

"जब तुम पोर्ट बरडोक जा रहे थे तो तुम्हारी क्या योजना थी? क्या तुमने कोई योजना बनाई थी?"

"मैं इस देश से निकल जाना चाहता था। लेकिन तुमसे मिलने के बाद मैंने वह योजना तज दी है। मैंने सोचा था कि मौसम गर्म है और अदृश्य रहना संभव होगा, इसलिए मैं दक्षिण चला जाऊं। विशेषकर इस समय जब मेरा भेद खुल गया है और प्रत्येक व्यक्ति की दृष्टि प्रत्येक लबादे वाले मुंह ढके व्यक्ति पर पड़ेगी। यहां से फ्रांस को जहाज़ जाते हैं। मेरा इरादा किसी एक जहाज़ में सवार हो जाने का था। तब मैं गाड़ी द्वारा स्पेन अथवा अल्जीरिया जा सकता था। यह कोई मुश्किल काम नहीं था। वहां आदमी सदा अदृश्य रह सकता है और जीवित रह सकता है। मैं उस आवारा आदमी का इस्तेमाल गोलची और बोझा ढोने वाले के रूप में कर रहा था, जब तक कि मैं किताबें और सामान अपने पास मंगवाने का प्रबंध कर लूं।"

"लेकिन उसने मुझे, इतना तो ठीक है, चकमा देने का प्रयत्न किया। उसने मेरी पुस्तकें छिपा दी हैं केम्प, उसने मेरी पुस्तकें छिपा दी हैं।"

"अगर मैं उसे पकड़ सकूं तो..."

"उससे पुस्तकें लेने का यही सबसे अच्छा उपाय है।"

"लेकिन वह है कहां? क्या तुम्हें मालूम है?"

"वह थाने में है। उसने अपने को अपनी इच्छा से सबसे मज़बूत कोठरी में बंद कराया है।"

"कुत्ता!" अदृश्य पुरुष ने कहा।

"लेकिन इससे तुम्हारी योजना में बाधा पड़ती है।"

"हमें वे पुस्तकें हासिल करनी चाहिए। वे पुस्तकें ज़रूरी हैं।"

"अवश्य!" केम्प ने घबराए हुए से कहा। उसे लगा मानो उसने बाहर कदमों की चाप सुनी है। "निश्चित रूप से हमें वे पुस्तकें तो प्राप्त करनी ही चाहिए। लेकिन उन्हें प्राप्त करना कुछ कठिन नहीं होगा, अगर वह यह नहीं जानता कि वह तुम्हारे लिए हैं।"

"नहीं।" अदृश्य पुरुष ने कहा और वह सोचने लगा।

केम्प ने बात जारी रखने के लिए कोई विषय सोचने का प्रयत्न किया, लेकिन अदृश्य पुरुष आप ही बोला :

"तुम्हारे घर में आ जाने से मेरी तमाम योजना बदल गई है। तुम्हीं ऐसे व्यक्ति हो जो मुझे समझ सकते हो। जो कुछ हुआ है, जो कुछ अख़बारों में छप चुका है और मेरी पुस्तकें गुम हो जाने के बावजूद और भी बहुत संभावनाएं हैं--बहुत अधिक संभावनाएं हैं।"

"तुमने किसी को बताया तो नहीं कि मैं यहां हूं?" उसने अचानक पूछा।

केम्प हिचकिचाया और फिर बोला, "निश्चित रूप से मैंने नहीं बताया।"

"किसी को नहीं।" ग्रिफ़िन बोला।

"बिलकुल नहीं।"

"अच्छा! अब–" ग्रिफ़िन उठा और हाथ कमर पर रखकर कमरे में टहलने लगा।

"मैंने ग़लती की, केम्प। यह काम अकेले करना बहुत बड़ी ग़लती थी। मैंने शक्ति, समय और अवसर को व्यर्थ खोया है। अकेला व्यक्ति कितना कम कर सकता है! थोड़ा-सा कष्ट दिया, थोड़ा-सा लूटा, बस इतना ही।"

"केम्प, मुझे एक सहायक चाहिए। सिर छिपाने का एक ठिकाना, खाने-पीने, सोने और आराम करने की व्यवस्था चाहिए। मुझे एक सहायक अवश्य चाहिए। सहायक हो, भोजन हो, आराम हो तो हज़ार बातें संभव हैं।"

"अब तक मैं बिना सोचे ही काम करता रहा हूं। हमें विचार करना होगा कि अदृश्यता से क्या संभव है और क्या संभव नहीं है। घरों में सेंध लगाने से इससे कोई लाभ नहीं। अगर तुम मुझे एक मर्तबा पकड़ लो तो फिर सहज में क़ैद में रख सकते हो। लेकिन मुझे पकड़ना ही कठिन है। यह अदृश्यता दो प्रकार से उपयोगी है। यह किसी के पास जाने के लिए उपयोगी है, और उससे दूर भाग जाने के लिए उपयोगी है। मैं एक आदमी के गिर्द घूम सकता हूं, चाहे उसके पास कोई भी हथियार क्यों न हो। मैं चाहूं जहां वार कर सकता हूं और फिर बचकर साफ़ निकल सकता हूं।"

केम्प का हाथ अपनी मूंछों पर गया। क्या सीढ़ियों के नीचे कोई जा रहा था?

"केम्प, हमें यह मारने का ही काम करना होगा।"

"मारने का काम करना!" केम्प ने दोहराया, "मैं तुम्हारी बात सुन रहा हूं ग्रिफ़िन लेकिन मैं तुमसे सहमत नहीं। समझे? हत्या क्यों?"

"लंपट हत्या नहीं, न्यायपूर्वक हत्या। बात यह है, लोगों को मालूम है कि एक अदृश्य पुरुष है और हम भी जानते हैं कि एक अदृश्य पुरुष है और अब उस अदृश्य पुरुष को आतंक का साम्राज्य स्थापित करना है। यों, यह चौंका देने वाली बात अवश्य है। पर उसे ऐसा राज्य स्थापित करना होगा। उसे एक बरडोक जैसे कस्बा पर अपना अधिकार जमाना चाहिए। वहां वह शासन चलाए। यह वह हज़ार ढंग से कर सकता है—घरों में दरवाज़ों के नीचे से पत्तियां फेंक देना काफ़ी होगा। जो उसका हुक्म न माने उसकी वह हत्या कर दे और जो उनकी रक्षा के लिए आए उनको मार डाले।"

"हूं!" केम्प ने कहा। वह अब ग्रिफ़िन की आवाज़ सुनने के बजाय अपना सामने का दरवाज़ा खुलने और बंद होने की आवाज़ सुन रहा था।

"ग्रिफ़िन, मुझे लगता है कि तुम्हारा सहायक मुसीबत में फंस जाएगा।" उसने उसका ध्यान बंटाने के लिए कहा।

"किसी को मालूम ही नहीं होगा कि वह मेरा सहायक है," ग्रिफ़िन ने आत्मविश्वास के साथ कहा और फिर चौंका, "हैं, यह नीचे क्या है?"

"कुछ नहीं।" केम्प ने उत्तर दिया और फिर सहसा तेज़-तेज़ और ऊंचे स्वर में बोलने लगा, "मैं इससे सहमत नहीं ग्रिफ़िन। मानव जाति के विरुद्ध हम ऐसी बात क्यों सोचें? इससे तुम प्रसन्नता की आशा कैसे करते हो? यह तो निरा भेड़ियापन है। अपना आविष्कार प्रकाशित कर दो—विश्व का कम-से-कम राष्ट्र का विश्वास प्राप्त करो। तनिक सोचो कि लाखों सहायकों के साथ तुम क्या कुछ कर सकोगे?"

"सीढ़ियों पर कोई आ रहा है।" अदृश्य पुरुष ने बात काटी।

"खुराफात।" केम्प ने कहा।

"मैं देख लूं।" उसने कहा और बांह फैलाए दरवाज़े की ओर बढ़ा।

और तब घटनाएं तेज़ी से घटित हुईं। कैम्प एक सेकेंड असमंजस में रहा, फिर उसे रोकने के लिए बढ़ा। अदृश्य पुरुष चौंका। "गद्दार!" उसने कहा। फिर ड्रेसिंग डाउन खुली और अदृश्य पुरुष बैठकर कपड़े उतारने लगा। केम्प ने तीन लंबे डग दरवाज़े की ओर भरे और अदृश्य पुरुष जिसकी टांगें लुप्त हो गई थीं, खड़े होकर चिल्लाया। केम्प ने दरवाज़ा खोल दिया।

ज्यों ही दरवाज़ा खुला, सीढ़ियों पर कदमों की चाप और आवाज़ें सुनाई दीं।

केम्प अदृश्य पुरुष को भीतर धकेलकर बाहर निकला और दरवाज़ा बंद कर लिया। दूसरे ही क्षण अदृश्य पुरुष पढ़ने के इस कमरे में क़ैदी हो जाता लेकिन एक मामूली-सी बात ने उसे बचाया। जैसे ही केम्प ने झटके से दरवाज़ा बंद किया, चाभी फ़र्श पर जा गिरी। केम्प का चेहरा सफ़ेद पड़ गया। उसने हत्थे को दोनों हाथों से

मज़बूत पकड़ लिया। वह बाहर से और ग्रिफ़िन भीतर से खींच रहा था। एक बार किवाड़ छः इंच खुला और फिर बंद हो गया। दोबारा वह झटके के साथ एक फुट खुल गया और उसमें से ड्रेसिंग गाउन बाहर निकली। अदृश्य अंगुलियों ने केम्प के गले को पकड़ लिया और उसने आत्म-रक्षा के लिए हत्थे को छोड़ दिया। उसे धक्का देकर नीचे गिरा लिया गया और ड्रेसिंग गाउन उसके ऊपर चढ़ बैठी।

कर्नल एडी सीढ़ियों के दरम्यान में था और बरडोक में पुलिस का बड़ा अफसर था और उसे केम्प का पत्र मिला था। उसने केम्प को लड़खड़ाते, संभलते और बॉल के सदृश फ़र्श पर गिरते देखा और वह चकित रह गया।

फिर उसके मुंह पर हठात् एक चोट पड़ी। पर कैसे! लगता था कि एक भारी बोझ उस पर चढ़ बैठा है। फिर उसे सिर के बल सीढ़ियों पर ढकेल दिया गया। एक अदृश्य पांव उसकी कमर पर रखा गया और एक प्रेत-सा नीचे उतर गया। उसने दो पुलिस अफसरों को हाल में चिल्लाते और दौड़ते सुना। सामने का दरवाज़ा खुला और फिर खट से बंद हो गया।

वह जैसे-तैसे उठा। उसने सीढ़ियों से उतरते लोगों को देखा। उसके बाल बिखरे हुए थे, चोट से एक गाल सफ़ेद पड़ गया था, होंठ से खून बह रहा था और गुलाबी ड्रेसिंग गाउन और कुछ दूसरे कपड़े उसकी बांहों में थे।

"हे भगवान्!" केम्प चिल्लाया, "खेल ख़त्म हो गया! वह भाग निकला।"

अदृश्य पुरुष का पीछा

केम्प और कर्नल एडी दोनों सीढ़ियों में खड़े थे। केम्प सारी घटनाएं जल्दी-जल्दी सुना रहा था, ग्रिफ़िन जो कपड़े छोड़ गया था, वे अब भी उसकी बांह पर थे। एडी के पहले तो कुछ पल्ले नहीं पड़ा, पर धीरे-धीरे स्थिति उसकी समझ में कुछ-कुछ आने लगी।

"वह पागल हो गया है," केम्प ने कहा, "अमानुषिक! वह स्वार्थ का पुतला है। वह सिर्फ़ अपने ही लाभ और अपनी ही रक्षा की बात सोचता है। मैंने उसके बर्बर स्वार्थ की कहानी सुनी है... उसने लोगों को घायल किया है। अगर हम रोकेंगे नहीं तो वह उनकी हत्या करेगा। वह आतंक फैलाएगा। कोई उसे रोक नहीं सकता। वह यहां से कुछ क्रुद्ध होकर गया है।"

"उसे अवश्य पकड़ा जाएगा।" कर्नल एडी ने कहा।

"लेकिन कैसे?" केम्प ने कहा और फिर उसका मस्तिष्क विचारों से भर गया। "आप अभी से हर एक आदमी को तैनात कर दें और उसे इस ज़िले से बाहर न जाने दें। अगर वह एक बार निकल गया तो देहात में उधम मचाएगा, लोगों की हत्या करेगा। वह आतंक का साम्राज्य स्थापित करने के स्वप्न देखता है। आतंक का साम्राज्य! आप सड़कों, गाड़ियों और जहाज़ों पर पहरा लगा दें। फ़ौज मदद करे। सहायता के लिए तार दीजिए। कुछ पुस्तकों का उसके लिए बड़ा महत्त्व है, वह शायद उन्हें प्राप्त करने के लिए यहां रहेगा। आपके थाने में एक व्यक्ति मार्वेल है।"

"मुझे मालूम है," कर्नल एडी ने कहा, "वे पुस्तकें... वह आवारा..."

"कहता है कि उसके पास नहीं हैं। लेकिन अदृश्य मनुष्य का ख़्याल यही है कि उसके पास है। और आप उसे खाने और सोने न दें। रात-दिन सारा देश जागकर उसका निरीक्षण करे। तमाम खुराक भीतर बंद रखी जाए—ताकि वह उसके लिए भीतर घुसे। मकान बंद रखे जाएं। और भगवान करे खूब सर्दी पड़े और मेंह बरसे। सभी देशवासी उसकी तलाश शुरू करें और सतर्क रहें। एडी, वह बहुत भयंकर है। जब तक गिरफ़्तार नहीं हो जाता न जाने वह क्या कुछ कर गुज़रे।"

"हम और क्या कर सकते हैं?" एडी ने कहा, "मैं अभी जाकर इसकी व्यवस्था

करता हूं। लेकिन तुम भी चलो। हाप्स, हम एक तरह की युद्ध समिति की बैठक करें। और रेलवे मैनेजरों को सहायता के लिए बुलाएंगे। यह बहुत ज़रूरी है। तुम चलते-चलते मुझे बताना कि हम और क्या करें? यह सामान रख दो और चलो।"

दूसरे ही क्षण वे दोनों नीचे उतरे। सामने का दरवाज़ा खुला था और दोनों पुलिस अफसर उसमें खड़े शून्य में झांक रहे थे। "जनाब, वह चला गया।" एक ने कहा।

"हमें इसी समय बड़े थाने पहुंचना चाहिए।" एडी ने कहा, "तुममें से एक दौड़कर जाए और नीचे हमारे लिए गाड़ी तैयार रखे। अच्छा केम्प, और क्या?"

"कुत्ते!" केम्प ने कहा, "कुत्ते मंगवाओ। वे उसे देखेंगे नहीं, पर सूंघ लेंगे।"

"ठीक है, हमें तो इसका ख़्याल ही न आता। हेल्स्टेड के अफसरों को मालूम है कि एक आदमी के पास शिकारी कुत्ते हैं। अच्छा, और?"

"वह जो भोजन करता है, वह दृश्य हो जाता है।" केम्प ने कहा, "इसलिए भोजन के बाद जब तक कि वह पच न जाए, उसे अपने आपको छिपाना पड़ता है। तुम्हें हर जगह उसे ढूंढना चाहिए। हर झाड़ी में, हर एकांत स्थान में। और हर एक हथियार छिपा देना चाहिए। वह ऐसी चीज़ें ज़्यादा समय तक अपने पास नहीं रख सकता। कोई भी चीज़ जिसे वह छीन सकता है और जिससे दूसरों पर वार कर सकता हो, छिपा देनी चाहिए।"

"ठीक है। हम उसे पकड़ ही लेंगे।" एडी ने कहा।

"और सड़कों पर!" केम्प कहते-कहते रुक गया।

"हां!" एडी ने कहा।

"पिसा हुआ कांच बिछा दो। मैं जानता हूं कि यह क्रूरता है। लेकिन ज़रा सोचो तो कि वह क्या कर सकता है?"

"यह कोई अच्छी बात नहीं। फिर भी मैं पिसा हुआ कांच तैयार रखूंगा। अगर उसने अधिक अत्याचार..."

"मैं बताता हूं, उसमें मनुष्यता बिलकुल नहीं रही। मुझे विश्वास है, वह आतंक का साम्राज्य स्थापित करने का प्रयास करेगा। अभी, इसी समय जब मैं तुमसे बातें कर रहा हूं, क्योंकि अब तक वह अपनी मुक्ति की भावनाओं पर काबू पा गया होगा। हम उसे इसका अवकाश ही न दें। उससे आगे रहें। उसने अपने आपको मानव जाति से अलग कर लिया है। उसका खून उसके सिर नाचेगा।"

विक्स्टेड की हत्या

लगता है कि अदृश्य पुरुष जब केम्प के घर से निकला तो वह क्रोध के मारे आपे से बाहर था। एक नन्हा बच्चा केम्प के दरवाज़े के बाहर खेल रहा था। उसने बच्चे को उठाकर इतने ज़ोर से एक ओर को फेंका कि उस बेचारे का टख़ना टूट गया। उसके बाद चंद घंटे तक किसी को मालूम नहीं हो सका कि वह कहां गया और क्या करता रहा। कल्पना की जा सकती है कि जून की गर्म दोपहरी में वह जल्दी-जल्दी भागकर पहाड़ी पर चढ़ा होगा और पोर्ट बरडाक के पीछे के खुले मैदान में पहुंचा होगा। अपने असहनीय भाग्य पर उसे क्रोध आ रहा होगा और निराशा हो रही होगी और वह गर्मी से परेशान और थकावट से चूर छिंटनडीक के जंगल में जा छिपा होगा क्योंकि यही एक ऐसा सुरक्षित स्थान था, जहां बैठकर वह मानव जाति के विरुद्ध अपनी ध्वस्त योजनाओं पर दोबारा विचार कर सकता था। यही स्थान उसके लिए शरण-स्थान बना होगा क्योंकि दोपहर को दो बजे के करीब उसके हाथों एक अत्यंत दुखद घटना घटित हुई।

कह नहीं सकते इस बीच में उसकी मनःस्थिति क्या थी और वह क्या-क्या योजनाएं बनाता रहा। इसमें संदेह नहीं कि केम्प के विश्वासघात ने उसे बहुत उत्तेजित कर दिया था। हम समझ सकते हैं कि केम्प का अपने मित्र के साथ विश्वासघात करने का उद्देश्य अच्छा था, फिर भी इस आकस्मिक हमले से अदृश्य व्यक्ति को कितना क्रोध आया होगा, हम उसकी कल्पना भी कर सकते हैं, और उसके साथ किसी हद तक हमें हमदर्दी भी हो सकती है। शायद आक्सफोर्ड स्ट्रीट के स्तब्ध कर देने वाले अनुभवों की याद आ गई हो, क्योंकि आतंकित संसार का निर्दय सपना देखने में उसने केम्प के सहयोग का भरोसा किया था। जो कुछ भी हो, वह लगभग दोपहर में आदमियों के निवास स्थान से दूर हो गया और कोई जीवित गवाह बता नहीं सकता था कि उसने लगभग ढाई बजे तक क्या किया। मानवता के लिए शायद यह सौभाग्य की बात थी, लेकिन उसके लिए घातक निष्क्रियता ही थी।

इस बीच में बहुत से लोग ज़िले भर में उसकी खोज में व्यस्त थे। सुबह तक वह सिर्फ़ एक भय और कहानी मात्र था, परंतु दोपहर को केम्प के एक इश्तहार ने

उसे भयानक शत्रु बना दिया था, जिसे पकड़ना, जीवित अथवा मृत, अत्यावश्यक था। ज़िले के सभी आदमी तेज़ी से संगठित हो रहे थे। दो बजे तक भी वह किसी गाड़ी द्वारा ज़िले से बाहर जा सकता था लेकिन दो के बाद यह भी संभव नहीं रहा क्योंकि इस इलाके में अर्थात् साउथ हेम्पटन, विंचेस्टर, ब्राइटर और हारशम के समानान्तर चतुर्भुज के बीच चलने वाली हर सवारी गाड़ी के दरवाज़े बंद कर लिए गए और मालगाड़ियां लगभग बिलकुल रोक दी गईं। और पोर्ट बरडोक के गिर्द बीस मील के लंबे दायरे में लोग बंदूकों और लाठियों से सशस्त्र होकर तीन-चार की टोलियों में कुत्ते साथ लिए उसे सड़कों और खेतों में खोजने लगे।

घुड़सवार सिपाही देहात में घूम-घूमकर लोगों को बता रहे थे कि वे अपने दरवाज़े बंद रखें और जब तक हथियार पास न हो, बाहर न निकलें। तीन बजे तक तमाम बच्चों के स्कूलों में छुट्टी कर दी गई और बच्चे डरे, सहमे झुंडों में घर लौटे। केम्प का विज्ञान जिस पर एडी के हस्ताक्षर थे, लगभग 4-5 बजे तक तमाम ज़िले में लगा दिया गया। इसमें संक्षेप में, लेकिन स्पष्ट शब्दों में संघर्ष की शर्तें बताई गई थीं, बताया गया था कि अदृश्य पुरुष को भोजन और नींद से वंचित रखा जाए और उसकी गतिविधि के बारे में पूर्ण रूप से सतर्क रहा जाए और कभी भी उसकी हरकतों के बारे में मालूम होने पर फौरन काम किया जाए। अधिकारी वर्ग ने भी बड़ी तेज़ी से निर्णय किए और उन्हें शीघ्र ही कार्यान्वित किया। इस अद्‌भुत व्यक्ति के प्रति विश्वास इतना व्यापक था कि रात होने से पहले-पहले कई सौ वर्ग मील के इलाके पर घेरा डाल दिया गया। और रात होने से पहले ही सारे देहात में सनसनी फैल गई क्योंकि विक्स्टेड की हत्या की कहानी धीरे-धीरे एक कान से दूसरे कान तक पहुंचती रही और सारे इलाके में फैल गई।

अगर हमारा यह ख़्याल दुरुस्त है कि अदृश्य पुरुष हिंटनडीन के जंगल में छिपा था, तब फिर यह भी ठीक है कि यह अपराह्न में ही किसी ऐसी मुहिम पर निकला, जिसमें हथियार की ज़रूरत थी। हम नहीं जान सकते कि उसकी योजना क्या थी लेकिन गवाही मिली है कि विक्स्टेड से जब उसकी भेंट हुई तो उसके हाथ में लोहे की सलाख़ थी। कम-से-कम मुझे इस सूचना पर विश्वास है।

हमें इस घटना का विवरण मालूम नहीं। यह लार्ड बरडोक के दरवाज़े से दो सौ गज़ परे एक गड्ढे के किनारे घटित हुई। काफ़ी घोर संघर्ष के चिह्न मिले क्योंकि धरती रौंदी हुई थी। विक्स्टेड के शरीर पर कई घाव थे और उसकी छड़ी टूटी पड़ी थी। हत्या सिर्फ़ हत्या के लिए की गई अथवा कोई उद्देश्य भी था, यह कुछ मालूम नहीं। दरअसल इसे पागलपन कहना ही उचित है। विक्स्टेड की उम्र पैंतालीस-छियालीस साल थी। वह लार्ड बरडोक का नौकर था और बहुत ही भला आदमी था और कभी भी ऐसे भयानक विरोधी का क्रोध जागृत नहीं कर सकता था। वह दोपहर का भोजन करने चुपचाप घर जा रहा था। लगता था कि अदृश्य पुरुष ने उसे मार्ग में रोक

लिया। लोहे की सलाख़ से उस पर प्रहार किया, उसकी बांह तोड़ दी, उसे गिरा दिया और फिर उसका सिर तोड़ दिया।

निस्संदेह उसने यह सलाख़ अपने शिकार से मिलने के पहले जंगले से उखाड़ी होगी, और पहले ही से उसके हाथ में होगी। केवल दो बातें उपर्युक्त बातों के अलावा ऐसी हैं जिनका इस मामले में महत्त्व है। एक तो लोगों का यह कहना कि जिस गड्ढे के किनारे विक्स्टेड की हत्या हुई वह उसके मार्ग में नहीं था बल्कि लगभग दो गज़ हटकर था। दूसरे एक नन्ही लड़की का कहना है, जब वह दोपहर बाद अपने स्कूल जा रही थी, उसने विक्स्टेड को अजीब तरह से फुदकते हुए जाते देखा था। उसने जिस तरह विक्स्टेड के चलने की नकल की, उससे प्रकट होता है कि विक्स्टेड के आगे-आगे कोई वस्तु चल रही थी, वह उसके पीछे चल रहा था और बार-बार उसे अपनी छड़ी से ठोंकता हुआ जा रहा था। लड़की ही वह आख़िरी व्यक्ति था जिसने उसे जीवित देखा था। तब वह उसकी आंखों से ओझल हो गया। झाड़ियों और ज़मीन की ढलान के कारण वह संघर्ष होते देख नहीं सकी।

अब लेखक की समझ में यह बात आती है कि हत्या सिर्फ़ हत्या के लिए नहीं की गई। हम मान सकते हैं कि ग्रिफ़िन सलाख़ हाथ में लिए चल रहा था लेकिन हत्या के लिए प्रयोग करने का उसका कोई इरादा नहीं था। विक्स्टेड ने सलाख़ को अपने-आप हवा में उड़ते देखा। पोर्ट बरडोक दस मील के फ़ासले पर है और संभव है कि उसने अदृश्य पुरुष के बारे में कुछ न सुना हो। इसलिए वह कौतूहल में भरकर उसके पीछे-पीछे भागा हो। तब यह कल्पना की जा सकती है कि अदृश्य पुरुष इस भय से कि कहीं लोग उसकी उपस्थिति जान न जाए, चुपचाप भाग रहा हो और उत्सुक होकर उत्तेजित विक्स्टेड उसका पीछा कर रहा हो और आख़िर में उसने अपनी छड़ी से उसे मार दिया हो।

निस्संदेह अदृश्य पुरुष साधारण अवस्था में तेज़ भागकर अधेड़ विक्स्टेड को बहुत पीछे छोड़ सकता था। लेकिन दुर्भाग्य से घटना यों घटित हुई कि वह दौड़ते-दौड़ते एक ऐसे कोने में जा फंसा जहां एक ओर झाड़ियां और दूसरी ओर गड्ढा था अब इस असाधारण स्थिति में अदृश्य पुरुष के क्रोध का परिणाम जो हो सकता था, वह हुआ।

लेकिन यह सब कल्पनामात्र है। तथ्य सिर्फ़ इतना है, क्योंकि बच्चों की बताई हुई बातें अक्सर अविश्वसनीय होती हैं, विक्स्टेड का शव मिला और खून में लिथड़ी लोहे की सलाख़ मिली। उसके द्वारा सलाख़ त्यागना यह सिद्ध करता है कि ग्रिफ़िन के मस्तिष्क में अगर कोई योजना थी तो उसने वह योजना तज दी। वह निश्चय ही एक भावशून्य और अहंवादी व्यक्ति था, लेकिन विक्स्टेड उसका पहला शिकार था, एक मानव शव को खून में लिथड़ा अपने सामने पड़ा देखकर उसके हृदय में से दया

का स्रोत फूट निकला होगा और पश्चात्ताप में उसने अपना भोजन कम-से-कम कुछ समय के लिए त्याग दिया होगा।

विक्स्टेड की हत्या के बाद वह लगता है दक्षिण के मैदानों की ओर चला। कहा जाता है कि दो आदमियों ने सूर्यास्त के निकट फ़र्न बौटम खेत के करीब एक आवाज़ सुनी। वह रो रही थी, कराह रही थी, हंस रही थी और कभी-कभी चिल्ला रही थी। उसे सुनना कौतूहल की बात थी। वह तिनपतिया घास के खेत पर होती पहाड़ी की ओर चली गई और फिर नहीं सुनाई पड़ी।

इस बीच में अदृश्य पुरुष को मालूम हो गया होगा कि उसने जो भेद बताया था, केम्प ने उसका तेज़ी से प्रयोग किया है। उसने घरों को बंद पाया होगा, वह रेलवे स्टेशनों और सरायों में गया होगा और शायद उसने वह इश्तहार भी पढ़ा होगा और उसके विरुद्ध जो मुहिम चल रही थी, उसका उसे अंदाज़ हो गया होगा। और ज्यों ही शाम हुई, खेतों में तीन-तीन, चार-चार आदमियों की टोलियां दिखाई देने लगीं और शिकारी कुत्ते भौंकते सुनाई दिए। मुकाबिला पड़ने पर ये लोग कैसे एक-दूसरे की सहायता करें, इस बारे में उन्हें खास हिदायतें दी गई थीं। लेकिन वह उनसे दूर ही रहा। उसके क्रोध का हम सहज में अनुमान कर सकते हैं, क्योंकि जो जानकारी उसने जुटाई थी, वही उसके विरुद्ध बड़ी निष्ठुरता से प्रयुक्त हो रही थी। दिन भर उसकी तलाश होती रही। रात को उसने भोजन भी किया होगा और वह सोया भी होगा क्योंकि सुबह वह फिर सक्रिय, सशक्त और क्रोध में भरा दुनिया के विरुद्ध अपने अंतिम संघर्ष के लिए तैयार था।

केम्प के घर का घेरा

केम्प ने एक चिकने कागज़ पर पेंसिल से लिखा हुआ यह विचित्र पत्र पढ़ा—"तुमने आश्चर्यजनक सक्रियता और चतुरता दिखाई है, यद्यपि मैं समझ नहीं सका कि इससे तुम्हें क्या लाभ होगा। तुम मेरे विरुद्ध हो। तुम तमाम दिन मेरा पीछा करते रहे। तुमने कोशिश की कि मुझे रात को आराम नसीब न हो। लेकिन इसके बावजूद मैंने भोजन किया और रात को सोया भी। खेल तो अब शुरू हो रहा है। इसका मतलब है कि आतंक शुरू हो रहा है। यह पत्र आतंक की घोषणा है। कर्नल और पुलिस के दूसरे लोगों से कह दो कि बरडोक अब महारानी के नहीं, मेरे आतंक के अधीन है। यह एक नए युग—अदृश्य पुरुष के युग के पहले वर्ष का पहला दिन है। मैं प्रथम अदृश्य व्यक्ति हूं। शुरू-शुरू में शासन सख़्त नहीं होगा। पहले दिन उदाहरण के लिए एक व्यक्ति—केम्प नामक एक व्यक्ति की हत्या होगी। आज उसके लिए मृत्यु निश्चित है। वह जहां चाहे अपने आप को छिपा ले, पहरे बैठा ले, कोई कवच पहन ले—मृत्यु, अदृश्य मृत्यु आ रही है। वह मेरी प्रजा के लिए उदाहरण बनेगा। मृत्यु दोपहर को लेटर बाक्स से रवाना होगी, उस समय जब डाकिया घर में ख़त फेंककर लौट जाएगा। खेल शुरू होता है, मृत्यु आ रही है। मेरी प्रजाओ! उसकी सहायता मत करना, वरना तुम भी मृत्यु के चंगुल में आ जाओगे। आज केम्प को मरना है।"

केम्प ने ख़त दो बार पढ़ा। "यह कोई मज़ाक नहीं।" उसने सोचा, "यह उसी की आवाज़ है और वह ऐसा करेगा।"

उसने ख़त को पलटकर पते वाली तरफ़ हिंटनडीन की मुहर देखी और लिखा था, "दो पैसे बैरंग।"

ख़त एक बजे आया था। वह लंच बीच ही में छोड़कर धीरे से उठा और पढ़ने के कमरे में गया। उसने घंटी बजाकर नौकरानी को बुलाया और उससे कहा कि देख ले कि सब खिड़कियां भली प्रकार बंद हैं या नहीं और सारे रोशनदान आदि बंद कर दे। पढ़ने के कमरे की खिड़कियां और रोशनदान उसने स्वयं बंद किए। कमरे में एक दराज़ से उसने एक छोटा रिवाल्वर निकाला और उसे ध्यान से देखकर जैकेट की जेब

में रख लिया। उसने कई पुर्जे लिखे। एक कर्नल एडी के नाम था। उसने नौकरानी से कहा, "तुम इन्हें जल्दी से ले जाओ। तुम्हारे लिए कोई ख़तरा नहीं है।" इसके बाद वह कुछ समय तक खड़ा सोचता रहा और फिर ठंडे हो रहे भोजन के पास लौटा।

वह सोचते-सोचते खा रहा था। आख़िर उसने मेज़ पर मुक्का मारकर कहा, "हम उसे पकड़ लेंगे। मैं उसका चारा हूं। वह दही के धोखे में कपास खा रहा है।"

वह ऊपर के कमरे में गया और हर एक दरवाज़ा सावधानी से बंद करता गया। "यह एक खेल है—विचित्र खेल! लेकिन मिस्टर ग्रिफ़िन, तुम्हारी इस अदृश्यता के बावजूद पल्ला मेरा ही भारी है। और ज़रा देखो तो! ग्रिफ़िन, तुम मुझसे बदला लेना चाहते हो!"

वह खिड़की के पास खड़ा पहाड़ी पर चमक रही धूप को देख रहा था। "उसे हर रोज़ भोजन मिले, मुझे इससे कोई ईर्ष्या नहीं। क्या वह रात को वाकई सोया होगा? खुले में सो रहा होगा। दुर्घटनाओं से दूर। काश! इस गर्मी के बजाय सर्दी पड़ती और वर्षा होती।"

"वह अब मुझे देख रहा होगा।"

वह खिड़की के निकट चला गया। लकड़ी के फ्रेम के पास ईंटों पर दस्तक-सी हुई और वह चौंककर पीछे हट गया।

"मैं तो डर ही गया।" केम्प बड़बड़ाया और पांच मिनट बाद फिर खिड़की के पास चला गया। "ज़रूर कोई चिड़िया रही होगी।"

उसी समय सामने के दरवाज़े की घंटी बजी और वह दौड़कर नीचे आया। उसने ताला खोला और फिर बड़ी सतर्कता से धीरे-धीरे बाहर झांककर देखा। एडी की परिचित ध्वनि ने उसका स्वागत किया।

"तुम्हारी नौकरानी पर आक्रमण हुआ है, केम्प!" उसने बाहर से कहा।

"क्या?" केम्प स्तब्ध रह गया।

"तुम्हारा वह पुर्जा उससे छीन लिया गया है। वह यहीं कहीं है। मुझे भीतर आने दो।"

केम्प ने सांकल उतार दी और किवाड़ सिर्फ़ इतना खोला जिसमें से एडी फंसकर भीतर आया। उसने हाल में पहुंचकर सुख की सांस ली और केम्प ने दरवाज़ा बंद किया। "नौकरानी से पुरज़ा छीन लिया गया। वह बहुत सहमी हुई है और थाने में है। वह किस बारे में था।"

केम्प बड़बड़ाया, "मैं निरा मूर्ख हूं। मुझे यह पहले ही समझ लेना चाहिए था। हिंटनडीन से यहां पहुंचने से एक घंटा भी नहीं लगता। उसे तो यहां होना ही था।"

"बात क्या है?" एडी ने पूछा।

केम्प उसे अपने पढ़ने के कमरे में ले चला और उसे अदृश्य पुरुष का पत्र दिया। एडी ने उसे पढ़कर धीरे से कहा, "और तुमने क्या सोचा है?"

"मैंने एक मूर्ख की भांति उसे फंसाना चाहा। अपनी योजना लिखकर नौकरानी को दी, जो उसके हाथ जा पड़ी।"

एडी भली प्रकार केम्प की मूर्खता को समझ रहा था।

"वह भाग जाएगा।" एडी ने कहा।

"कभी नहीं।" केम्प बोला।

ऊपर शीशा टूटने की भयंकर आवाज़ सुनाई दी। एडी ने चमकता हुआ रिवाल्वर देखा जो केम्प की जेब से आधा बाहर था। "यह ऊपर खिड़की के टूटने की आवाज़ है।" केम्प ने कहा और दोनों ऊपर चले। वे अभी सीढ़ियों ही में थे कि फिर टूटने की आवाज़ आई। जब वे पढ़ने के कमरे में पहुंचे तो तीन में से दो खिड़कियां टूट चुकी थीं। आधा कमरा कांच के टुकड़ों से भरा पड़ा था और एक बड़ा-सा टुकड़ा लिखने की मेज़ पर आ गिरा था। दोनों आदमी दरवाज़े में खड़े बर्बादी के इस दृश्य को देखने लगे। केम्प फिर बड़बड़ाया और उसी समय तीसरी खिड़की टूटी और शीशे खनखनाते हुए फर्श पर आ गिरे।

"यह सब क्या है?" एडी ने कहा।

"यह सूत्रपात है।" केम्प बोला।

"ऊपर चढ़ने का तो कोई मार्ग नहीं?"

"बिल्ली के लिए भी नहीं।"

"कोई रोशनदान?"

"यहां नहीं। सारे के सारे नीचे के कमरों में हैं।... हल्ला!"

सीढ़ियों के नीचे से शीशे टूटने और तख़्तों के ज़ोर से पीटे जाने की आवाज़ आई।

"इसने तो परेशान कर डाला। यह एक सोने का कमरा है।" केम्प ने कहा, "मालूम होता है कि वह सारे घर का यही हाल करेगा। मगर वह मूर्ख है। अंदर के दरवाज़े बंद हैं। शीशे बाहर गिरेंगे और उसका अपना पैर कटेगा।"

एक और खिड़की के टूटने की आवाज़ आई। दोनों आदमी सीढ़ियों में स्तब्ध खड़े थे।

"मैं समझ गया," एडी ने कहा, "कोई लाठी आदि दो। मैं थाने जाकर शिकारी कुत्ते लाता हूं। वही उसे पकड़ेंगे।"

एक और खिड़की विनाश का ग्रास बनी।

"तुम्हारे पास रिवाल्वर तो न होगा?" एडी ने पूछा।

केम्प का हाथ जेब पर गया। तब वह हिचकिचाया, "नहीं... मेरा मतलब है, फालतू नहीं।"

"मैं इसे वापस लेता आऊंगा।" एडी ने कहा, "तुम तो यहां सुरक्षित रहोगे।"

केम्प अपने क्षणिक असत्य पर लज्जित हुआ और उसने रिवाल्वर दे दिया।

"अब दरवाज़ा खोलो।" एडी ने कहा।

जब वे हाल में खड़े हिचकिचा रहे थे, सोने के कमरे की एक और खिड़की टूटी। केम्प दरवाज़े के पास गया और उसने बहुत ही धीरे-धीरे सांकल उतारना शुरू किया। नित्य की अपेक्षा उसका चेहरा ज़्यादा पीला था।

"तुम सीधे बाहर निकलो।" केम्प ने कहा।

दूसरे ही क्षण एडी दरवाज़े की सीढ़ियों पर था और दरवाज़ा बंद हो रहा था। वह एक क्षण के लिए रुका। दरवाज़े से उसकी कमर लगी हुई थी और वह यों अपने आपको अधिक सुरक्षित महसूस कर रहा था। तब वह गर्दन ऊपर उठाकर सीढ़ियां उतर गया और लान पार करके फाटक पर पहुंचा। घास में हवा सरसराती जान पड़ी। कोई वस्तु उसके निकट से गुज़री।

"तनिक ठहरो।" एडी निष्प्राण-सा हो ठहर गया। उसका हाथ रिवाल्वर पर मज़बूत हो गया।

"अच्छा।" एडी ने कहा। उसका चेहरा सफ़ेद और कठोर पड़ गया और नसें तन गईं।

"बेहतर है कि मकान को लौट जाओ।" आवाज़ ने कहा।

"अफसोस है।" एडी ने तनिक रुंधे हुए स्वर में कहा और होठों पर जबान फेरी। आवाज़ उसकी बाईं ओर मालूम पड़ती थी। उसने गोली चलाने की सोची।

"तुम किसलिए जा रहे हो?" आवाज़ ने पूछा। दोनों इधर-उधर हिले और एडी की जेब से निकली हुई रिवाल्वर की नाली धूप में चमकी।

"तुम्हें इससे क्या मतलब? मैं कहीं भी किसी काम से जाऊं," एडी ने कहा। पर शब्द अभी उसके मुंह में थे कि एक बाजू उसकी गर्दन में पड़ गया और घुटना उसकी पीठ पर था। उसका शरीर पीछे की तरफ़ दुहरा होने लगा। सटपटाकर उसने गोली चलाई। दूसरे ही क्षण उसके मुंह पर मुक्का पड़ा और रिवाल्वर उससे छीन लिया गया। उसने उठने का प्रयत्न किया लेकिन फिर पीछे गिर पड़ा।

"धूर्त!" एडी ने कहा। आवाज़ ने कहकहा लगाया।

"अगर गोली व्यर्थ खोने का भय न होता तो मैं तुम्हें मार डालता।" आवाज़ ने कहा। एडी ने अपने छः फुट परे रिवाल्वर हवा में देखा।

"अच्छा!" एडी ने कहा।

"खड़े हो जाओ।" आवाज़ ने कहा।

एडी उठ खड़ा हुआ।

"सावधान!" आवाज़ ने आदेश किया, "कोई ऐसी-वैसी हरकत मत करना। याद रखना, मैं तुम्हारा चेहरा देख सकता हूं जबकि तुम मेरा नहीं देख सकते। तुम्हें लौटकर मकान में जाना होगा।"

"वह दरवाज़ा नहीं खोलेगा।" एडी ने कहा।

"बड़ी बुरी बात है।" अदृश्य पुरुष ने कहा, "मेरा तुमसे कोई झगड़ा नहीं है।"

एडी ने फिर होंठ तर किए। उसने रिवाल्वर की नली से परे दृष्टि डाली। दूर समुद्र दिखाई दिया जो दोपहर की धूप में बहुत नीला और स्याह जान पड़ता था। फिर फैला हुआ कस्बा और पहाड़ियां थीं। उसे जीवन सहसा मधुर जान पड़ा। उसकी आंखें फिर हवा में लटकते हुए रिवाल्वर पर आ जमीं।

"मुझे क्या करना होगा?" उसने उदासीनता से पूछा।

"मुझे क्या करना होगा?" अदृश्य पुरुष ने दोहराया।

"तुम्हें तो मदद मिल सकती है। तुम्हें मकान में वापस जाना होगा।"

"मैं कोशिश करूंगा, अगर उसने मुझे भीतर जाने दिया। तुम दरवाज़ा तो नहीं धकेलोगे?"

"मेरा तुमसे कोई झगड़ा नहीं।" आवाज़ ने कहा।

केम्प एडी को बाहर निकालकर ऊपर चला गया था। अब वह टूटे शीशों के दरम्यान बैठा बड़े ध्यान से खिड़की की दरार में से बाहर झांक रहा था। उसने एडी को अदृश्य पुरुष से बातें करते देखा। "वह गोली क्यों नहीं चलाता?" केम्प ने अपने से कहा। रिवाल्वर तनिक हिली और सूर्य की एक किरण केम्प की आंखों को चुंधियाने लगी। उसने आंखों पर हाथ की ओट की और फिर देखने लगा।

"निश्चय ही एडी ने रिवाल्वर उसे दे दिया है।" केम्प ने कहा।

"वादा करो कि दरवाज़े को धक्का नहीं दोगे," एडी कह रहा था, "जीत रहे हो तो और दबाने की कोशिश मत करो मुझे भी एक मौका दो।"

"तुम मकान में वापस जाओ। मैं तुम्हें स्पष्ट बता देना चाहता हूं कि मैं कोई वायदा नहीं करूंगा।"

एडी ने यकायक निर्णय किया। वह हाथ पीछे किए मकान की ओर चला। केम्प चकित-सा उसे देख रहा था। रिवाल्वर ओझल हो गया, फिर दृष्टि में चमका। फिर ओझल हुआ। और ध्यान से देखने पर अवगत हुआ कि एक काला-सा धब्बा एडी का पीछा कर रहा है। फिर एडी सहसा घूमा। इस काले धब्बे को पकड़ने का प्रयत्न किया, चूक गया और मुंह के बल धरती पर जा गिरा। केम्प ने रिवाल्वर चलने की आवाज़ नहीं सुनी। एडी पीड़ा से बिलबिलाया, एक बांह के सहारे शरीर को ऊपर उठाया, फिर आगे को गिर पड़ा और शांत हो गया।

केम्प कुछ देर एडी के स्थिर शरीर की ओर देखता रहा। दोपहर की गर्मी पड़ रही थी। एकदम सन्नाटा था। सारी दुनिया में कुछ भी हिलता-डुलता नज़र नहीं आता था, सिर्फ़ सामने की झाड़ियों में दो रंग-बिरंगी तितलियां एक-दूसरे का पीछा करती हुई उड़ रही थीं। पहाड़ी सड़क के नीचे जो मकान थे, उनके दरवाज़े बंद थे। सिर्फ़ एक बरामदे में एक बूढ़ा आदमी सो रहा मालूम होता था। केम्प ने चमकते हुए

पिस्तौल को देखने के लिए इधर-उधर दृष्टि डाली, पर वह लोप हो गया था। उसकी नज़रें फिर एडी पर गड़ीं। खेल की शुरुआत बढ़िया हुई थी।

हाल के दरवाज़े पर घंटी बजी और दस्तक हुई। शोर बढ़ता गया, लेकिन नौकरों ने केम्प के आदेशानुसार अपने को घर में बंद कर रखा था। शोर बंद हो गया। केम्प चुप बैठा सुनता रहा और फिर उसने तीनों खिड़कियों में से झांककर देखा। उसने चारपाई के पास पड़ा हुआ सीकचा उठाया और नीचे की खिड़कियों और दरवाज़ों को एक बार फिर देखने चला। सबकुछ ठीक था और आस-पास शांति व्याप्त थी। वह फिर ऊपर लौट आया। एडी जहां गिरा था वहीं निश्चल पड़ा था। मकानों के करीब सड़क पर नौकरानी और दो सिपाही आ रहे थे।

मौन का सन्नाटा था। तीनों प्राणी बहुत धीरे चलते जान पड़ते थे। वह सोच रहा था कि उसका शत्रु क्या कर रहा है।

वह चौंका। नीचे से आघात की आवाज़ आ रही थी। वह हिचकिचाया और फिर नीचे आया। सहसा घर भारी चोटों और लकड़ी के टूटने से गूंज उठा। उसने दरवाज़े की कुंडियां टूटते सुनीं। उसने रसोईघर का दरवाज़ा खोला और देखा कि खिड़की के किवाड़ टूट-टूटकर नीचे गिर रहे हैं। वह भौचक्का रह गया। खिड़की का चौखटा एक सलाख़ के अतिरिक्त कायम था, लेकिन उसमें शीशा बिलकुल नहीं था। अब चौखट पर कुल्हाड़े के प्रहार पड़ रहे थे और लोहे की सलाख़ें उन्हें रोक रही थीं, तब एक कुल्हाड़ा सहसा पीछे हट गया और लोप हो गया।

उसने रिवाल्वर बाहर रास्ते में पड़े देखा और तब यह नन्हा शस्त्र हवा में ऊपर उठा। केम्प पीछे हट गया। रिवाल्वर तनिक देर से चला और बंद हो रहे दरवाज़े की एक फांक उखड़कर उसके सिर पर गिरी। उसने दरवाज़ा बंद कर दिया और बाहर ग्रिफ़िन के चिल्लाने और हंसने की आवाज़ सुनाई दी। कुल्हाड़े के प्रहार फिर खिड़की पर पड़ने लगे।

केम्प गलियारे में खड़ा सोचने लगा। दो-चार क्षण में अदृश्य पुरुष रसोईघर में होगा। यह दरवाज़ा उसे रोक नहीं सकेगा। तब… तब…

दरवाज़े पर फिर घंटी बजी। वह दौड़कर हाल में गया। दरवाज़ा खोलने से पहले उसने नौकरानी से बात करके अपना इत्मीनान कर लिया। तीनों प्राणी एक साथ भीतर घुस आए और केम्प ने दरवाज़ा बंद कर लिया। "अदृश्य पुरुष के पास पिस्तौल है, जिसमें दो गोलियां बाक़ी हैं।" केम्प ने कहा, "उसने एडी को मार दिया है।"

"तुमने नहीं देखा? वह वहां लान पर पड़ा है।"

"कौन?" एक सिपाही ने पूछा।

"एडी।" केम्प ने उत्तर दिया।

"हम पीछे से घूमकर आए हैं।" नौकरानी ने कहा।

"यह क्या टूट रहा है?" यह सिपाही ने पूछा।

"वह रसोईघर में है अथवा होगा, उसे एक कुल्हाड़ा मिल गया है।"

सहसा कुल्हाड़े के प्रहार रसोईघर के दरवाज़े पर पड़ने लगे और सारा घर उसकी गूंज से भर उठा। नौकरानी ने रसोईघर की ओर आंखें तरेरकर देखा और भोजनालय में चली गई। केम्प ने टूटे-फूटे वाक्यों में सारी बात बताने का प्रयत्न किया। रसोईघर के दरवाज़े के टूटकर गिरने की आवाज़ आई।

'इधर-उधर' केम्प ने दोनों सिपाहियों को जल्दी-जल्दी भोजनालय के दरवाज़े में धकेलते हुए कहा।

"छड़।" केम्प ने कहा और एक ओर दौड़ा।

उसके हाथ में जो छड़ थी वह उसने एक सिपाही को पकड़ा दी और जो भोजनालय में थी वह दूसरे को।

वह सहसा पीछे हटा। "हो!" एक सिपाही ने कहा और कुल्हाड़े के प्रहार को अपनी छड़ पर रोका। पिस्तौल चला और एक सुंदर मर्तबान टूट गया। दूसरे सिपाही ने पिस्तौल पर छड़ मारी और उसे भिड़ के सदृश धरती पर गिरा दिया।

उन्हें यों लड़ते देखकर नौकरानी चीख़ उठी। कुछ क्षण आतिशदान के पास खड़ी चीख़ती रही और फिर शायद टूटी हुई खिड़की से भाग निकलने के ख़्याल से किवाड़ खोलने दौड़ी।

कुल्हाड़ा हवा में लहराया और धरती से दो फुट ऊपर रुक गया। वे अदृश्य पुरुष की सांस सुन सकते थे। "तुम दोनों खड़े रहो।" उसने कहा, "मुझे केम्प की ज़रूरत है।"

"और हमें तुम्हारी ज़रूरत है।" पहले सिपाही ने आगे बढ़कर छड़ से आवाज़ कर प्रहार करते हुए कहा। अदृश्य पुरुष निश्चय ही पीछे हट गया होगा। सिपाही निशाना चूक जाने से अपने ही ज़ोर में लड़खड़ाया। अदृश्य पुरुष ने उस पर कुल्हाड़े से प्रहार किया। उसकी लोहे की टोपी कागज़ के सदृश मुरमुरा गई और वह चक्कर काटता हुआ रसोईघर की सीढ़ियों पर जा गिरा।

लेकिन दूसरे सिपाही ने कुल्हाड़े को निशाना बनाकर छड़ से वार किया। वह किसी कोमल वस्तु पर लगा जो टूट गई। एक आह सुनाई दी और कुल्हाड़ा धरती पर गिर पड़ा। सिपाही ने कुल्हाड़े पर पांव रखकर हवा में वार किया जो किसी चीज़ को नहीं लगा। वह दोनों हाथों में छड़ थामे ध्यान से हिलने-डुलने की आवाज़ सुनने लगा।

उसने भोजनालय की खिड़की खुलने और भीतर तेज़-तेज़ कदमों की चाप सुनी। उसका साथी फ़र्श पर उठ बैठा। उसकी आंखों और कानों के आस-पास से खून बह रहा था। "वह कहां है?" उसने बैठे-बैठे पूछा।

"मालूम नहीं। मैंने उसके चोट लगा दी है। अगर वह तुम्हारे पास से नहीं गुज़रा तो वह कहीं हाल ही में है। डाक्टर—जनाब!"

"डॉक्टर केम्प!" सिपाही ने फिर पुकारा।

दूसरा सिपाही हिम्मत करके उठा। सहसा रसोईघर की सीढ़ियों पर नंगे पांव की चाप सुनाई दी। "वह है!" पहले सिपाही ने कहा और छड़ से वार किया, लेकिन वह दीवार से टकराया।

वह अदृश्य पुरुष का पीछा करने के विचार से सीढ़ियों की ओर लपका, लेकिन फिर कुछ सोचकर भोजनालय में लौट आया।

"डॉक्टर केम्प—" उसने कहा और रुक गया, "डॉक्टर केम्प बहादुर है।" उसके साथी ने अपने कंधों पर से झांकते हुए कहा।

भोजनालय की खिड़की खुली थी। वहां न नौकरानी थी न केम्प।

केम्प के बारे में दूसरे सिपाही की राय ठीक और स्पष्ट थी।

हत्यारे का अंत

जब केम्प के घर का घेरा शुरू हुआ, उसका निकटतम पड़ौसी हीलास अपने 'समर हाउस' में सो रहा था। हीलास उन दृढ़ व्यक्तियों में से था जिन्हें अदृश्य पुरुष के अस्तित्व पर तनिक भी विश्वास नहीं था। इसके विपरीत उसकी पत्नी उसे बार-बार याद दिलाती थी कि वह स्वयं अदृश्य पुरुष के अस्तित्व पर विश्वास करती है। वह नियमित रूप से बाग़ में टहलने गया और नियमित रूप से दोपहर के बाद सोया। यह उसका बरसों का नियम था। जब खिड़कियां टूट रही थीं, वह पड़ा सो रहा था और फिर सहसा जाग गया। उसे महसूस हुआ कि कहीं कोई गड़बड़ी ज़रूर है। उसने केम्प के घर की ओर देखा, आंखें मलीं और फिर देखा। तब वह पैर ज़मीन पर रखकर बैठ गया और सुनने लगा। सबकुछ प्रत्यक्ष होते हुए भी कुछ समझ में नहीं आ रहा था। ऐसा लगता था जैसे कोई भीषण दंगा हुआ हो और उसके बाद घर कई सप्ताह तक सूना पड़ा हो। हर एक खिड़की टूटी पड़ी थी, ऊपर की बैठक को छोड़कर हर एक खिड़की के किवाड़ बंद थे।

"मैं कसम खाकर कह सकता हूं कि बीस मिनट पहले सब ठीक-ठाक था।" उसने घड़ी देखते हुए कहा।

जब वह मुंह बाये बैठा देख रहा था, एक और विचित्र बात हुई। भोजनालय की खिड़की के किवाड़ धम से खुले और नौकरानी चौखट को हटाने का प्रयत्न करने लगी। केम्प ने इसे हटाने में उसकी सहायता की। एक क्षण में खिड़की खुल गई। नौकरानी उसके द्वारा नीचे उतरी और झाड़ियों में जाकर छिप गई। इसके बाद डॉक्टर केम्प खुद अस्पष्ट चिल्लाता हुआ खिड़की से उतरा और झाड़ियों में एक पगडंडी पर भागने लगा। वह बार-बार पलटकर यों देख रहा था जो किसी की आंख से बचने का प्रयत्न कर रहा हो। वह पेड़ के पीछे ओझल हो गया और फिर जंगला फांदता हुआ दिखाई दिया, जो खुले मैदान को घेरकर बना हुआ था। दूसरे ही सेकेंड वह नीचे कूदा और द्रुत गति से हीलास की ओर दौड़ने लगा।

"हे भगवान्!" हीलास चिल्लाया, "यह तो वाक़ई बर्बर अदृश्य पुरुष है। आख़िरकार बात सच ही निकली।"

मन में विचार आते ही मिस्टर हीलास कार्यरत हो जाते थे। और ऊपर की खिड़की पर खड़ी हुई महाराजिन उन्हें घर की ओर नौ मील प्रति घंटे की रफ़्तार से दौड़ते हुए आते देखकर दंग रह गई। दरवाज़े बंद होने लगे। घंटियां बजने लगीं और मिस्टर हीलास सांड की तरह डकराए, "दरवाज़े बंद करो, खिड़कियां बंद करो, सबकुछ बंद करो। अदृश्य पुरुष आ रहा है।" तुरंत सारा घर चीख़ों से भर गया, आदेश दिए जाने लगे और लोग इधर-उधर दौड़ने लगे। वह खुद बरामदे की चौड़ी खिड़कियों को बंद करने दौड़ा। उसी समय केम्प बाग़ के जंगले की नुक्कड़ पर दिखाई दिया। दूसरे ही क्षण केम्प घास को पार करके टेनिस-लान पर दौड़ता हुआ घर की ओर आने लगा।

"तुम भीतर नहीं आ सकते।" हीलास ने खिड़की बंद करते हुए कहा, "मुझे अफ़सोस है कि वह तुम्हारे पीछे पड़ा है, लेकिन तुम भीतर नहीं जा सकते।"

केम्प डरा, सहमा और हांफता हुआ आया और खिड़की थपथपाने और झकझोरने लगा। जब देखा कि बात नहीं बनेगी तो वह बरामदे में से गुज़रकर बगल के दरवाज़े की ओर बढ़ा। लेकिन जब देखा कि यह दरवाज़ा भी बंद है तो वह घर से निकलकर सड़क पर दौड़ने लगा। हीलास ने खिड़की में से केम्प का पीला भयभीत चेहरा देखा और वह अभी नज़र से ओझल हुआ था कि घास अदृश्य पैरों के नीचे इधर-उधर दबती दिखाई दी। अब हीलास को पसीना छूटने लगा, वह हांफता हुआ ऊपर चढ़ा। और इसके बाद क्या हुआ, यह उसे कुछ मालूम नहीं। लेकिन सीढ़ियों की खिड़की के पास से गुज़रते समय उसने बगल वाले फाटक को बंद होते सुना।

केम्प स्वभावतः कस्बे की ओर दौड़ रहा था। सिर्फ़ चार दिन पहले अपने ऊपर के कमरे से जिस दौड़ को होते उसने देखा था, वह अब स्वयं उसी तरह की दौड़ में फंस गया था। अभ्यास न होते हुए भी वह काफ़ी तेज़ दौड़ रहा था। उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया था और पसीने से तर था, पर उसके होश ठिकाने थे। और इसीलिए वह गड्ढों, रोड़ों और कांच के टुकड़ों को पार करता था और पीछा करने वाले अदृश्य नंगे पांवों को परेशानी में डालता जाता था कि जैसे चाहे उसका पीछा करे।

केम्प को जीवन में पहली बार महसूस हुआ कि पहाड़ी की सड़क बहुत लंबी और सूनी है और पहाड़ी की घाटी पर बसा कस्बा काफ़ी फासले पर है। आगे बढ़ने के सभी उपायों में दौड़ना अत्यंत कष्टकर और धीमा उपाय था। यह उसे इससे पहले कभी नहीं महसूस हुआ था। रास्ते के सभी मकानों में खामोशी थी और दरवाज़े बंद थे। इसमें संदेह नहीं कि वे उसी की घोषणा से बंद हुए थे। लेकिन उन्हें ऐसी ही किसी घटना के लिए बाहर तो देखते रहना चाहिए था। कस्बा अब दिखाई देने लगा था और समुद्र उसकी ओट में ओझल हो गया था और नीचे आदमी चल-फिर रहे थे। एक ट्राम पहाड़ी के नीचे पहुंच रही थी। उसके परे थाना था। क्या वह अपने पीछे पांव की चाप सुन रहा था?

केम्प की सांस उसके ग़ले को चीर रही थी और लोग उसे आंखें तरेरकर देख रहे थे। ट्राम अब बिलकुल नज़दीक थी और 'जॉली क्रिकेटर्स' सराय के दरवाज़े धड़ाम-धड़ाम बंद हो रहे थे। ट्राम से परे कूड़े के ढेर थे। ट्राम का ड्राइवर और उसका सहायक विस्मय से उसे देखने लगे। परे कूड़े के ढेर पर खड़े मज़दूर भी उसे इसी विस्मय से देख रहे थे।

उसकी रफ़्तार ज़रा कम हुई तो उसने अपने पीछे नंगे पैरों की चाप सुनी और वह दौड़ने लगा। "अदृश्य पुरुष!' उसने चिल्लाकर मज़दूरों से कहा। अंतः प्रेरणा से ही वह खुदी हुई खाई के पार कूद गया और यों उसके और अदृश्य पुरुष के बीच हट्टे-कट्टे मज़दूरों का झुंड आ गया। वह थाने का विचार छोड़ एक छोटी-सी ग़ली में घूम गया और एक सब्ज़ी वाले ठेले की बगल से गुज़रा। एक सेकेंड के दसवें भाग के लिए वह एक मिठाई वाले की दुकान के सामने रुका, फिर एक ग़ली की ओर भागा जो फिर हिल स्ट्रीट में खुलती थी। यहां दो या तीन बच्चे खेल रहे थे। उसे देखते ही वे चीख़ मारकर इधर-उधर भागने लगे और झटपट दरवाज़े बंद कर लिए। भयभीत माताओं ने अपने-अपने बच्चों को गोद में छिपा लिया। फिर वह दोबारा हिल स्ट्रीट में घूम गया, जो ट्राम लाइन से तीन सौ गज़ दूर थी और उसे मालूम हुआ कि उसके अलावा कुछ और लोग भी दौड़ रहे हैं।

उसने पहाड़ी की ओर देखा। उससे दस-बारह गज़ के फ़ासले पर एक मज़दूर कुदाल उठाए भाग रहा था। उसके पीछे ट्राम कंडक्टर मुट्ठियां भीचे आ रहा था। उनके पीछे और लोग थे। केम्प ने एक आदमी को लाठी हाथ में लिए दुकान से निकलते देखा। "घेर लो! घेर लो!" कोई चिल्लाया। केम्प समझ गया कि अब मेरी बजाय अदृश्य पुरुष का पीछा हो रहा है। वह ठहर गया और लंबी-लंबी सांस भरते हुए इधर-उधर देखा। "वह यहीं है। एक पंक्ति बना लो।" उसने कहा।

उसकी कनपटी पर मुक्का लगा और वह चकरा गया। वह किसी तरह संभल गया और उसने भी हवा में वार किया। इस बार उसके जबड़े पर मुक्का लगा और वह सिर के बल धरती पर जा गिरा। फिर उसने छाती पर घुटना महसूस किया और अदृश्य हाथों ने उसका गला दबाया, लेकिन एक हाथ का दबाव दूसरे से कम था। उसने कलाई पकड़ ली और प्रतिद्वंद्वी की दर्दभरी चीख़ सुनी। फिर मज़दूर की कुदाल लहराती हुई आई और उसके ऊपर किसी चीज़ पर खट से लगी। उसके चेहरे पर पसीना आ गया। उसके गले की गिरफ्त ढीली पड़ गई। केम्प ने ज़ोर लगाकर करवट बदला और एक कंधा पकड़कर अपने ऊपर के बोझ को ढकेल दिया। उसने धरती के निकट अदृश्य कोहनियां पकड़ लीं। "मैंने उसे पकड़ लिया है।" केम्प चिल्लाया। "मदद! मदद! वह नीचे है। उसके पांव पकड़ो।"

लोग चारों तरफ़ से लपके और उस पर घूंसों और लातों की बेतहाशा चोटें

पड़ने लगीं। अब वहां कोई चीख़-चिल्लाहट नहीं थी। मुक्के और ठोकरें पड़ रही थीं और तेज़-तेज़ सांस की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

तब भागीरथ प्रयत्न करके अदृश्य पुरुष उठा। केम्प उसके गले से यों चिमटा रहा जैसे शिकारी कुत्ता हिरन से चिपट जाता है और एक दर्जन हाथ अदृश्य पुरुष को पकड़ और नोंच रहे थे। ट्राम कंडक्टर ने उसे गर्दन पकड़कर नीचे गिरा दिया। फिर ठोकरें और मुक्के पड़ने लगे। सहसा "दया! दया!" की आवाज़ आई जो फिर एकदम मद्धिम पड़ गई जैसे दम घुट रहा हो।

"पीछे हट जाओ," केम्प ने कहा और लोगों ने परे हटकर एक दायरा-सा बना लिया। उन्होंने देखा कि डॉक्टर झुककर अदृश्य बाहें पकड़े हुए है। उसके पीछे एक सिपाही अदृश्य टखने पकड़े हुए है।

"छोड़ना मत! वह उठने की कोशिश करेगा।" हृष्ट-पुष्ट मज़दूर ने खून में लिथड़ी हुई कुदाल उठाए हुए कहा।

"वह उठने की कोशिश नहीं कर रहा। मैं उसे पकड़े रहूंगा।" डॉक्टर ने कहा। चेहरे पर भारी चोट लगी थी और उसके होंठ से खून बह रहा था। उसने एक बांह छोड़ दी और अदृश्य चेहरे पर हाथ फेरा, "उसका तमाम चेहरा गीला है," उसने कहा। और फिर आह भरी, "हे भगवान्!"

डॉक्टर एकदम उठ खड़ा हुआ और फिर अदृश्य पुरुष के पहलू में घुटनों के बल धरती पर बैठ गया। खूब धक्कम-पेल थी, कदमों का शोर था। भीड़ बढ़ रही थी। लोग घरों से निकल-निकलकर आ रहे थे। सराय के दरवाज़े खुले पड़े थे। केम्प ने हवा में कुछ टटोला और कहा, "उसकी सांस नहीं चल रही। मुझे हृदय गति भी बंद हो गई जान पड़ती है।"

"वह देखो!" एक बुढ़िया ने मज़दूर के बाजू तले से झांकते हुए कहा। और जहां वह अंगुली से संकेत कर रही थी, वहां हर एक ने देखा कि एक मद्धिम पारदर्शक जैसे शीशे की बनी हुई हाथ की नसें और नाड़ियां दिखाई दीं। और देखते ही देखते वह ठोस और अपारदर्शक हो गया।

"हैलो!" सिपाही चिल्लाया, "उसके पांव भी दिखाई देने लगे हैं।"

यों हाथों और पैरों से शुरू होकर धीरे-धीरे उसका सारा शरीर दिखाई देने लगा। पहले हड्डियों और नसों का अस्पष्ट और मद्धिम ढांचा-सा दिखाई दिया, जो ठोस और अपारदर्शक होता चला गया। लोगों ने जल्द ही उसकी कुचली हुई छाती और कंधे देखे फिर दूसरे अंग।

आख़िर जब भीड़ ने केम्प के सीधा होने के लिए स्थान बनाया तो उसके सामने तीस वर्ष के एक नौजवान का घायल और कुचला हुआ शरीर धरती पर नंगा पड़ा था। उसके बाल और भौहें सफ़ेद थीं जो उम्र से नहीं रासायनिक प्रक्रिया से

सफ़ेद हुई थीं। उसकी मुट्ठियां भिची हुई थीं, आंखें खुली थीं और उसके चेहरे पर क्रोध और पीड़ा अंकित थी।

"उसका चेहरा ढांप दो।" एक आदमी ने कहा, "भगवान् के लिए उसका चेहरा ढांप दो।"

कोई दौड़कर सराय से एक चादर ले आया, जिससे उसके शरीर को ढांप दिया गया। वे उसे उठाकर एक कमरे में ले गए। वहां उसे भद्दी-सी चारपाई पर लिटा दिया। उसके गिर्द अपढ़ और उत्तेजित लोगों की भीड़ जमा थी। ग्रिफ़िन का शरीर घायल और विकृत पड़ा था। और कोई उस पर दया करने वाला नहीं था। ग्रिफ़िन संसार का पहला मनुष्य था जिसने अपने आपको अदृश्य बनाया था। पदार्थ विज्ञान की वह एक असाधारण प्रतिभा था। और इस तरह उसके आश्चर्यजनक और भयानक जीवन का दुखद अंत हुआ।

उपसंहार

अदृश्य पुरुष के विचित्र और बुरे अनुभव की कहानी का यों अंत होता है। और अगर आप उसके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं तो पोर्ट स्टो के निकट छोटी सराय में जाएं और उसके मालिक से बातें करें। सराय के बाहर जो बोर्ड लटक रहा है, उस पर सिर्फ़ हैट और बूटों के चिह्न बने हुए हैं और उसका नाम 'अदृश्य मनुष्य'। मालिक ठिगने क़द का आदमी है और उसकी नाक लंबी और गोल है। दिल खोलकर मिलें और वह आपको दिल खोलकर बताएगा कि इसके बाद उसके साथ क्या बीती और वकीलों ने उसका रुपया हथियाने के क्या-क्या प्रयत्न किए।

और अगर आप उसकी कहानी को बीच में तोड़ना चाहते हैं तो किसी भी समय यह सवाल पूछकर तोड़ सकते हैं कि इस कहानी में तीन पांडुलिपियां भी थीं। वह स्वीकार करेगा कि पांडुलिपियां थीं और हरएक सोचता है कि वे मेरे पास हैं लेकिन वे मेरे पास नहीं हैं। "जब मैं पोर्ट स्टो की ओर भाग आया तो अदृश्य पुरुष ने मुझसे लेकर उन्हें कहीं छिपा दिया। केम्प ही लोगों को यह बताता है कि वे मेरे पास हैं।"

वह चिंताग्रस्त-सा हो जाता है, आपको कनखियों से देखता है, ऐनक साफ़ करने लगता है और उठकर मदिरा कक्ष से चला जाता है।

वह अविवाहित है, उसकी आदतें अविवाहितों जैसी हमेशा से हैं और घर में कोई स्त्री नहीं है। वह अपना घर एक ही ढर्रे पर चला रहा है, लेकिन बड़े ढंग से चला रहा है। उसकी गतिविधि मंद होती है और एक महान् विचारक है। हर गांव में अपनी बुद्धिमता और उच्चारण के लिए प्रसिद्ध है और दक्षिणी इंगलैंड की सड़कों की उसकी जानकारी तो अद्वितीय है।

इतवार की सुबह के, तमाम साल के हर इतवार की सुबह को, और हर रोज़ रात के दस बजे के बाद वह अपनी बैठक में जाता है। उसके पास थोड़ा-सा पानी मिला हुआ शराब का एक गिलास होता है, जिसे वह नीचे रखकर दरवाज़ा बंद करता है, पर्दों की जांच करता है और मेज़ के नीचे झांककर देखता है। अपना हर तरह

इत्मीनान करके वह एक अलमारी खोलता है, उसमें से एक संदूक निकालकर खोलता है, संदूक में एक दराज़ खोलता है और फिर उसमें से बंधी जिल्द वाली तीन किताबें निकालकर बड़ी श्रद्धा और भक्ति से मेज़ के बीच में रखता है। उनके आवरण मैले हैं और उन पर काई सी जम गई है क्योंकि एक बार उन्हें खंदक में रहना पड़ा था। और उनके कुछ पृष्ठ भी गंदे पानी से साफ़ धुल गए हैं। यह ठिगना मालिक एक बाजुओं वाली कुर्सी पर बैठ जाता है और इन पुस्तकों की ओर देखते हुए पाइप में तंबाकू भरता है। तब वह एक को अपनी ओर खींचता है और पन्नों को आगे-पीछे पलटकर पढ़ना शुरू करता है।

उसकी भवें सिकुड़ती हैं और वह दुख भरे स्वर में कहता है, "हे भगवान्! वह कितनी बड़ी प्रतिमा थी।"

वह शरीर ढीला छोड़कर सिर कुर्सी की पुश्त पर टेक देता है और पाइप से धुएं में से कमरे की उन चीज़ों पर दृष्टि डालता है जो दूसरे लोगों से अदृश्य रहती हैं। "इनमें रहस्य भरे हैं, विचित्र रहस्य!" वह बड़बड़ाता है।

"भगवान्, एक बार मुझे मालूम हो जाए!"

"मैं वह नहीं करूंगा जो उसने किया। मैं अच्छी बातें करूंगा।" वह पाइप का कश निकालता है।

और वह स्वप्न देखने लगता है—अपने जीवन का अमिट और विचित्र स्वप्न। केम्प ने बहुत कोशिश की, लेकिन इस ठिगने व्यक्ति के अतिरिक्त कोई नहीं जानता कि वे पुस्तकें यहां हैं, जिनमें अदृश्यता के रहस्य के अतिरिक्त एक दर्जन के लगभग दूसरे विचित्र रहस्य हैं। और जब तक वह जीवित है किसी को यह बात मालूम न होगी।

•••

विश्व कथा साहित्य	विश्व चर्चित कृतियों की महत्त्वपूर्ण शृंखला

विश्व के अमर कथा-साहित्य का प्रकाशन इस संस्थान की एक महती योजना है। इस शृंखला में महान् कथा-शिल्पियों की कृतियों को हिन्दी पाठकों के लिए निरंतर उपलब्ध कराया जाता रहेगा। प्रत्येक सुरुचि सम्पन्न पाठक को इन कृतियों से अपना संग्रह समृद्ध करना चाहिए।

तुर्गनेव

मेरा पहला प्यार

तुर्गनेव की रचनाओं में रूस का ज़ार इतना अधिक प्रभावित हो गया था कि उसने अपने यहां से दास-प्रथा ही हटा दी थी। मानवीय करुणा के इस महान् चितेरे ने ग़रीबों और बेसहारा लोगों की ऐसी तस्वीरें खींची कि ज़ारशाही थर्रा उठी। उनकी कृतियों पर प्रतिबंध लगे और उन्हें देश-निकाला भी दिया गया।

'मेरा पहला प्यार' प्रेम विषय पर तुर्गनेव की अमर कृति है। इसमें किशोर उम्र का नायक है और है इक्कीस साल की ज़िनेदा। वह किशोर उसे अटूट प्रेम करने लगता है। यहां तक कि उसके ख़ातिर ऊंची दीवार से कूद पड़ता है, लेकिन एक दिन वही ज़िनेदा उसके पिता की बन जाती है। उसकी आत्मा कलप उठती है और वह अपने से ही प्रश्न करता है—'आख़िर उसने मेरे पिता को ही क्यों चुना ?' ...इसी में एक और छोटा-सा उपन्यास है 'आस्या'। इसकी कहानी भी प्रेम की शिद्दत को उभारती है।

स्टीफ़ेन ज़्विग

एक अनजान औरत का ख़त

एक अनजान औरत का खत जर्मन के महान् उपन्यासकार-कहानीकार स्टीफ़ेन ज़्विग का यह विश्व प्रसिद्ध उपन्यास बेहद मार्मिक और उद्वेलित कर देने वाला है।

सचमुच एक अद्‌भुत अनजान औरत थी, जो तेरह वर्ष की आयु में ही प्रेम के चरम पर पहुँच गई। अलौकिक जैसा था उसका प्रेम। कितने ही वर्ष प्रेम में पगलाई रही। कुछ बार अपने प्रेमी से मिली, परन्तु उसे कभी नहीं बताया कि वह कौन है ! उसने अँतिम समय में बहुत लम्बा पत्र लिखा। अथाह दर्द में डूबा। वही उसके बच्चे की माँ थी और बच्चा मर चुका था।

एक अन्य अमर रचना है 'शतरंज' और तीसरी बीते दिन में भी अद्‌भुत मार्मिक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है।

रियूनोसुके अकूतागावा

राशोमोन

'राशोमोन' विश्व कथा-साहित्य में अपना अन्यतम स्थान रखती है। जापानी के महान् हस्ताक्षर रियूनोसुके अकूतागावा की यह कहानी सर्वश्रेष्ठ रचना के रूप में सम्मानित है।

'राशोमोन' और 'कुंज के भीतर' कहानियों को संयुक्त करके 'राशोमोन' नाम से फ़िल्म बनाई गई, जिसे वेनिस के 12वें अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में उत्कृष्ट कथा-चित्र का पुरस्कार मिला।

इस संकलन में इन दोनों कहानियों के अतिरिक्त 4 अन्य प्रसिद्ध कहानियां और एक विशिष्ट लघु उपन्यास काप्पा भी प्रस्तुत है।

इन कथा-कृतियों में अकूतागावा ने जीवन को नजदीक से ही नहीं, बल्कि मनुष्य के मनोजगत के भीतर उतर कर देखा है।

गोर्की
छलना

विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यास 'मां' के लेखक गोर्की की क़लम से एक अद्भुत रचना है—'छलना' (मालवा)। वास्तव में यह स्त्री-पुरुष सम्बन्धों, प्रेम, ईर्ष्या और नारी के पीछे अंध-दौड़ को मनोवैज्ञानिक ढंग से उकेरने वाला उपन्यास है।

एक सुंदर युवती मालवा। उसे अपने पास रख छोड़ा है वास्सीली ने, जो अधेड़ उम्र से आगे बढ़ रहा है, जिसका एक बेटा है गबरू जवान याकोव। एक दिन मालवा याकोव को उसके बाप के पास ले आती है, तो वह चौंकता है। ये दोनों परस्पर आकर्षित भी होते हैं, यहां तक कि स्पर्शों तक पहुंच जाते हैं। वास्सीली बर्दाश्त नहीं कर पाता। उनमें झगड़ा होता है। एक है सेर्योझका, जो मालवा से शादी करना चाहता है, पर वह किसकी है ! क्या मालवा का प्रेम 'छलना' था ?

गई द मोपासां
हीरे का हार

फ्रांस के महान् कथाकार मोपासां की विश्व प्रसिद्ध कहानी है 'हीरे का हार' जिसमें नायिका ने सिर्फ़ एक हार की ख़ातिर अपनी सारी ज़िंदगी ही बर्बाद कर डाली।

इसमें मोपासां की एक कालजयी औपन्यासिक कृति एक औरत की ज़िंदगी भी दी गई है। इसमें 'जीन' व्यक्ति और चीज़ों के प्रति मोहग्रस्त है। आत्मा की गहराइयों से उठता है मोह, पर जिसने उसे केवल यातनाएं ही दी हैं।

'जूलियन' ने पत्नी 'जीन' के साथ दग़ा किया। नौकरानी रोज़ाली को अपने बेटे की मां बनने पर मजबूर कर दिया। कौंतिस गिलबर्त के साथ भी ऐसे ही संबंध। अपनी ही नीच प्रवृत्तियों ने एक दिन उसे भयावह मौत दी। 'जीन' को छोड़ गया 'पॉल' उसका बेटा। वह निरंतर अकेली होती तड़पती रही, पर कभी मोह नहीं छूटा।

लाओ श

रिक्शावाला

चीन के महान् उपन्यासकार लाओ श का सर्वाधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय उपन्यास है 'रिक्शावाला'।

इसमें 'रिक्शावाला' छोटी आयु में ही हाथ रिक्शा खींचने और सवारियों को ढोने पर विवश है। वह चाहता भी है कि पैसे एकत्र करे और खुद अपना एक रिक्शा ख़रीद ले; पर बार-बार उस पर विपत्तियां आती हैं और वह अपने रिक्शे से वंचित रह जाता है। एक बार रिक्शा पा भी लेता है; पर फ़ौजी पलटन की तानाशाही के कारण सब कुछ छिन जाता है, फिर भी न वह हारता है, न निराश होता है।

ऑस्कर वाइल्ड

अपनी छाया

पवित्र सौन्दर्य का अनोखा प्रतीक था डोरियन ग्रे। ऐसी दिव्य सुन्दरता, जिसकी व्याख्या भी संभव नहीं। उसके रूप-लावण्य से प्रभावित चित्रकार बासिल उसका एक चित्र बनाता है और शुरू होता है डोरियन ग्रे का द्वन्द्व, जो मनुष्य के अन्दर-बाहर के संबंधों को उजागर करता है।

अंग्रेज़ी साहित्य में शेक्सपियर के बाद सबसे बड़े रचनाकार के उपन्यास 'अपनी छाया' में बहुत रोचक और मार्मिक ढंग से बताया गया है कि मनुष्य अपने स्वार्थों के कारण यह नहीं देख पाता कि वह कहां ग़लत है।

एडगर एलन पो

कूप और काल

'कूप और काल' में अमेरिका के महान् कहानीकार एडगर एलन पो की श्रेष्ठ कहानियां संकलित की गई हैं।

एडगर एलन पो अपनी कहानियों में रहस्य का अद्‌भुत ताना-बाना बुनते हैं। कल्पना के तो वह ऐसे कुशल चितेरे हैं कि उनकी तुलना किसी दूसरे से की ही नहीं जा सकती। लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व लिखी गई उनकी कहानियां आज भी वैसी ही ताज़ादम हैं।

पियरे लुई

यौवन की आँधी

फ्रांस के विश्व प्रसिद्ध रसवादी लेखक पियरे लुई का तमाम साहित्य जगत में हलचल मचा देने वाला उपन्यास है 'अफ्रोदिते' इसकी लेखन शैली अपने आप में गाथा की तरह है, जो इसके रंग को और गहरा तथा भव्य कर देती है।

वास्तव में यह ऐलेक्ज़ेंड्रिया की एक बेहद हसीन वेश्या क्राइसिस के जीवन की मोहक कहानी है। यह वेश्या बड़े ठाठ-बाट और तामझाम से रहती है। उसमें अहंकार की भावना भी बहुत है। एक मूर्तिकार है डिमिट्रियोस। वह साम्राज्ञी को 'मॉडल' बनाकर रूप और प्रेम की देवी 'अफ्रोदिते' की प्रतिमा बनाता है। साम्राज्ञी उसे अथाह प्रेम करती है, पर वह क्राइसिस को टूट कर चाहने लगता है। बस, यहीं मग़रूर क्राइसिस उसकी कमज़ोरी का नाजायज़ फ़ायदा उठाकर उससे चोरी और हत्या का अपराध कराती है, लेकिन अंत में वह स्वयं मृत्यु दण्ड की भागीदार बन जाती है।

दॉस्तोएवस्की

वासना

क्रान्ति से पहले रूस में निरंकुश ज़ारों का राज हुआ करता था। उस ज़माने के कुलीन घरानों के लोग अपने ओछे स्वार्थों और वासनाओं में डूबे रहते थे। उन्हीं में था एक बूढ़ा काउंट। चढ़ती उम्र में भी उसकी सुंदर लड़कियों पर नज़र रहती थी।

एक थी लालसाओं की मारी औरत मारया, जिसके लिए काउंट ऐसा मोहरा था कि उसे इस्तेमाल करके अपनी बेटी ज़ेना को भी ऊंचे ठाठ-बाट वाले सामंती वातावरण की स्वप्न-सुंदरी बना दे। उसने नहीं सोचा कि बूढ़ा काउंट मर गया तो क्या होगा ?...उसने यह भी नहीं सोचा कि उसकी नेकचलन बेटी, जो एक युवक से असीम प्यार करती है, उसका क्या होगा ?